हिन्दी मासिक
एक प्रति मूल्य १८/-

जनज्ञान

ओ३म्

अप्रैल २०१५ वर्ष:५० अंक:१२ चैत्र-बैसाख २०७१-७२

आग्नेय जीवनव्रतीः क्रान्तिकारी पं. गया प्रसाद शुक्ल
(जिनकी पुण्यतिथि है 19 अप्रैल 1932)

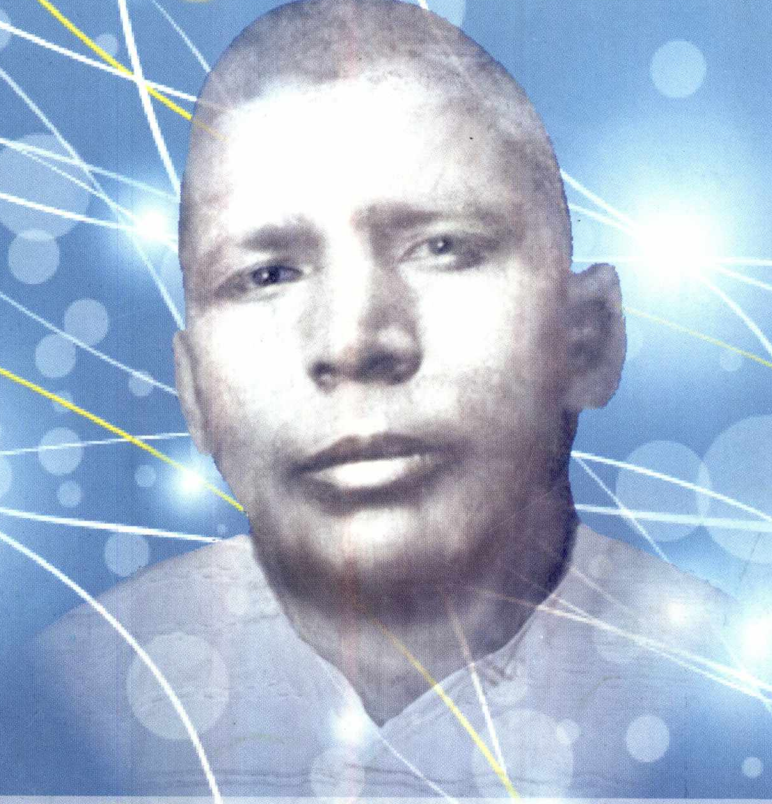

थर्र-थर्र कांपती थी अंग्रेजी हुकूमत, जिनकी मृतक देह से भी हो भयभीत,
सहे-झेले निर्मम प्रहार तन पर जिन्होंने, हरने हेतु अपनी मातृभूमि की पीर,
मात्र बत्तीस वर्ष की आयु में ली चिरविदाई, वार कर अपना तन-मन और धन,
हे क्रान्ति के अग्निदूत! दादा जी-''पं. गया प्रसाद शुक्ल''! आपको असंख्य वंदन

-दिव्या आर्य

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसम्वत्सर २०७२ की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ||

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST

hCCt

god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)

D-94, Saket, New Delhi-110017
Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

درد دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لئے کچھ کم نہ تھے کروبیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करुँ बयां

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری — زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے — ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
زندگی ہو مری پروانے کی صورت یا رب — علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یا رب
ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا — درد مندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
مرے اللہ برائی سے بچانا مجھ کو — نیک جو راہ ہو اس رہ پہ چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईफों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

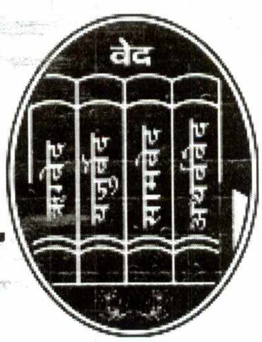

कृण्वन्तो
विश्वमार्यम्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली

हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य
मोबाइल : 8459349349, 9810257254
Email : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर)
पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036

एक प्रति-18 रु०, वार्षिक शुल्क-200 रु०,
तीन वर्ष-550 रु०, पांच वर्ष-900 रु०
और आजीवन-3100
विदेश में वार्षिक शुल्क-2100 रु.
(हवाई जहाज से) वार्षिक शुल्क-3100 रु.

अप्रैल 2015 वर्ष 50 अंक 12

आवरण पृष्ठ : अरविन्द मोहन मित्तल

सम्पादकीय

यह अप्रैल मास : समेटे अपने में प्रेरक इतिहास

आंग्ल दिनदर्शिका के अनुसार यह अगस्त मास-अपने आंचल में सहेजे है **प्रेरक इतिहास।** इस मास के साथ अनेक प्रेरणा पुरुषों की प्रेरक स्मृतियां सम्बद्ध हैं। **इस मास का प्रारम्भ मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के उन महाबली दूत का स्मरण कराता है, जिनका श्रद्धालु जन अतुलित बलधामा के रूप में स्तवन करते हैं।**

माह अप्रैल उस पुण्यात्मा की याद दिलाता है, जिसे **ब्रिटिश राज्य सत्ता के विरुद्ध 1857 के स्वातन्त्र्य समर का अग्रदूत** कहा जा सकता है। जिसने उस स्वातन्त्र्य समर में विदेशी राज्य सत्ता को चुनौती देते हुए उसकी सैनिक छावनी में ही रक्त का फाग खेलकर अपना जीवन प्रसून स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के द्वार पर वार दिया था। **वह पुण्यात्मा था मंगल पाण्डे!...**

13 अप्रैल वैशाखी के पुण्य पर्व का परिपालन कोटि-कोटि वैदिक संस्कृति अनुगामी श्रद्धा सहित करते हैं। हिन्दू राष्ट्र के इतिहास की एक अन्य प्रेरक गाथा भी इस पर्व से सम्बन्धित है। **इसी दिन गुरु गोविन्दसिंह ने खालसापंथ का सृजन कर तिमिराच्छन्न वायुमंडल में अधर्मी अन्यायी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की यज्ञाग्नि प्रज्वलित की थी**-जिसने समाज के समक्ष मंडरा रहे अन्धकार को क्षार-क्षार कर प्रकाश किरण विस्फारित की थी।

सन् 1819 की 13 अप्रैल तो भारत के इतिहास की एक अविस्मरणीय तारीख बन गयी है। उस दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के सहस्त्रों निहत्थे साधकों के जनसमूह पर बिना पूर्व चेतावनी दिए ही जनरल डायर ने गोलियां चलवा कर नृशंस नरमेध किया था। **कैसा रहा होगा वह दर्दनाक मंजर का दृश्य!!!...** जिसे

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

नितान्त संयत शब्दों का प्रयोग करने के आग्रही गांधी जी तक ने आधुनिक युग में मनमानी क्रूरता और अमानुषिकता का अद्वितीय उदाहरण, की संज्ञा दी थी।

महाकवि कालिदास का कथन था कि भगवत इच्छा से कभी विष भी अमृत हो जाता है। उनका यह कथन जनरल डायर द्वारा कराए गए अमानुषिक गोलीकाण्ड और फौजी शासन के तहत पंचनद की धरती अर्थात् पंजाब में यह अत्याचार भारत के लिए अन्ततः वरदान सिद्ध हुए। उनसे, भारतीय जनगण के मन में स्वतन्त्रता प्राप्ति की आकांक्षा तो बलवती हुई ही साथ ही उसकी प्राप्ति हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करने की ललक भी युवाजन में उत्कट हो गई।

23 अप्रैल हिन्दू पद पादशाही के संस्थापक शिवाजी की जयन्ती है। जिन्होंने प्रबल शौर्य तथा संगठन कौशल से औरंगजेब की नौरंग हुकूमत के विरुद्ध सौरंग को सिद्ध कर **आर्य नहीं बनाता गुलाम है**, के वाक्य को सार्थक सिद्ध किया था। मुगल सत्ता को अपने प्रबल घनाघात से खण्ड खंडित कर भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अध्याय जोड़कर महिमा मंडित किया था। **शिवाजी का समग्रजीवन वृत्त जन-जन के मन में गायत्री, गीता और गंगा की रक्षार्थ, सतत सजगता और प्रतिबद्धता के भाव का जागरण और स्फुरण करता है।**

विदेशी आक्रान्ताओं के मर्मान्तक प्रहारों को झेलने ठेलने का साहस दर्शाने वाले राष्ट्र भक्तों के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तो प्रेरक रहे ही हैं, उनके दूत के रूप में विख्यात हनुमान का पावन जीवन वृत्त भी पथ प्रदर्शक रहा है। वैशाखी के पावन पर्व पर खालसापंथ का सृजन करने वाले दशमेश पिता के रूप में विख्यात गुरु गोविन्दसिंह ने जातीय जीवन में शुद्धता और शौर्य का संचरण करने का अभियान प्रारम्भ किया था। आर्य का अर्थ शुद्ध भी है तो खालसा शब्द खालसा या शुद्ध का ही पर्याय कहा जा सकता है।

सहस्त्रों वर्षो की पराधीनता के वशीभूत नैराश्य भाव से ग्रस्त हुई हिन्दू जाति के मन में आशा का स्फुरण और विश्वास का जागरण करने वाले महापुरुषों की स्मृतियों से मंडित आंग्ल दिनदर्शिका (अंग्रेजी कलेण्डर) का यह **अप्रैल माह आर्य जगत के महान मनीषी पंडित गुरुदत्त का भी स्मरण दिलाता है। 26 अप्रैल पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की जयन्ती है।**

अप्रैल माह जिन महापुरुषों की स्मृति दिलाता है **उनमें एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी पं. गयाप्रसाद शुक्ल (महात्मा वेदभिक्षुः जी के पिता), जिनकी 19 अप्रैल पुण्यतिथि है। लगातार 36 घंटे अंग्रेजी जेल में पिटाई से फेफड़े फट गए और वे शहीद हो गए।** इन सभी पुण्यात्माओं का स्मरण हर राष्ट्रभक्त के हृदय में स्वराष्ट्र के रक्षण-संरक्षण हेतु सिद्धता की भावना का स्फुरण कराता है।

विद्यमान हालात पर जब हम डालते हैं दृष्टि, तो अनुभूति हो जाती है कि आज भी स्वदेश के समक्ष अनेक चुनौतियां विद्यमान हैं। **आतंकवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद, जातिवाद के विषधर अपनी प्रबल फुंफकारों से राष्ट्र की काया को जर्जर करने में अपनी पूर्ण शक्ति से जुटे हुए हैं।**

इतिहास के इस निर्णायक दौर में हमें **शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, मंगल पांडे, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे महान पथ प्रदर्शकों का जीवन वृत्त राह दिखाने में समर्थ सिद्ध हो सकता है।** इन महापुरुषों ने अपना जीवन समाज के उत्थान और अभिवृद्धि के लिए समर्पित किया था। ***जो दूसरों के लिए उत्सर्ग करता है, उसी व्यक्ति का इतिहास लिखा जाता है। रामभक्त हनुमान, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह की गौरव गाथा आज भी राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हर इन्सान श्रद्धा सहित सुनता और गाता है।***

देश की युवा पीढ़ी उन महामानवों का स्मरण कर उनके प्रेरक जीवन से शिक्षा लें, यही है काल प्रवाह का आह्वान। **राष्ट्र के समक्ष जो समस्याएं विद्यमान हैं, उनका समाधान इन महापुरुषों के प्रेरक जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर उनके त्याग और बलिदान से सीख लेने और कर्तव्य के पथ पर पग धर कर विकास के वैश्विक दौर में आगे निकलने में ही निहित है।**

समस्याओं के अन्धेरों में नैतिकता का प्रकाश ही पथ प्रदर्शन में समर्थ सिद्ध हो सकता है। देव दयानन्द का जीवन दर्शन, और प्रतिपादित पथ ही देश को आर्थिक सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से समुन्नत बनाने और समाज के हर वर्ग के उत्थान के लक्ष्य की सिद्धि में समर्थ है।

यह माह महापुरुषों का हमें स्मरण कराता है

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

सम्पादकीय-यह अप्रैल मास : समेटे अपने में प्रेरक इतिहास ३

सामायिक-विचार: कांग्रेस पार्टी का जमींदारा —*अश्विनी कुमार* ६

वैदिक-चिन्तन: ओ३म्-महिमा (मृत्योरात्मानं परिहराणीति) —*महात्मा नारायण स्वामी* ७

महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी: आत्म निवेदन ८

आपके पत्र १०

हृदय मंदिर के उद्गार —*दिव्या आर्य* ११

मेरे शहीद! तुम्हारी याद कैसे मनाऊं? —*महात्मा वेदभिक्षु:* १२

वैदिक-दर्शन: कार्यपालिका के अधिकार एवं कर्त्तव्य-ऋग्वेद —*पं. शिवनारायण उपाध्याय* १३

आर्यसमाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या —*स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या* १६

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्ष.... —*श्री मुन्ना कुमार शर्मा* १८

आग्नेय जीवनव्रती: पं. गयाप्रसाद शुक्ल —*श्री बनारसी सिंह* १९

1 अप्रैल जिनकी जयन्ती है: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक: केशव बलिराम हेडगेवार २०

गाय एक अद्भुत.... —*श्री रोशनलाल जी पाल* २३

श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती (चैत्र शुक्ल पंचमी) —*सत्यानन्द आर्य* ३०

आर्यसमाज के आधार स्तम्भ जीवनियाँ भाग-7 ३२

खड्ग साधक रहा है भारत —*राकेशकुमार आर्य* ३६

ऐसा देश है मेरा ३८

गंगा रक्षक महापुराण की जरूरत —*रामबहादुर राय* ३९

स्वच्छ राजनीति चाहिए/भारत स्वच्छ अपने आप होगा —*डॉ. रिखबचन्द जैन* ४१

"आर्य" हिन्दू राजाओं का.... —*डॉ. विवेक आर्य* ४३

तांगेवाला कैसे बना मसालों... —*म. धर्मपाल गुलाटी* ४५

स्वास्थ्य विचार: वृद्धावस्था और..... —*डॉ. फणिभूषण दास* ४६

समाचार-दर्शन ४७

कि जीवन के प्रति प्रबल आत्मविश्वास, सत्य के प्रति अटूट आस्था, ही समाज और राष्ट्र को विकास की राह पर ले जाने में समर्थ सिद्ध हो सकती है। नैतिकता और चारित्रिक बल ही वे दो पाए हैं, जिनके बल पर हम **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** के आदर्श को साकार रूप देने में समर्थ हो सकते हैं।

समानता, विषमता, निर्धनता और सम्पन्नता, ईमानदारी, भ्रष्टाचार, राजनीतिक विसंगतियां, लोकतन्त्र शुद्धि, आतंकवाद-इन की नैतिकता और चारित्रिक दृष्टि से समीक्षात्मक समालोचना समय की पुकार है। जिन महापुरुषों का स्मरण हमें अप्रैल माह दिला रहा है, उनका समग्र जीवन हमें इसी तथ्य का स्मरण करा रहा है। साथ ही यह भी कर रहा है आह्वान् कि हम अपने राष्ट्र की प्राचीन समृद्ध परम्परा की अनदेखी नहीं करें।

अपने मूल स्वभाव विस्मरण, ओजस्वी, तेजस्वी मनीषियों के प्रति अनासक्त भाव नहीं अपितु राष्ट्र की **महान विभूतियों के प्रति श्रद्धा भावना** ही समाज में सही अर्थों में नव चैतन्य के जागरण में समर्थ सिद्ध हो सकती है। **इस पथ का अनुगमन ही समय का आह्वान् है।** ❖❖❖

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। —सम्पादक

कांग्रेस पार्टी का जमींदारा

–अश्विनी कुमार

क्या गजब का जमींदारा है कांग्रेस पार्टी में कि कांग्रेस अध्यक्ष **श्रीमती सोनिया गांधी अपने पुत्र राहुल गांधी के चुनाव क्षेत्र अमेठी में पहुंच कर कह रही हैं कि पिछले एक महीने से गायब राहुल गांधी जल्दी ही प्रकट होंगे। तब तक वह उनके चुनाव क्षेत्र के लोगों का हालचाल पूछती रहेंगी। अभी तो वह किसानों का हालचाल जानने आयी हैं!!...**

श्रीमती गांधी का यह कहना कि रायबरेली (उनका अपना चुनाव क्षेत्र) और अमेठी हमारे परिवार के साथ बन्धे हुए हैं और वह दोनों चुनाव क्षेत्रों की देखभाल करेंगी, पूरी तरह लोकतन्त्र के मूल सिद्धान्तों और लोक प्रतिधित्व व्यवस्था से बन्धी जवाबदेही के खिलाफ है।

श्रीमती सोनिया गांधी को यह मालूम होना चाहिए कि यह 21वीं सदी का दौर चल रहा है और भारत में अंग्रेजों की निगेहबानी में चलने वाले राजतन्त्र का खात्मा हुए सात दशक से ज्यादा का समय बीत चुका है। लोकतन्त्र में वह व्यक्ति अपने चुनाव क्षेत्र के लोगों के प्रति सीधे जवाबदेह होता है जो उसे चुन कर भेजते हैं। **अमेठी के लोगों को यह जानने का जायज अधिकार है कि आखिर उनका चुना हुआ प्रतिनिधि कहां गायब हो गया है और क्यों गायब हो गया है?**

सार्वजनिक जीवन में निजीपन का अधिकार उसी दिन समाप्त हो जाता है जिस दिन लोग किसी व्यक्ति को अपना चुना हुआ प्रतिनिधि घोषित करते हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं बल्कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतन्त्रता से पहले ही अपने **'हरिजन'** पत्र में लिखकर कहा था कि **"जो लोग सार्वजनिक जीवन अर्थात् राजनीति में आते हैं उन्हें यह सोचकर ही इसमें प्रवेश करना चाहिए कि उनका जीवन अपना नहीं रहेगा। वह लोगों को समर्पित हो जाएगा।** इसमें निजीपन के लिए कोई स्थान नहीं रहता। लोगों को यह जानने का पूरा अधिकार होता है कि उनके नेता का निजी आचरण और जीवन कैसा है। **उसका प्रत्येक पल आम जनता के लिए खुली किताब होना चाहिए।"**

मगर क्या कयामत है कि आज की कांग्रेस लोकसभा चुनाव क्षेत्रों को भी अपनी निजी जायदाद के तौर पर देख रही है और **एक मां बेटे के चुनाव क्षेत्र की जिम्मेदारी उठाकर उस असली सवाल से लोगों का ध्यान हटाने की कोशिश कर रही है कि उसका पुत्र आखिरकार कहां और कौन सी छुट्टियां बिताने गया है? क्या सितम हो जाएगा अगर भारत के लोगों को यह बता दिया जाएगा कि श्रीमान राहुल गांधी किस स्थान पर अपना बौद्धिक चिन्तन-मनन कर रहे हैं?**

और....कौन सी विरासत की बात कर रही हैं सोनिया जी! क्या उन्होंने कांग्रेस पार्टी की उस सबसे बड़ी विरासत **'फूलपुर'** की तरफ नजर भरकर देखा है जो उत्तर प्रदेश में ही है और इलाहाबाद से सटी हुई है। **फूलपुर चुनाव क्षेत्र से जीवन पर्यन्त पं. जवाहरलाल नेहरु चुनाव जीत कर लोकसभा में आते रहे। उनकी मृत्यु के बाद उनकी बहन श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित इसी चुनाव क्षेत्र से जीत कर लोकसभा पहुंची थीं।**

रायबरेली सीट स्व. इंदिरा गांधी के पति श्री फिरोज गांधी की थी जहां से प्रधानमन्त्री बनने के बाद इंदिरा जी ने पहली बार 1967 में चुनाव लड़ा था मगर इसी सीट से 1977 में इंदिरा गांधी चुनाव हार भी गयी थीं मगर **फूलपुर को कांग्रेसियों ने लावारिस बना कर छोड़ दिया और इस सीट से बाद में 'माफिया किंग' चुनाव जीतने लगे।** यह सनद रहनी चाहिए कि 1967 में **श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने फूलपुर से ही पुनः लोकसभा चुनाव जीता था। मगर एक साल बाद ही श्रीमती गांधी के साथ चलते विवाद और तल्खी की वजह से उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया था। वह 1975 में इमरजेंसी लगने के बाद पूरी तरह विद्रोही हो गई थीं और 1977 के लोकसभा चुनावों में उन्होंने स्व. मोरारजी देसाई, जयप्रकाश नारायण और श्री अटल बिहारी बाजपेयी के साथ जनता पार्टी के मंचों से कांग्रेस प्रत्याशियों को हराने के लिए अभियान छेड़ा था।** अतः अगर विरासत को ही देखना है तो पं. नेहरु की एक विरासत और है जो **'फूलपुर'** में कांटा बन कर कांग्रेसियों को चुभती रही है।

मैं यह सब इसलिए लिख रहा हूं कि लोकतन्त्र में विरासत का मतलब कुछ नहीं होता है। **यह विरासत किसी भी चुने हुए जनप्रतिनिधि को 'वली अहद' नहीं बना सकती** मगर कांग्रेसी तो जिद पर अड़े हुए हैं कि हिन्दोस्तान में फिर से **'मुगलिया सल्तनत'** को

(शेष पृष्ठ-15 पर)

ओ३म्-महिमा (मृत्योरात्मानं परिहराणीति)

–महात्मा नारायण स्वामी

सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्या इन्द्रे बलं ददानीति सर्वे ऊष्माणो अग्रस्ता निरस्ता विवृता वक्तव्याः प्रजापतेरात्मानं परिददानीति सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्या मृत्योरात्मनं परिहराणीति॥5॥ (छान्दोग्य उपनिषद् 2.22.5)

अर्थ–(**सर्वे स्वराः**) समस्त स्वर (**घोषवन्तः, बलवन्तः, वक्तव्यः**) उच्चनाद और बल से उच्चारने योग्य है (**इन्द्रं, बलं ददानि, इति**) इस प्रकार (**उच्चारण**) इन्द्र को बल देवें।

(**सर्वे, ऊष्माणः, अग्रस्ता, निरस्ताः, विवृताः, वक्तव्याः**) समस्त ऊष्मा न ग्रसे हुए, न फैंके हुए (अर्थात् साफ-साफ) उच्चारने चाहिए (**प्रजापतेः, आत्मानम्, परि ददानि, इति**) इस प्रकार (**उच्चारक**) प्रजापति को आत्मसमर्पण करता है।

(**सर्वे, स्पर्शाः लेशेन, अनभिनिहिताः वक्तव्याः**) समस्त स्पर्श धीरे-धीरे, एक दूसरे में न मिलाकर उच्चारने चाहिए (**मृत्योः, आत्मानम्, परिहराणि, इति**) इस प्रकार (**उच्चारक**) मृत्यु से अपने को बचा लेता है ॥5॥

बाईसवें खण्ड की व्याख्या–इस खण्ड में प्रथम, साम मन्त्रों के गाने में जो स्वर, प्रयुक्त होते हैं उनके नाम दिखलाए गए हैं और उनके प्रचारक ऋषियों के नाम भी इस प्रकार दिए गए हैं।

संख्या	प्रचारक ऋषि का नाम	स्वर	स्वर विवरण
1.	अग्नि	विनर्दि	पशुओं के नाद में यह स्वर निकाला गया है।
2.	प्रजापति	अनिरुक्त	अनिर्वचनीय अनुपम
3.	सोम	निरुक्त	स्पष्ट गान
4.	वायु	मृदु श्लक्ष्ण	कोमल और रसीलागान
5.	इन्द्र	श्लक्ष्णबलवत	रसीला और कोमलतापूर्ण गान
6.	बृहस्पति	क्रौंच	क्रौंचपक्षी के नाद से मिलता जुलता यह स्वर है।
7.	वरुण	अपध्वांत	फूटे बर्तन के नाद से सदृश सुनने में अरुचिकर।

अन्तिम को छोड़कर सात स्वरों में बाकी के यज्ञादि में गाने का विधान किया गया है।

दूसरे प्रववाक में इस बात की शिक्षा दी गई है कि किस-किस श्रेणी के प्राणियों के लिए किस-किस वस्तु की, गान में, ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, उसका विवरण इस प्रकार है–

संख्या	वर्ग	प्रार्थनीय वस्तु
1. देव	(ब्रह्मविद्)	अमृततत्व = मोक्ष
2. पितर्	(रक्षकवर्ग)	स्वधा अर्थात् पितरों के मान का द्योतक।
3. मनुष्य		आशा। संसार में आशा के आधार ही से सब कुछ किया जाता है।
4. पशु		तृण + उदक अर्थात् चारा पानी
5. यजमान		स्वर्गलोक-यज्ञ का फल रूप सुख विशेष
6. ऋत्विक		अन्न

यह प्रार्थना दिखावटी नहीं अपितु हृदय की प्रार्थना होनी चाहिए। स्वरों के उपदेष्टा ऋषियों का विवरण देने के बाद अब स्वर व्यञ्जन आदि अक्षरों और धन के प्रचारकों का विवरण दिया जाता है–

संख्या	अक्षर	प्रचारक
1.	स्वर (नौ स्वर)	इन्द्र-स्वर के सम्बन्ध में यदि कोई उपालंभ देवे तो इन्द्र का उसे प्रमाण देकर चुप करा देना चाहिए।
2.	उष्मा (4 अक्षर)	प्रजापति " "
3.	स्पर्श (25 अक्षर)	मृत्यु " "

अन्त में इन स्वर आदि का उच्चारण किस प्रकार करना चाहिए इसकी शिक्षा दी गई है जिसकी व्याख्या लिखी जा चुकी है।

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य अपने तथा अपने मित्र परिवारों में पहुँचाएं। मूल्य 2800 रु.। बढ़िया कागज-मूल्य 3600 रु.

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर-वाणी

आत्म निवेदन

तूफान, बाधाएं, संकट और अपमानों का मैंने सदा पुष्पहार समझकर स्वागत किया है। **यश की इच्छा मैंने स्वप्न में भी नहीं की। समय के** साथ बहना भी मुझे नहीं आया। मैंने जो कुछ सच समझा है उसे अपनाया है और सदा साथ रही है अपने मान्य श्री भगवत्प्रसाद शुक्ल 'सनातन' की यह पंक्तिया-

बाधाएं आएं आने दो, दानवीय होने दो वार!
छाती खोल बढ़ो तुम आगे, सहने को ये सभी प्रहार।

जब से होश सम्भाला, तभी से संकटों के साए में झूले झूलना मुझे अच्छा लगा। **मृत्यु का स्वागत तो अनेक बार इस उल्लास से किया है कि वह शरमा कर दूर भाग गयी। मेरे पास भौतिक दृष्टि से कोई सम्पदा आज नहीं है। पर अपने माता-पिता की स्मृति और विरासत मेरी वह पूंजी है जिसके सम्बल में मैंने अपने को कभी निर्बल नहीं समझा।**

मेरे पिता स्व. पं.गयाप्रसाद शुक्ल सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे। उनकी गाथा तो फिर कभी उनके कागजों के साथ लिखूंगा। उनका स्मरण तो मुझे नहीं किन्तु जो कुछ सुना, समझा और जाना है उसके आधार पर कह सकता हूं कि शक्तिशालिनी ब्रिटिश सरकार उनके नाम से कांपती थी। उनकी शवयात्रा आरम्भ होने तक भी चार सी.आई.डी. इन्सपेक्टर उनकी सेवा में रहते थे। जिस दिन विवाह हुआ, उसी दिन रात्रि में वे गिरफ्तार हो गए थे और 36 घंटे तक पुलिस निर्मम प्रहारों के बाद भी चार वर्ष वे जीवित रहे।

मुझे अपनी स्वर्गीय **माता का आशीर्वाद भी 17 वर्ष की आयु तक ही प्राप्त हो सका। किन्तु इन 17 वर्षों में उनके जीवन की प्रेरणा से मैं इतनी शक्ति प्राप्त कर सकता हूं कि जन्म-जन्मान्तरों में भी वह क्षीण होने वाली नहीं।** घर में मैं और मेरी बहन वसुन्धरा ही थे। **मैं घर का इकलौता लड़का था।** मेरी मां, जो विवाह के चार वर्ष बाद ही विधवा हो गई हो उसने तनिक भी मोह में न पड़ मुझे 4 वर्ष की आयु में गुरुकुल भेजने का मन बना लिया था।

सन् 1942 में जब वे किसी तरह बम्बई अधिवेशन से घर लौटीं तब उनके पहले शब्द थे कि तू अभी तक जिन्दा क्यों हैं? क्यों नहीं कुछ करता या मरता, और जब 1946 में मैं गुरुकुल में समावर्तन संस्कार में भाग ले रहा था तब सहस्रों जनसमुदाय के समक्ष उन्होंने मुझसे भिक्षा मांगी थी कि **"बेटा जीवन में कभी कोई काम धनोपार्जन की दृष्टि से न करना। अपना सारा जीवन देश-धर्म को भेंट चढ़ाना।"**

उनके ये शब्द थे और मैं था, **आज तक मैंने कुछ भी किया हो पर इन शब्दों का उल्लंघन नहीं किया।** 1950 में विवाह के पश्चात् राज्य के **250/- रुपए मासिक के नियुक्ति पत्र को छोड़कर मैंने 60/- रुपए में प्रतिनिधि सभा का उपदेशक बनना स्वीकार किया था।**

1952 से आज 1974 तक की कहानी मेरे जीवन के अनवरत संघर्षों की कहानी है। इसमें मैंने जो कुछ देखा है, समझा है, जाना है, वह तो एक बृहद ग्रंथ का विषय है। हां, अभी इतना ही कह सकता हूं कि **इस लम्बे काल में मुझे आर्य जनता का अपार स्नेह प्राप्त हुआ है। जिस कार्य में भी मैंने हाथ डाला, आशातीत सफलता मिली।** ऋषि दयानन्द के प्रति आर्य जनता की श्रद्धा, आस्था अपूर्व है। यही आर्यसमाज की शक्ति है।

गत 24 वर्ष के गृहस्थ जीवन में मैंने अपने या अपने परिवार के लिए कुछ भी नहीं किया। इसे आप कुछ भी समझ सकते हैं किन्तु **यह सच है कि मेरे पास अपना कहने के लिए न एक मकान है, न जमीन का कोई टुकड़ा है। न किसी बैंक में 100/- रुपए हैं, न घर में कोई पूंजी, न जेवर।** मैं त्यागी, तपस्वी होने का ढोंग नहीं करता, न दिखावे के लिए कभी कोई काम किया है। **बस जो कुछ भी है सब कुछ स्पष्ट है। आपके सामने है। आर्यसमाज के बड़े संगठनों में 20 वर्ष लगाए। पार्टीबाजी, फूट और झगड़ों की राजनीति ने हमारे कार्य की सफलता को**

असफलता में बदला है। अत: जो भी कार्य किए वे भी धूमिल होते गए।

परिणामस्वरूप....श्रद्धेय ***महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद और उन्हीं के दिए प्रारम्भिक 100/- रुपए की पूंजी से "जनज्ञान" का जन्म हुआ जो बाद में 'दयानन्द संस्थान' के उदय का कारण बना। 1965 के मई मास में जनज्ञान और 1971 की दीपावली पर दयानन्द संस्थान का उदय हुआ। पिछले ढाई वर्ष में संस्थान ने जो कुछ किया उसे बताने की आवश्यकता नहीं। वह अपनी कहानी आप कह रहा है। मेरा सब कुछ संस्थान है और मेरा सब कुछ संस्थान को अर्पित है। संस्थान को विधिवत् रजिस्टर्ड ट्रस्ट का रूप दे दिया गया है। ट्रस्ट को देश के चुने हुए आर्य विद्वानों का संरक्षण प्राप्त है। संस्थान के कार्यों पर सम्पूर्ण ऋषिभक्त गौरव कर सकते हैं। मेरी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। किसी भी पद के प्रति मुझे कोई आकर्षण नहीं है। मेरी केवल एक इच्छा है कि-"संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद की विचारधारा पहुंचा सकूं और दुनिया के हर आदमी का सिर ऋषि दयानन्द के चरणों में झुका सकूं।"***

> ***मेरे जीवन में मेरी इच्छा पूर्ण हो या न हो पर मुझे विश्वास है कि दयानन्द संस्थान के रूप में जो पौधा मैंने लगाया है उसके द्वारा सही दिशा में कार्य होता रहेगा और आज या कल, शीघ्र ही वह समय आएगा जब धरती के सारे लोग वैदिकधर्म की राह पर चलेंगे।***

दयानन्द संस्थान के कामों की सराहना देश-विदेश की जनता कर रही है। किन्तु **कुछ शीर्षस्थ तथाकथित नेतागण हमसे नाराज हैं**-इसलिए कि 1. हमने वेद भाष्य क्यों छापा और वेद का इतना प्रचार क्यों किया? 2. कर्णधार नेताओं के कामों और उनकी नीतियों की आलोचना हम क्यों करते हैं?
3. सारा वैदिक साहित्य संस्थान इतना सस्ता क्यों दे रहा है?

मैं नहीं जानता कि उनकी यह नाराजगी क्यों है? क्योंकि **मैं किसी को भी नाराज नहीं करना चाहता। किसी भी पार्टीबाजी और झगड़े में पड़ना नहीं चाहता इसलिए मैंने 11.2.1974 आर्यसमाज की आरम्भिक सदस्यता से भी त्यागपत्र दे दिया है।**

मैं यह स्पष्ट कर दूं कि जिस ढंग से आज का आर्यसमाज चल रहा है, उसे मैं ठीक नहीं समझता। मेरी भक्ति ऋषि दयानन्द के प्रति है, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति है किन्तु उन व्यक्तियों को नेता मानने को मैं तैयार नहीं हूं जो ऋषि का नाम तो लेते हैं पर ऋषि का काम करने को तैयार नहीं हैं, और **ये लोग षडयन्त्र में लगे हैं कि-**

1. मुझे पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए। 2. मेरी आवाज को दबा दिया जाए। 3. दयानन्द संस्थान को समाप्त कर दिया जाए।

उनका द्वेषभाव मेरे प्राण तक लेने के उपाय सोच रहा है और अपनी बुद्धि के अनुसार वे कुछ भी कर सकते हैं। पर मेरे मन में उनके प्रति भी कोई द्वेष नहीं है। **परमात्मा से मैं सभी की सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करता हूं और करता रहूंगा।** मैं जिस राह पर चल रहा हूं, उस पर अडिग चलता रहूंगा। प्राण दे दूंगा पर हटूंगा नहीं। मेरे सामने गुरुदेव दयानन्द का आदर्श है,

कौन-सा आरोप था जो ऋषि पर नहीं लगाया गया, कौन-सा प्रहार था जो गुरुदेव पर नहीं हुआ। सत्य कहने के लिए अपने या पराए जो भी जो प्रहार करेंगे, मैं मुस्कराकर उसे सहूंगा।

हमारा काम आपके सामने है। उसमें त्रुटियां बताइए, सिर झुकाकर स्वीकार करूंगा, हमारी नीतियां आपके सामने हैं, उनमें सुधार के लिए सदा तत्पर हूं, पर... **यदि कोई देश-विदेश में वेद के प्रचार से रोकना चाहेगा, इसके लिए धमकियां देगा तो मरना स्वीकार है, राह नहीं बदलूंगा।**

जो ऋषि दयानन्द के भक्त हैं, वे मेरे लिए सदा सम्मान के पात्र हैं, **जो ऋषि का काम कर रहे हैं, उनके लिए मस्तक सदा झुका है। पर जो धन-शक्ति के अभिमान में मुझे मेरी राह से हटाना चाहते हैं वे यह भली-भान्ति समझ लें कि अभी धरती पर वह शक्ति उत्पन्न नहीं हुई जो मुझे भयभीत कर सके, डिगा सके।**

-ईश्वर-विश्वास मेरी शक्ति है।
-आत्मविश्वास मेरी पूंजी है।
-मां की आज्ञा मेरी प्रेरणा है।
-जनता का प्यार मेरा सहारा है।

आशीर्वाद सभी से मांगता हूं कि राह भटकूं नहीं। दयानन्द के गीत गाता रहूं, **वेद-वीणा गुंजाता रहूं और बढ़ता रहूं ओ३म् पताका लेकर। जीवन की इच्छा भी नहीं, मरने से भी डर नहीं,** चलने के लिए प्रति क्षण तैयार हूं-जब तक जीवित हूं जो कर रहा हूं करता रहूंगा, **आशीर्वाद दीजिए कि कभी राह बदलूं नहीं।**

ऋषि भक्तों की शुभकामनाओं का इच्छुक!

-भारतेन्द्रनाथ

महात्मा वेदभिक्षुः जी के जन्मदिवस पर

आदरणीय महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती पर प्रस्तुत है भावांजलि

नमन तुम्हें हे महामनस्वी!
जन्मदिवस पर आज आपका
स्मरण मुझे हो आया।
वियोग जनित अन्तस् में पैठा–
दुःख आज पुनः गहराया॥
मन में आज उभर आयी
मूरत तेरी अरे तेजस्वी
नमन तुम्हें हे महामनस्वी॥
अनुपम लेखन रहा आपका–
सतत लेखनी चलती थी।
पाखण्ड-दम्भ के विरुद्ध सदा–
शोले बन आग उगलती थी।
सुन कर श्रोता गद्गद् होते–
भाषण देते थे ओजस्वी॥
मनन तुम्हें हे महामनस्वी॥
दयानन्द-संस्थान बनाकर
नौकरी को दूर भगाकर
न हों अधीन, कुछ करो स्वयं
यह पाठ पढ़ाया हे तेजस्वी!
नमन तुम्हें हे महामनस्वी॥

–रघुवीरवेदालंकार, दिल्ली

मुझे सन्तोष है...

बहिन जी

मैंने एक हजार रुपए दान के लिए दयानन्द संस्थान, मुखमेलपुर के पते पर भेजे हैं। पर अपनी रसीद सदस्य संख्या लिखना भूल गई। आशा है कि दान की राशि मिल जाएगी।

मैं 84 साल की हूं अतः कई बीमारियों से पीड़ित हूं। घर में ही चलती हूं, इससे बाहर जाना मेरे लिए मुश्किल है। इसलिए **मैं वार्षिक चन्दा, भेज कर ही जनज्ञान मंगा लेती हूं।** बच्चे अच्छे हैं उनकी सेवा तथा प्यार मुझे जीवित रख पा रहे हैं।

–बहन–प्रेम कान्ति अरोड़ा, चंडीगढ़

इनसे ही तो हम हैं!

माननीया!

हिन्दू दर्शन में कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान और अनेक ललितकलाएं लोकमंगली अभिधारणा को चरितार्थ करती हैं।

हमारे देश की सांस्कृतिक चेतना को देश के तीर्थस्थल सदैव समृद्ध करते रहे हैं। **मठ-मन्दिर व आश्रम देश की आधारशिला को आज भी सम्भाले हुए हैं, जिन्हें आज बचाए रखने की महती आवश्यकता है।**

जहां वेद, उपनिषद, दर्शन, तर्कशास्त्र, ज्ञान–विज्ञान एवं लोकमंगल परम्पराएं सिंचित होकर पल्लवित और पुष्पित होती हैं। इसलिए सभी को चाहिए कि इन परम्पराओं को पुनः जीवित करने के लिए प्रयास करें।

–डॉ. रामशंकर भारती, पं. दीनदयाल नगर, झांसी

धर्म का अपमान क्यों?

आदरणीया!

विश्व के लगभग सभी मतों में कुरीतियां एवं आडम्बर समान रूप में हैं। लेकिन **कुछ हिन्दू विरोधी लोग हिन्दुओं की सहिष्णुता का लाभ उठाकर अनावश्यक रूप से इसे अपमानित करने का षड्यन्त्र रचते हैं।**
आखिर इन सेकुलरों को हिन्दू धर्म में ही कुरीतियां क्यों दिखाई देती हैं?

–शिवम तिवारी, गुड़गांव (हरियाणा)

कानून बने

दिव्या आर्य जी नमस्ते!

कृपया जानिए कि **चीन का क्षेत्रफल भारत से तीन गुणा है** फिर भी उसने परिवार नियोजन के लिए बहुत सख्त कानून बना कर लागू कर दिए हैं।

न मानने पर जेल और जुर्माने का प्रावधान है। हम मांग करते हैं कि ऐसे ही कानून भारत में भी लागू किए जाए।

–सावरकरवाद प्रचार सभा 18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर

हृदय मन्दिर के उद्गार

–दिव्या आर्य

मेरी धमनियों में बहते लहू में उस दम उबाल का ज्वार आ जाता है,
जब गौरवशाली अतीत के पन्ने पलटते सेनानियों का स्मरण हो आता है,
कतरा-कतरा कट जाएगा यह जीवन यूं ही क्या, इसी तरह, निरर्थक???
तांत्या- गुरुदत्त- मंगलपाण्डे- शिवाजी एवं पं. गयाप्रसाद शुक्ल जैसा, बनाना है इसे सार्थक,
अप्रैल की यह स्मृतियां प्रदान करें विचारों को दृढ़ आधार, यही है हृदय मन्दिर के उद्गार!!

अप्रैल माह का प्रारम्भ स्मृतियां झकझोर गया वीभत्स-लोहमर्षक-जघन्य हत्याकाण्डों की और इस माटी से जन्में उन सपूतों की, जिन्होंने भारत मां को दासता से मुक्त कराने हेतु, **हमारे-आपके स्वर्णिम भविष्य हेतु....अपने रक्त की नदियां बहा दीं!!....** और हम....कृतघ्न होकर पाश्चात्य संस्कृति के रंग में आकण्ठ डूबते गए, **पथभ्रष्ट युवाओं को कहीं हमारी शिक्षा पद्धति तो कहीं हमारा ही उदारवादी दृष्टिकोण, तथाकथित धर्मनिरपेक्षता या 'सैक्यूलरवादिता' का पाठ कब पढ़ाता गया, पता ही नहीं चला!!.**

1947 से 2015 तक दृष्टि डालें तो....**पल-प्रतिपल, दिन-प्रतिदिन, वर्ष-प्रतिवर्ष हम कब अपनी संस्कृति की, धर्म की, राष्ट्रनीति की, दयानन्द के स्वप्नों की, शिवाजी-महाराणा प्रताप के भावों की, सरदार पटेल-वीर सावरकर और लाल बहादुर शास्त्री जैसे जननायकों की देन, स्वच्छ राजनीति की धज्जियां उड़ाते गए...** पता ही नहीं चला!!...

कब देशप्रेम का उन्माद...... 'वैलेंटाइन डे' मे, होली-दीवाली जैसे त्यौहारों की श्रद्धा..... 'क्रिसमस' में और राखी जैसे त्यौहारों की पवित्रता.... 'फ्रैंडशिप डे' लील गया, ज्ञात ही नहीं हुआ!!.... कहां समय है कि चिन्तन करें-इस आजादी के पीछे का रक्त रंजित इतिहास अथवा असंख्य वीरों का बलिदान!!

जानती हूं यह अगस्त माह नहीं है **परन्तु... सन् 1819 की 13 अप्रैल की जलियांवाला बाग की खूनी बैसाखी और प्रथम स्वाधीनता संग्राम... जो 10 मई 1857 को हुआ, उसका ताना-बाना बुनने में निश्चित ही अप्रैल माह सूत्रधार रहा है और यही मेरे हृदय को उद्वेलित कर रहा है।**

जागिए! **बन्धुओं! गौरवशाली इतिहास के झरोखों के पन्ने अपनी सम्पूर्ण सकारात्मक ऊर्जा के साथ बिखेरते जाइए आप यत्र-तत्र-सर्वत्र...**और देखिए... कैसे देशप्रेम का ज्वार भारतीयों के हृदय में हिलौरे लेने लगता है और विश्व को बन्धुत्व का भाव बताते-बताते **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** के उद्घोष की ओर स्वत: ही अग्रसर होता है!... प्रयास तो करिए!

आइए! स्मरण करें...**अमर शहीद तांत्या टोपे** को, जिन्हें नरवर के **राजा मानसिंह ने अंग्रेजों की मिलीभगत से विश्वासघात कर 8 अप्रैल 1859 को सोते में छल से पकड़ लिया था और खुले मैदान में 18 अप्रैल 1859, फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया था** और....

कैसे विस्मृत करें, उस प्रथम स्वाधीनता संग्राम के अग्रदूत **महान स्वतन्त्रता सेनानी मंगल पाण्डे** को–जिन्होंने, **ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से गाय व सुअर की चर्बी लगे कारतूस लेने से मना कर विरोध जताया** और अंग्रेज अधिकारी मेजर ह्यूसन को मौत के घाट उतार दिया। उनका कोर्ट मार्शल कर 18 अप्रैल 1857 को निर्धारित हुई फांसी की सजा 8 अप्रैल को ही दे दी गई। और **उस क्रान्ति का परिणाम तो फिर हम सब जानते ही हैं.. 10 मई 1857 की क्रान्ति.....जिसकी ज्वाला की लपटें 1947 तक ऐसी फैलीं कि जिसने 90 वर्ष पश्चात् स्वतन्त्रता का शंखनाद किया।**

और स्मरण है अन्त में, **दादा जी- पं. गयाप्रसाद शुक्ल का**...जिन्हें **अंग्रेजों ने बर्फ की सिल्लियों पर रख 136 घण्टे तक निर्ममता से कोड़े मारे, जिससे उनके फेफड़े क्षतिग्रस्त हो गए और मात्र 32 वर्ष की आयु में, 19 अप्रैल 1932 को उन्होंने प्राण त्यागे।.**

धन्य है यह भारत भूमि जहां ऐसे वीर जन्मे और सौभाग्यशाली हैं हम जो **ऐसी गौरवशाली अतीत वाली धरा में जन्मे!** आइए! इन सबका ऋण उतारने हेतु हम रहे सदा तत्पर... रहेंगें न! ❖❖❖

मेरे शहीद! तुम्हारी याद कैसे मनाऊं?

–महात्मा वेदभिक्षुः

तुम्हें श्रद्धांजलि देने के लिए,
मेरे पास शब्द नहीं हैं।
क्योंकि श्रद्धा और आनन्द
दोनों ही मैं खो चुका हूं।
अन्धकार का प्रतिनिधि बनकर,
सब कुछ गहरे सागर में डुबा चुका हूं?
तुम्हारी फुलवारी
जिसके लिए तुम्हारा बलिदान हुआ था।
आज मुझे याद नहीं है,
फिर तुम्हारी याद कैसे मनाऊं?
श्रद्धा के फूल कैसे चढ़ाऊं?

तुम शहीद थे,
जीवन भर शहीद रहे,
लाल-लाल गौरव की पताका
फहराते, उड़ाते......
उषा की लालिमा से पावन
तपोभूत तुम! और
स्वार्थ के कीचड़ में फंसे,
पद-मोह गद्दी की भूख में धंसे,
आपस में लड़ने में निष्णात,
हम तुम्हारे गीत गाते हैं।
और जो कुछ भी तुमने कहा था–

उसे झुठलाते हैं।
मेरे शहीद! प्राण! बलिदानी!
लाल रक्त की गरिमा के पुंज,
वर्षों पहले,
जो खून तुम्हारा गर्म-गर्म
वृद्धकाया में बहा था,
वही रक्त माथे पर लगा,
अगर हम व्रत कर सकें।
तुम्हारी राह पर चलने का....
तो सब कुछ बदल सकता है।
बिगड़ा भाग्य बन सकता है।

जनज्ञान (मासिक) सदस्यता फार्म

कम से कम पांच घरों में पहुंचाएं जनज्ञान
यही है परिस्थिति का आह्वान

नामः...

पूरा पता...

....

पिनकोड .... मोबाईल ....

ई-मेल.. व्यवसाय ....

सदस्य संख्या (यदि आप पूर्व में सदस्य हैं तो)..

एक प्रति–18 रुपए, द्विवार्षिक शुल्क–380 रुपए, त्रिवार्षिक शुल्क–550 रुपए
पांच वर्ष–900 रुपए, आजीवन–3100 रुपए, संरक्षक सदस्य–11000 रुपए

कार्यपालिका के अधिकार एवं कर्त्तव्य-ऋग्वेद

–पं. शिवनारायण उपाध्याय

ऋग्वेद में **कार्यपालिका के अधिकार एवं कर्त्तव्य** के विषय में भी पर्याप्त वर्णन हुआ है। सांसद अथवा विधायक ही अपनों में से ही केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल अथवा प्रान्तीय मण्डल का गठन करते हैं इसलिए उनके वे अधिकार एवं कर्त्तव्य तो हैं ही जो सांसद अथवा विधायक के होते हैं, इसके अतिरिक्त उन्हें संसद/विधान सभा द्वारा पारित प्रस्तावों का भी क्रियान्वयन करना होता है।

संसद/विधानसभा द्वारा पारित वार्षिक बजट के अनुसार शासन संचालन का दायित्व भी उन पर होता है। वे अपने कार्यों के लिए संसद विधान सभा के प्रति उत्तरदायी भी होते हैं। **वे अपने पदों पर तभी तक रह सकते हैं जब तक संसद/विधान सभा का उन पर विश्वास हो। राज्य में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित करने का दायित्व कार्यपालिका पर ही होता है**। अब हम ऋग्वेद से ही इस विषय का प्रतिपादन कर रहे हैं।

त्यानन्तु क्षतियां अव आदित्यान्याचिषामहे।
सुमृडीकाँ अभिष्ये। ऋ. ८.६७.१

पदार्थ–(**अभिष्टये**) अभिमत फलों की प्राप्ति के लिए हम प्रजाजन (**तान् नु क्षत्रियान्**) उन सुप्रसिद्ध न्यायपरायण बालिष्ठ वीर पुरुषों के निकट (**अवः**) रक्षा की (**याचिषामहे**) याचना करते हैं जो (**आदित्यान्**) सूर्य के समान तेजस्वी और अज्ञानान्धकार निवारक हैं और (**सुमृडीकान्**) जो प्रजाओं, आश्रितों और असमर्थों को सुख पहुंचाने वाले हैं।

भावार्थ–इस मन्त्र में रक्षकों और रक्ष्यों के कर्त्तव्य का वर्णन करते हैं। सर्व प्रकार के रक्षक सुखप्रद हों और रक्ष्य उनसे सदा अपनी रक्षा करावें। इसके लिए परस्पर प्रेम और कर-वेतन आदि की सुव्यवस्था होनी चाहिए।

मित्रो नो अत्यहतिं वरूणाः पर्षदर्यमा।
आदित्यासोयथा विदुः। ऋ. ८.६७.२

पदार्थ–(**मित्रः**)ब्राह्मण प्रतिनिधि (**वरूण**) क्षत्रिय प्रतिनिधि (**आदित्यासः**) और सूर्यवत् प्रकाशमान और दुःख हरणकर्ता अन्यान्य सभासद् (**यथा विदुः**) जैसा जानते हो या जानते हैं उसी रीति से (**नः**) हम प्रजाजनों के (**अंहितिम्**) क्लेश, उपद्रव, दुर्भिक्ष और इस प्रकार के निखिल विघ्नों को (**अति पर्षद्**)अत्यन्त दूर ले जायें।

भावार्थ–**मित्र**–जो स्नेहमय और प्रेमागार हो, **वरुण**–जो न्याय दृष्टि से दण्ड दे और सत्य का स्तम्भ हो। **अर्यमा**=अर्य्य=वैश्य, **मा**=माननीय=वैश्यों का माननीय। समाज का हर वर्ग का मन्त्री मण्डल में प्रतिनिधित्व हो। यहां न्याय के लिए जिसके निकट पहुंचे, वह **अर्य्यमा**= अभिगमनीय **अंहति**=जो प्राप्त परिश्रमी, बड़े उद्योगी सत्यवाद, निर्लोभ और परहित समर्थ हों। कार्यपालिका अपना कार्य कर्मचारियों से कराती है। इसलिए उच्च पदाधिकारी कैसे हों यह वही तय करती है।

तेषां हि चित्रमुबध्यं वरूथमस्ति दाशुष।
आदित्यानामरं कृते। ऋ. ८.६७.३

पदार्थ–(**दाशुषे**)जो लोग प्रजा के कार्य में अपना समय, धन, बुद्धि, शरीर, और मन लगाते हैं। वे दाश्वान् कहलाते हैं और जो (**अरंकृते**) अपने सदाचारों से प्रजा को भूषित रखते हैं और प्रत्येक कार्य में जो सक्षम हैं वे अलंकृत कहलाते हैं। इस प्रकार मनुष्यों के लिए (**तेषाम् हि आदित्यानाम्**) उन सभासदों का (**चित्रम्**) बहुविध (**उक्थ्यम्**) प्रशंसनीय (**बरूथम्**) दान पुरस्कार सत्कार, पारितोषिक धन आदि होता है।

भावार्थ–जो राष्ट्र के उच्चाधिकारी हों वे सदा उपकारी जनों में पारितोषिक प्रदान करते रहें। इससे देश की वृद्धि होती है। उन्हें केवल अपने स्वार्थ में मगन नहीं होना चाहिए।

यव्दः श्रान्ताय सुन्वते वरूथममस्ति यच्छर्दिः।
तेनो नो अधि वोचत। ऋ. ८.६७.६

पदार्थ–हे राज्य सभासदों! प्रबन्धकर्ताओं!(**श्रान्ताय**) अतिपरिश्रमी, उद्योगी, साहसी और (**सुन्वते**) सदा शुभ कर्म में निरत जनों के लिए (**वः**) आप लोगों का (यद् वरुथम्) जो दान के लिए धन का सहाय्य और पुरस्कार आदि हैं और (**यद् छर्दिः**) रहने के लिए बड़े-बड़े भवन और आश्रय हैं (**तेन**)उन दोनों प्रकार के उपकरणों से (**नः**) हम प्रजाजनों की (**अधिवोचत**) सहायता और रक्षा कीजिए।

भावार्थ–परिश्रमी और सुकर्मी जनों को राज्य की ओर से सब सुविधा मिलनी चाहिए।

मा नो मृचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः।
देवा अभि प्र मृक्षत। ऋ. ८.६७.९

पदार्थ–(**अविष्यव:**) रक्षति सभासदों! (**वृजिनानाम्**) पापिष्ठ हिंसक (**रिपूणाम्**) शत्रुओं की (**मृचा**) हत्या (**न:मा**) हम लोगों के मध्य न आवे। (**देवो:**) हे देवा! वैसा प्रबन्ध आप (**अभि**)सब ओर से (**अमृक्षत**) करें।

भावार्थ–सभाध्यक्षगण ऐसा प्रबन्ध करें कि जिससे प्रजाओं में कोई बाधा उत्पन्न न हो सकें। **कार्यपालिका को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कर्मचारीगण प्रजा को लूट न सकें।**

तेन आस्नो वृकाणामदित्यासो मुमोचत।
स्तेनं बद्धमिवादिते। ऋ. ८.६७.१४

पदार्थ–(**आदित्यास:**) हे सभासदों! (**वृकाणाम्**) हिंसक, चोर, डाकू और द्रोही असत्यवादी वृक (भेड़िया) पशु के समान भयंकर जनों के (**आस्न:**) मुख से (न:) हम प्रजाओं को (**मुमोचत**) बचाओ। (**अदिते**)हे संसद! (**बद्धम् स्तेनम्**) बुद्ध चोर को जैसे छोड़ते हैं वैसे दुर्भिक्ष आदि पापों से पीड़ित और बद्ध हम लोगों को बचाइए।

भावार्थ–प्रजा कितने प्रकार से लूटी जाती है इसका दृश्य यदि देखना हो तो आंख खोलकर ग्राम सभा में देखो। **मनुष्य वृकों और व्याघ्रों से भी बढ़कर स्वजातियों के हिंसक बन रहे हैं। संसद को उचित है कि इन उपद्रवों से प्रजा की रखा करे।**

कार्यपालिका के द्वारा अच्छा कार्य करने पर राज्य कर्मचारी का सम्मान भी किया जाना चाहिए।

शश्वद्धि व: सुनदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम्।
पूरानूनं बुभुज्महे। ऋ. ८.६७.१६

पदार्थ–(**सुदानव: आदित्या:**)हे परमोदार परमदानी सभासदों! (**व: अतिभि:**) आप लोगों की रक्षा, सहाय्य और राज्य प्रबन्ध से (**वयम् हि**) हम प्रजागण (**शश्वत्**) सर्वदा (**पुरा**) पूर्व काल में और (**नूनम्**) इस वर्तमान समय में (**बुभुज्महे**) आनन्द और विलास करते आए हैं और कर रहे हैं। अत: आप लोग धन्यवाद के पात्र हैं।

भावार्थ–राज्य कर्मचारियों का अच्छा काम होने पर सम्मान करें। **पापियों, अपराधियों चोरों, व्यसनियों को अच्छा बनाने का कार्य भी कार्यपालिका का ही है।** इस पर वेद में वर्णन है–

शश्वन्तं हि प्रचेतस: प्रतियन्तं चिदेनस:।
देवा कृणुथजीव से। ऋ. ८.६७.१७

पदार्थ–हे(**प्रचेतस:**) हे उदार चेता/हे ज्ञानिवर/हे सुबोद्धा! (देवा:) विद्वानों! उन पुरुषों को (**जीव से**) वास्तविक मानव जीवन प्राप्त करने के लिए (**कृणुथ**) सुशिक्षित बनाओ कि जो (**शश्वन्तम् हि**) अपराध और पाप करने के सदा अभ्यासी हो गए हैं। परन्तु (**एनस:**) उनको पश्चाताप के लिए (**प्रतियन्तम्**) जो आपके शरण में आ गए हैं उन्हें आप सुशिक्षित और सदाचारी बनाने का प्रयत्न करें।

ऋ. ८.६७.२१ में कहा गया है कि **देश की दशा का निरीक्षण करने के लिए विद्वानों को नियुक्त करो तथा उनकी सलाह लेकर देश के विकास की योजनाएं बनाओ। कार्यपालिका को राज्य में ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि सब व्यक्ति अपने को सदैव सुरक्षित समझें।**

वेद में सर्वोच्च शासक को राजा कहा जाता है। कहीं-कहीं पर उसे तथा सेनापति को अश्विना नाम से भी सम्बोधित किया गया है। ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 73 की अधिकांश ऋचाएं उन्हीं के अधिकार एवं कर्त्तव्य से सम्बन्ध रखती हैं।

उदीरायामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम्।
अन्ति षद्भूतु वामव:॥ ऋ. ८.७३.१

पदार्थ–(**अश्विना**) हे राजा एवं मन्त्री (**ऋतायते**) सत्याचारी और प्रकृति नियम वेत्ता के लिए आप (**उदारीयाम्**) सदा जागृत रहिए और (**रथम्**) रथ को (**युञ्जाथाम**)जोड़िए। इस प्रकार (**वाम्**) आप दोनों का (**अव:**) रक्षण (**अन्ति**) हमारे समीप में (**सद्भूतु**) विद्यमान होवे।

भावार्थ–राजा एवं मन्त्रियों को इस प्रकार प्रबन्ध करना चाहिए कि प्रजा अपने समीप में सम्पूर्ण रक्षा की सामग्री उपस्थित समझें। शासक को अनाथों के पालन की व्यवस्था भी करनी चाहिए।

निभिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना।
अन्ति षद्भूतु वामव:। ऋ. ८.७३.२

पदार्थ–हे (**अश्विना**) राजा एवं मन्त्री (**निमेष: चित्**) क्षण मात्र में आप सदाचारी पुरुष के लिए (**जवीयसा, रथेन**)अत्यन्त वेगवान रथ के द्वारा (**आ यातम्**) आइए। इस प्रकार (**वाम्**) आप दोनों का (**अव:**) रक्षण (**अन्ति**) हमारे समीप में (**षद्भूतु**) विद्यमान होवे।

जिसका समाज में कोई रक्षक अथवा सहायक न हो उसकी रक्षा करना राज्य का पहला कर्त्तव्य है।

उपस्तृणीतमत्रये हिमेन द्यर्ममश्विना।
अन्ति षद्भूतु वामव:॥ ऋ. ८.७३.३

पदार्थ–जिसके माता, पिता और भ्राता ये तीनों न

हों वह अत्रि! ऐसे आदमी की रक्षा हो राजा का यह उपदेश है। इसी सूक्त की चौथी ऋचा में कहा गया है कि **यदि राज्य के किसी भाग में कोई दुर्घटना घटे और प्रजा को उसकी उपस्थिति की आवश्यकता अनुभव हो तो उसे तुरन्त वहाँ पहुंचना चाहिए।**

अगली ऋचा में बताया गया है कि **राजा एवं मन्त्रियों का प्रथम एवं अन्तिम कर्त्तव्य प्रजा-पालन ही है।** राज्य में निर्धन एवं असहाय व्यक्तियों के लिए मकानों का निर्माण करवा कर वितरित किए जाने चाहिए।

अवन्तत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना।
अन्ति षद्भूतु वामवः। ऋ. ८.७३.७

पदार्थ–हे (**अश्विना**) राजा और मन्त्री (**युवम्**) आप दोनों (**अत्रये**) मातृ-भ्रातृ-पितृ विहीन जन समुदाय के लिए (**अवन्तम्**) सर्व प्रकार के रक्षक (**ग्रहम्**) गृह को (**कृणुतम्**) बनावें। जिस गृह में पोषण के लिए अन्न-पान और विद्यादि का अभ्यास हो। इस प्रकार (**वाम**) आप दोनों का (**अवः**) रक्षण (**अन्ति**) हमारे समीप में (**षद्भूतु**) विद्यमान होवे।

शासक को अनाथों के खान-पान की व्यवस्था भी करनी है। यह अगली ऋचा में बताया गया है। शासक और शासित के मध्य दूरी नहीं बढ़नी चाहिए।

इहागतं वृषण्वसू श्रृणुतं म इमं हवम्।
अन्ति षद्भूतु वामवः। ऋ. ८.७३.१०

पदार्थ–(**वृषण्वसु**)हे बहुत धन दाता राजा और मन्त्री! आप दोनों (**इह**) इस मेरे स्थान में (**आगतम्**) आवें और आकर (**मे**) मेरे (**इमम् हवम्**) इस प्रार्थना को (**श्रृणुतम्**) सुनें। इस प्रकार (**वाम**) आप दोनों का (**अवः**) रक्षण (**अन्ति**) हमारे समीप में (**षद्भूतु**) विद्यमान होवे।

भावार्थ–राजा और राज पुरुष प्रार्थी के दुःख दूर करने के लिए उनसे घनिष्ठ सम्पर्क करें। अगली ऋचा में वर्णन है कि शासक को निरालस्य होना चाहिए। शासक शासित से अपने को अलग न समझें।

समानं वां सजात्यं समानो बन्धुरश्मिना।
अन्ति षद्भूतु वामवः। ऋ. ८.७३.१२

पदार्थ–आप दोनों राजा और मन्त्री का प्रजाओं के साथ (**समानम्**) समान ही (**सजात्यम्**) साजातित्व है। अतः आप गर्व न करें। **आप प्रजाओं के रक्षण में दासवत् नियुक्त हैं।**

पुनः सब ही जन आपके (**समानःबन्धुः**)समान ही बन्धु हैं, अतः सदैव प्रजा का हित करते रहो। शासक को प्रजा के हित के कार्य सदैव करते रहना चाहिए।

आनो गव्येभिरश्व्यै सहस्त्रैरूप गच्छतम्।
अन्ति षद्भूतु वामवः। ऋ. ८.७३.१४

पदार्थ–शासक को उचित है कि वह **प्रजाहित साधक कार्यों में बहुत धन लगावे। देश को धन धान्य से पूर्ण रखें।** प्रजा कभी भी दुर्भिक्षादि से पीड़ित न हो।

अगली ऋचा में वर्णन है कि राज्य में पशुओं की कमी न रहे। प्रजा को भी पुरूषार्थी होना चाहिए।

पुरं न घृष्णवा रूज कृष्णया बाधितो विशा।
अन्ति षद्भूतु वामनः। ऋ. ८.७३.१८

पदार्थ–हे मनुष्यों। केवल शासकों के ऊपर सर्वभार मत दो किन्तु स्वयं भी उद्योग करो।

राज्य के आप्त पुरुषों को भी प्रजा रक्षण को अपना कर्त्तव्य मानना चाहिए। इस विषय में इस प्रकार वर्णन है–

प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत।
अन्ति षद्भूतु वामवः। ऋ. ८.७३.९

पदार्थ–हे अश्विद्वय! आपके राज्य में (**सप्तवध्रिः**) काव्यों में सात छन्दों के बान्धने वाले कविः ऋषि (**आशसा**) ईश्वर की स्तुति की सहायता से (**अग्नेः**) प्रजाओं की (**बुमुक्षा**), पिपासा आदि अग्नि समान सन्तापक रोग की (**धाराम**) महा ज्वाला को (**प्र अशायत**) प्रशमन करते हैं। आप भी धन और रक्षणद की सहायता देकर वैसे कीजिए। इति।

–(संस्कार से साभार) ❖❖❖

(पृष्ठ-6 का शेष)

तामीर करके ही तो **'राजमाता'** का राज्याश्रय मिलेगा और जरूरत पड़ी तो **'महाराजकुमारी'** मदद को आ जाएगी मगर यह बताना किसी को गंवारा नहीं है कि **एक जमाने में फटेहाल कलावती को ढूंढने वाले 'महाराजकुमार' कहां हैं। कलावती मानने वाली थोड़े ही है, वह अब आंध्र प्रदेश में प्रकट हो चुकी है और कांग्रेस की वहां की राज्यसभा सांसद श्रीमती रेणुका चौधरी को घेर कह रही है कि मेरे स्वर्गवासी पति से जो 'चुनावी चन्दा' लिया था, चुनावी टिकट देने के लिए, उसका हिसाब बताओ!!....**

उधर अमेठी के लोग अपने सांसद के गुमशुदगी के इश्तहार दीवारों पर चस्पा कर रहे हैं कि कोई तो ढूंढ कर लाओ हमारे **'गरीब नवाज'** को.... मगर कांग्रेसी अमेठी के लोगों को समझा रहे हैं–

"हाले दिल नहीं मालूम लेकिन इस कदर यानि,
हमने 'बारहा' ढूंढा, तुमने 'बारहा' पाया।"

(पंजाब केसरी, 30 मार्च, 2015 से साभार) ●●●

भाग-7 : आठवाँ नियम

आर्य समाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या

गतांक से आगे–

–स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या

आठवाँ नियम–अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

अर्थ–इसके पहिले सात नियमों का पूरा-पूरा साधन करने से जो योग्यता हमको प्राप्त होनी सम्भव है उसके हुए पीछे अब **इस नियम में एक यह कर्त्तव्य कर्म हमको आदेश किया गया है कि जिससे हम मुक्ति तक को प्राप्त हो सकते हैं**, वह यह है कि हम प्रतिक्षण में अविद्या का तो नाश और विद्या की वृद्धि किया करें।

अब हमको पहिले यह समझना है कि **अविद्या और विद्या किसको कहते हैं**? ध्यान में रहे कि प्रत्येक शास्त्र में उसके विषय के अनुसार उनके अनेक लक्षणादि वर्णन किए हैं, तदनुसार ही यदि यहां वर्णन किया जाए तो बड़ा ही विस्तार होगा, इसलिए जैसा इस नियम में समुच्चय अर्थ माना गया है वैसा हम सर्वदेशी लक्षण यहां पर प्रकाशित करते हैं–

अविद्याया अविद्यात्वमिदमेव तु लक्षणम्।
यत्प्रमाणासहिष्णुत्वमन्यथा वस्तु सा भवेत्॥
अन्यच्च–
सेयं भ्रान्तिर्निरालम्बा सर्व्वन्यायविरोधिनी।
सहते न विचारं सा तमो यद्वद्दिवाकरम्॥

–श.क.पृ.

तथा स्पष्ट ही स्पष्ट यह जान लेना चाहिए कि **अज्ञान, दुष्टज्ञान, मिथ्याज्ञान, विद्याविरोधिनी और अयथार्थ बुद्धि आदि को अविद्या कहते हैं** और उसका संस्कृत में "**न विद्या। नञ्तत्पुरुष:**" अर्थ होता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि कोई वस्तु वास्तव में हो कुछ और उसको हम और ही कुछ समझे ऐसे उलटे ज्ञान को अविद्या कहते हैं–**जैसे कि जड़ को चेतन और चेतन को जड़, सोने को लोहा और लोहे को सोना, और रात को दिन और दिन को रात इत्यादि।**

इस पर से अब हम जितने कर्म प्रतिक्षण में करते हैं उनकी परीक्षा करके समझ सकते हैं कि वे अविद्या के हैं वा नहीं और जो वे अविद्या के सिद्ध हों तो उनको त्याग सकते हैं क्योंकि अविद्या के न मानने में संसार भर के सब बुद्धिमानों का एक मत है, तथा **इस जगत् में हम अनेक मनुष्य ऐसे-ऐसे भी देखते हैं कि जो अविद्या में परम लिप्त हो रहे हैं और यद्यपि उनका अन्त:करण उनको चिताता है कि यह पदार्थ चेतन नहीं किन्तु जड़ है तथापि वे किसी विशेष कारण से इसको न मानकर उलटा ही व्यवहार करते हैं।** अतएव उनको बुद्धिमान् लोग अज्ञानी कहा करते हैं और वे अन्त को नि:सन्देह दु:ख की यातना भोगेंगे।

जिन मनुष्यों के अच्छे कर्म होते हैं वे किसी विद्वान् के थोड़े ही सत्यसंग से अविद्या का त्याग करके विद्या में रत हो जाते हैं और जिनके बुरे कर्म होते हैं उनके साथ चाहे जितना विद्वान् प्रयत्न क्यों न करे परन्तु ये अविद्या के समुद्र में डुबकियां ही खाया करते हैं, इसके विषय में आत्मबोध नामक ग्रन्थ में यह कहा है–

आविरोधितया कर्म नाऽविद्यां विनिवर्त्तयेत्।
विद्याऽविद्यां निहन्त्येव तेजस्तिमिरसंघवत्॥

उसका नाश विद्या के सिवाय और किसी वस्तु से नहीं हो सकता है, इसलिए **यह अत्यावश्यक है कि हम विद्या को भी जान लें कि वह क्या है? अविद्या के लक्षण को उलटने से ही हम जान सकते हैं कि ज्ञान, यथार्थज्ञान और तत्वसाक्षात्कारादि को विद्या करते हैं।** और वह विद्याशब्द **विद्+क्यप्** से बना है और उसका "**विद्यतेऽसौ**" अर्थ संस्कृत में किया करते हैं कि जिससे भी ज्ञान का अर्थ प्राप्त होता है।

उसके मुख्य दो भेद हैं अर्थात् **अपरा और परा**, और उनका यथार्थ वर्णन वेदों में किया हुआ है। **परा** से जिसको हम साम्प्रतंकाल में अध्यात्मविद्या, ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या, परमार्थविद्यादि कहते हैं, उसका अभिप्राय है। और **इसी का नाम प्रथम नियम से सत्यविद्या करके ग्रहण किया गया है।**

और अपरा उसको कहते हैं कि जिसको सृष्टिविद्या, अध्ययनाध्यापनरूपा और पदार्थ विद्यादि करके कहते हैं। **वैदिक समय में सब लोग इन दोनों विद्याओं का ज्ञान केवल वेद को ही पढ़कर उपार्जन कर लेते थे** क्योंकि... **प्रथम अपरा का ज्ञान यथावत् न होने से परा का यथावत् ज्ञान नहीं होता है। और अपरा का ही परमोत्तम फल परा है।**

किन्तु तदनन्तर उसके अनेक हेतुशास्त्र अनेक ऋषि-मुनि और अर्वाचीन पंडितों ने बना दिए हैं। इसी से

उसके अनेक नामान्तर भी हो गए हैं। तथा **इस अध्ययनाध्यापनरूपा जो अपरा विद्या है उसके हेतुशास्त्रों की गणना अनेक प्रकारों से शास्त्रों में करी है परन्तु आर्यसमाज इनमें से उन ग्रन्थों को मानते हैं कि जिनके नाम स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश की दूसरी कलम में लिखे हुए हैं।**

इसके अध्ययनाध्यापन से हमको पृथिवी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणादि का ठीक-ठीक ज्ञान हो जाता है और फिर जो परा अर्थात् सत्यविद्या इस अपरा का परमोत्तमफल है वह प्राप्त होकर हम विमुक्त होते हैं। याद रखना चाहिए कि ज्यों-ज्यों हमकों अपराविद्या का ज्ञान होता जाता है त्यों-त्यों अविद्या का नाश होता जाता है। जैसे कि आगे कभी हमारा विश्वास था कि सूर्य फिरता है और अब हमको अपरा विद्या के ज्ञान के निश्चित हो गया कि पृथिवी फिरती है अतएव हमारी अविद्या अर्थात् अज्ञान दूर हो गया और अब तक जो हमारे स्वदेशी बन्धु जिन पुस्तकों में सूर्य का फिरना और दूध आदि के समुद्रों का होना लिखा है उन पर पूर्ण विश्वास करके उन अयुक्त बातों को सत्य मानते हैं उनको अविद्या में लिप्त मानना पड़ता है और भला उनकी ऐसे ज्ञान से क्योंकर मुक्ति हो सकेगी!!

इसी तरह हम अपने अनेक वर्तमान विश्वासों की तपास करके अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कर सकते हैं। **जिज्ञासु को उचित है कि जो कुछ वह सत्य करके मान रहा है उस को मानते हुए भी उसका दुराग्रह त्याग करके सत्य का अन्वेषण सदा किया करे और ज्यों-ज्यों उसे भू भ्रभण आदि की तरह सत्य निश्चित होता जाए उसे ग्रहण करता जाए।**

परन्तु जब तक दुराग्रह नहीं त्याग किया जाएगा तब तक उसकी अविद्या का कदापि नाश न हो सकेगा। सब बुद्धिमान् इसमें एकमत हैं कि विद्या से अविद्या के नाश होने पर मुक्ति होती है और ऐसा होना कैसा कठिन है। परन्तु जगत् में जो असंख्यात मजहब प्रचलित हो रहे हैं उनके ग्रन्थों में मुक्ति को एक ऐसी सस्ती वस्तु मानी है कि संसार में वैसी कोई भी नहीं निकलेगी।

कोई कहता है कि अमुक नाम के लेने, अमुक धर्मपुस्तक का कोई शब्द अनायास कान में पड़ जाने, तिलक लगाने, किसी तीर्थ में एक गोता तो क्या परन्तु उसकी सीमा में पग धरते ही, किसी व्रत अथवा उपवास के करने और किसी मन्त्र के जपने आदि से तुरन्त ही मुक्ति मिल जाती है। पुराण और उपपुराणों के पढ़ने से और भी ऐसे अनेक सस्ते उपाय मुक्ति मिलने के प्राप्त हो सकते हैं। **जो इनको कदाचित् सत्य मानें तो फिर अध्ययनाध्यनरूपा जो अपराविद्या उसकी कुछ भी आवश्यकताएं नहीं रहती है और शंकराचार्य्यादि ने भी जो केवल ज्ञान से ही मुक्ति का होना माना है वह भी निष्फल सिद्ध होता है** और फिर इन बड़े-बड़े शास्त्रियों और पंडित की भी कुछ आवश्यकता नहीं रहती है।

और जो हम इस विषय के निर्णय करने में कसरत-राय अर्थात् देश की बहु-सम्मति पर दृष्टि दें तो **इन बड़े-बड़े पंडित और शास्त्रियों की अपेक्षा हजारों गुने अधिक जीवनमुक्त पुरुष साधुओं के वेष में निकलेंगे कि जो गली-गली में भिक्षा मांगते फिरते हैं और उनको हम इन पंडित और शास्त्रियों से भी अधिक पूज्य समझते हैं और वे एक अक्षर भी नहीं जानते हैं। उन सब की राय से तो अपरा विद्या का प्राप्त करना निष्फल ही ठहरेगा।**

क्योंकि.... **वे एक अक्षर भी पढ़े बिना जीवन-मुक्त हो गए हैं और गोस्वामी, गुसाई, महन्त और बाबाजी आदि बनकर अपना ऐश-आराम करते हैं और बड़े-बड़े शास्त्री और पंडित लोग उलटी उनकी अर्चना और शुश्रूषा करके अपना पेट भरते हैं।** अबतक किसी विद्वान् ने कुछ ध्यान नहीं दिया है नहीं तो विदित हो जाता कि जितने मजहब भारतखण्ड में प्रचलित हो रहे हैं उन सबके साथ वेषधारी पुरुष जीवनमुक्त समझे जाते हैं और जो वे एकत्र किए जाएं तो उनकी एक बड़ी पलटन-की-पलटन निकलेगी।

खैर... **कुछ भी हो किन्तु आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुसार मुक्ति ऐसी तुच्छ वस्तु नहीं मानी गई है कि जैसी अन्यमार्गियों ने समझ रक्खी है और वह निश्चय करके अविद्या का पूरा-पूरा नाश होने पर ही यथार्थज्ञान से हो सकती है।**

इस नियम के अभिप्रायनुसार प्रथम हमको अपनी अविद्या का नाश करके विद्या की वृद्धि करनी चाहिए और फिर आप एक नमूना बनकर अन्य बन्धुओं की अविद्या दूर करने को प्रवृत्त होना चाहिए।

इससे कभी कुछ फल नहीं निकलना है कि **हम अन्य को तो उपदेश किया करें और आप अविद्या में फंसे रहें, और केवल समाज में भरती हो जाने और उसकी सहायतादि करने से हमारी अविद्या का दूर हो जाना नहीं कहा जा सकता है।** क्योंकि... **यह दशों नियम प्रथम हमारे आप अमल करने और फिर किसी को उपदेश करने के लिए हैं।** **(शेष पृष्ठ-19 पर)**

विशिष्ट

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्ष का प्रथम दिवस

–मुन्ना कुमार शर्मा

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नव सम्वत्सर का आरम्भ होता है, यह अत्यन्त पवित्र तिथि है।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा समर्ज प्रथमेअहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति।।

सृष्टि सम्वत् तथा कलियुग सम्वत् संसार के प्राचीन सम्वत् हैं। **महाभारत युद्ध के 36 वर्ष के बाद कलियुग का प्रारम्भ हुआ था। उस समय वीर अर्जुन के पौत्र परिक्षित महाराज सम्पूर्ण संसार के सम्राट थे।**

कलियुग के 3044 वर्ष बीत जाने पर ईस्वी सन् से 57 वर्ष पहले भारत में बड़े धार्मिक तथा प्रतापी राजा सम्राट विक्रमादित्य ने सम्पूर्ण राजा के ऋणों को चुकाकर अपना सम्वत् चलाया था, जो विक्रम सम्वत् कहलाता है। वह सम्वत् उत्तर भारत में अधिक प्रचलित है। इस सम्वत् के 135 वर्ष पश्चात् राजा शालिवाहन ने अपना सम्वत् चलाया था। इसे शक सम्वत् कहा जाता है यह दक्षिण भारत में प्रचलित है।

और भी कई ऐतिहासिक सन्दर्भ इस नववर्ष से जुड़े हुए हैं जैसे **मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी का राज्याभिषेक दिवस,** (शक्ति की आराधना) **नवरात्र आरम्भ,** महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा. केशव बलिराम हेडगेवार जी का जन्मदिवस, भगवान झूलेलाल का जन्मदिवस, हिन्दू महासभा की स्थापना (बैसाखी), धर्मराज युधिष्ठिर जी का राजतिलक इत्यादि।

ईसवी सन् का आरम्भ ईसामसीह की मृत्यु से माना जाता है। **वास्तव में अभी तक पाश्चात्य विद्वान एकमत नहीं हैं कि ईसामसीह कब हुए थे तथा उनकी मृत्यु कब हुई थी? अतः यह सन् काल्पनिक धारणा पर आधारित है।** इस सन् का मूल रोमन सन् है, जो ईसवी पूर्व 753 में रोम नगर की स्थापना से आरम्भ हुआ था। **रोमन सन् 304 दिन का माना जाता था।** जो परम अशुद्ध था। **इसमें कुल 10 मास होते थे। धीरे-धीरे इसमें बड़ा अन्तर पड़ने लगा।**

इसे ठीक करने के लिए **46 ईस्वी पूर्व में जुलियस सीजर ने 455 दिन का एक वर्ष मानकर आगे से इसे 3 सौ सवा पैंसठ दिन का बना दिया। साथ ही अपने नाम से ग्यारहवां मास जुलाई जोड़ दिया। बाद में दूसरे राजा ऑगस्टस ने अपने नाम से बाहरवां मास अगस्त जोड़ दिया तथा इसके मासों के नाम निश्चित कर दिए।**

फिर भी इसमें अन्तर पड़ता रहा। ईस्वी सन् 1582 में इसमें 11 दिन का अन्तर हो गया था। **उसी वर्ष पोप ग्रेगरी ने अपनी आज्ञा से 4 अक्टूबर को 15 अक्टूबर बना दिया तथा आगे से 4 और 400 से विभाजित होने वाले वर्षों में 26 दिन की फरवरी मानने की आज्ञा दी। इसीलिए इसे ग्रेगेरियन कैलेण्डर कहा जाता है। धीरे-धीरे धार्मिक भावना से सभी ईसाई राष्ट्रों ने इसे स्वीकार कर लिया और बाद में अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व ने इसे विश्वप्रसिद्ध बना दिया।**

इस वर्ष में दिनों के नाम जनवरी से जून तक रोमन देवताओं के नाम पर जुलाई और अगस्त राजाओं के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक प्राचीन रोमन सन् के मासों की संख्या के आधार पर रखे गए हैं। **यह सन् अवैज्ञानिक आधार पर विकसित हुआ हैं अतः यह 400 वर्षों में शुद्ध होता है। ऋतु इत्यादि से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।**

यदि हम अपनी सम्वत् गणना को देखें तो पता चलेगा कि सम्वत् परिवर्तन के साथ-साथ क्या-क्या परिवर्तन होते हैं **जैसे ऋतु का बदलना, बच्चों की कक्षाओं का बदलना, वित्तीय वर्ष का बदलना, पुरानी फसल का पकना, नई फसल का बोना एवं और भी कई प्रकार के परिवर्तन नव सम्वत् पर दिखाई देते हैं।** जबकि 1 जनवरी से प्रारम्भ वर्ष में ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता।

एक बात और यहां पर उद्धत करना चाहूंगा कि **हम अपने पारिवारिक जीवन के लगभग सारे शुभ कार्य जैसे विवाह संस्कार, शुभ मुहुर्त, जन्म पर कुआं पूजन इत्यादि सभी कार्य सम्वत् अनुसार करते हैं, परन्तु नव वर्ष 1 जनवरी क्यों मनाते हैं? विचार करें।** ●●●

(महात्मा वेदभिक्षुः जी जिनकी सन्तान हैं) 19 अप्रैल बलिदान दिवस पर विशेष

आग्नेय जीवनव्रतीः पं. गयाप्रसाद शुक्ल

–बनारसी सिंह

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का स्वातन्त्र्य आन्दोलन में उल्लेखनीय योगदान रहा है। **इसी जिले के बीघापुर ग्राम में 1887 ई. में जन्मे थे आग्नेय जीवनव्रती पं. गयाप्रसाद शुक्ल।** ग्राम में जन्मे गयाप्रसाद वहीं पले और बढ़े। बाल्यकाल से ही स्वदेश की परतन्त्रता उन्हें शूलवत् चुभने लगी थी। अतएव **किशोर अवस्था में ही बालक गयाप्रसाद ने एक थानेदार को परलोक पठा दिया। ऐसा उग्र पग उठाने के बाद उन्होंने स्वदेश में रहना असम्भव समझा और समुद्र मार्ग में कुली के छद्म वेष धारण कर विदेशों की राह ली।** फ्रांस और जापान में क्रान्तिकारियों से आपका सम्बन्ध स्थापित हो गया था। **देव दयानन्द और आर्यसमाज से आपका सम्पर्क बाल्यकाल में ही हो गया था।**

शारीरिक दृष्टि से श्री शुक्ल जी अपार बलशाली थे तो आत्मबल से भी सुसंपन्न। जहां तक उनके शारीरिक बल का सम्बन्ध है श्री गयाप्रसाद शुक्ल के गुरु आचार्य नरदेव शास्त्री का कथन था कि **'जब वह राघव नाम से ज्वालापुर गुरु कुल महाविद्यालय में थे तो एक-एक पीपा दूध पी जाते थे।'**

शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से सबल श्री गयाप्रसाद शुक्ल जी का **विदेशों में भारत माता के जिन वरेण्य सपूतों से निकट का सम्पर्क आया उनमें स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जैसे क्रान्तिकारियों के शिरोमणि नरपुंगव भी शामिल थे!** स्वातंत्र्य महायज्ञ के लिए समाग्री संग्रह करने का सुकार्य **अर्थात् शस्त्रास्त्र संग्रह कर उन्हें भारत भेजने में भी आपने प्रमुख भूमिका निभाई।** विदेशों से क्रान्तिकार्य में प्रवीणता प्राप्त कर आप 1924 ई. में भारत पधारे तो यहाँ भी क्रान्तिकारियों की गतिविधियों में आप सहयोगी थे और आर्य समाज की गतिविधियों में भी आपका योगदान रहा। 1926 ई. में आपने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया।

विवाह भी किया तो एक क्रान्तिकारी पग ही उठाया अर्थात् उन दिनों में भी आपने जाति-पांति के बन्धन तोड़कर सहधर्मिणी के रूप में राष्ट्र कार्य हेतु समर्पित **"विद्यावती शारदा" को अपनी जीवन संगिनी बनाया।**

विवाह की संध्या को ही गिरफ्तारी भी आपके क्रान्तिकारी जीवन का एक प्रेरक पृष्ठ है। पति-पत्नी दोनों ही राष्ट्रकार्य और स्वदेश तथा स्वजाति के लिए सर्वस्व समर्पण हेतु संकल्प बद्ध थे। अतएव क्रान्तियज्ञ में श्री गयाप्रसाद का समिधा समर्पण जारी रहा। ***दमन और अत्याचार के प्रबल प्रभंजन में भी आपका शौर्य सुमेरु अविचल ही रहा। 1929 ई. में भी एक क्रान्तिकारी षड्यन्त्र में लिप्त होने के सन्देह में आप लगातार 36 घंटे तक पुलिस के द्वारा उत्पीड़ित हुए।***

अनेक यातनाओं से शरीर विकारग्रस्त हो गया। जिस हृष्ट-पुष्ट शरीर को देखकर बड़े-बड़े मल्ल भी चकित हो जाते थे, जिसे देखकर देशभक्त हृदय पुलकित हो उठते थे, वही नरसिंह अब भीतर से टूटने लगा था। शरीर घुलने लगा था **किन्तु वे स्वातन्त्र्य आराधना में रत ही रहे।** अन्ततः 19 अप्रैल, 1932 को आपके महाप्रयाण की बेला आई और बीघापुर (उत्तर प्रदेश) में जन्मा यह नर केहरी डलहौजी में भौतिक शरीर को त्याग कर अनन्त में विलीन हो गया।

पं. गयाप्रसाद शुक्ल और माता विद्यावती शारदा जी का जीवन दूरदर्शन दिल्ली पर भी "कहां गये वो लोग" धारावाहिक में नवम्बर 1990 में निर्माता-निर्देशक श्री धीरज कुमार जी द्वारा प्रस्तुत किया गया था। (शहीद भगतसिंह तीन महीने तक लालसिंह के छद्म नाम से विद्यावती जी शारदा के घर टोपरी में रहे थे।)

दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान, उन्हीं के सपनों का मूर्त रूप एवं प्रतिदान है। इन्हीं माता-पिता की सन्तान थे हमारे चरितनायक पं. भारतेन्द्रनाथ जी। जो कालान्तर में महात्मा वेदभिक्षुः कहलाए.... ❖❖❖

(पृष्ठ-17 का शेष)

देखो सत्य वार्ता में सब विद्वानों का एक मत होता है। जैसे इस नियम में अविद्या को बुरी और विद्या को भली वर्णन करी है। वैसे ही अंग्रेजी भाषा के महाकवि शैक्सपीयर ने भी एक स्थान पर कहा है–अर्थात् अविद्या ईश्वर का शाप है और विद्या वह पक्ष है कि जिससे उड़कर हम स्वर्ग को जाते हैं।

इसमें कुछ सन्देह नहीं है। ऐसे ही **उस महर्षि को भी धन्य है कि जिसने हमारे ऊपर परम अनुग्रह करके ऐसा सच्चा उपदेश किया है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि इस नियम के माननेवालों पर ऐसी दया करें कि वह नित्य अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करके अन्त को मोक्ष के भागी हों।**

इत्योउम्। ❑❑❑

1 अप्रैल जिनकी जयन्ती है

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक: केशव बलिराम हेडगेवार

केशवराव बलिराम हेडगेवार (जन्म:1 अप्रैल 1889, मृत्यु: 21 जून 1940) **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक एवं प्रकाण्ड क्रान्तिकारी थे।** उनका जन्म हिन्दू वर्ष प्रतिपदा के दिन हुआ था। **घर से कलकत्ता गए तो थे डाक्टरी पढ़ने परन्तु वापस आए उग्र क्रान्तिकारी बनकर। कलकत्ते में श्याम सुन्दर चक्रवर्ती के यहां रहते हुए बंगाल की गुप्त क्रान्तिकारी संस्था अनुशीलन समिति के सक्रिय सदस्य बन गए।**

सन् 1916 के कांग्रेस अधिवेशन में लखनऊ गए। वहां संयुक्त प्रान्त (वर्तमान यू.पी.) की युवा टोली के सम्पर्क में आए। बाद में **कांग्रेस से मोह भंग हुआ और नागपुर में संघ की स्थापना कर डाली।** मृत्युपर्यन्त सन् 1940 तक वे इस संगठन के सर्वेसर्वा रहे।

संक्षिप्त जीवन परिचय

डॉ. हेडगेवार का जन्म 1 अप्रैल, 1889 को महाराष्ट्र के नागपुर जिले में पण्डित बलिराम पन्त हेडगेवार के घर हुआ था। इनकी माता का नाम रेवतीबाई था। **माता-पिता ने पुत्र का नाम केशव रखा।** उनके दो बड़े भाई थे, जिनका नाम महादेव और सीताराम था। पिता वेद-शास्त्र के विद्वान थे एवं वैदिक कर्मकाण्ड (पण्डिताई) से परिवार का भरण-पोषण चलाते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी व आर्यसमाज में निष्ठा होने के कारण उन्होंने अग्निहोत्र का व्रत लिया हुआ था। परिवार में नित्य वैदिक रीति से सन्ध्या-हवन होता था।

बड़े भाई महादेव भी शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता तो थे ही मल्ल-युद्ध की कला में भी बहुत माहिर थे। वे रोज अखाड़े में जाकर स्वयं तो व्यायाम करते ही थे गली-मुहल्ले के बच्चों को एकत्र करके उन्हें भी कुश्ती के दांव-पेंच सिखलाते थे। **महादेव भारतीय संस्कृति और विचारों का बड़ी सख्ती से पालन करते थे। केशव के मानस-पटल पर बड़े भाई महादेव के विचारों का गहरा प्रभाव था।**

बाल्यकाल से ही क्रान्तिकारी विचारों के भी थे। जिसका परिणाम यह हुआ था कि **वे डॉक्टरी पढ़ने के लिए कलकत्ता गए और कलकत्ता मेडिकल कॉलेज से प्रथम श्रेणी में डॉक्टरी की परीक्षा भी उत्तीर्ण की, परन्तु घर वालों की इच्छा के विरुद्ध देश-सेवा के लिए नौकरी का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।** डॉक्टरी करते-करते ही उनकी तीव्र नेतृत्व प्रतिभा को भांप कर **उन्हें हिन्दू महासभा बंगाल प्रदेश का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।**

क्रान्ति का बीजारोपण

कलकत्ते में पढ़ाई करते हुए उनका मेल-मिलाप बंगाल के क्रान्तिकारियों से हुआ। **केशव चूंकि कलकता में अपने बड़े भाई महादेव के मित्र श्यामसुन्दर चक्रवर्ती, के घर रहते थे अत: वहां के स्थानीय लोग उन्हें केशव चक्रवर्ती के नाम से ही जानते व सम्बोधित करते थे। उनकी असाधारण योग्यता को मद्देनजर रखते हुए उन्हें अनुशीलन समिति का सदस्य बनाया गया। उसके बाद उनकी कार्यकुशलता देखकर उन्हें समिति का अन्तरंग सदस्य भी बना लिया गया।** इस प्रकार क्रान्तिकारियों की समस्त गतिविधियों का ज्ञान और संगठन-तन्त्र कलकत्ते से सीखकर वे नागपुर लौटे।

कांग्रेस और हिन्दू महासभा में भागीदारी

लोकमान्य तिलक की मृत्यु के बाद केशव कांग्रेस और हिन्दू महासभा दोनों में काम करते रहे। **गांधीजी के अहिंसक असहयोग आन्दोलन और सविनय अवज्ञा आन्दोलनों में भाग लिया,** परन्तु खिलाफत आन्दोलन की जमकर आलोचना की। **ये गिरफ्तार भी हुए और सन् 1922 में जेल से छूटे। नागपुर में 1923 के दंगों के दौरान इन्होंने डॉक्टर मुंजे के साथ सक्रिय सहयोग किया। अगले साल सावरकर के पत्र हिन्दुत्व का संस्करण निकला जिसमें इनका योगदान भी था।** इसकी मूल पांडुलिपि उन्हीं के पास थी।

व्यक्ति व कृतित्व

1921 ई. में भारत के राजनीतिक पटल पर गांधी के आने के पश्चात् ही मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने अपना सिर उठाना प्रारम्भ कर दिया। खिलाफत आन्दोलन को गांधी जी का सहयोग प्राप्त था। तत्पश्चात **नागपुर व अन्य कई स्थानों पर हिन्दू, मुस्लिम दंगे प्रारम्भ हो गए तथा नागपुर के कुछ हिन्दू नेताओं ने समझ लिया कि हिन्दू एकता ही उनकी सुरक्षा कर सकती है।**

ऐसी स्थिति में कई हिन्दू नेता केरल की स्थिति जानने एवं वहां के लुटे पिटे हिन्दुओं की सहायता के लिए मालाबार-केरल गए, इनमें नागपुर के प्रमुख हिन्दू महासभाई नेता **डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे, डॉ. हेडगेवार, आर्यसमाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि थे।** उसके थोड़े समय बाद नागपुर तथा अन्य कई शहरों में भी हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए। ऐसी घटनाओं से विचलित होकर नागपुर में डॉ. मुंजे ने कुछ प्रसिद्ध हिन्दु नेताओं की बैठक बुलाई, जिनमें डॉ. हेडगेवार एवं डॉ. परांजपे भी थे। इस **बैठक में उन्होंने एक हिन्दू-मिलीशिया बनाने का निर्णय लिया। उद्देश्य था हिन्दुओं की रक्षा करना एवं हिन्दुस्तान को एक सशक्त हिन्दू राष्ट्र बनाना। इस मिलीशिया को खड़े करने की जिम्मेवारी धर्मवीर डॉ. मुंजे ने डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार को दी।**

डॉ. साहब ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने व्यक्ति की क्षमताओं को उभारने के लिए नए-नए तौर-तरीके विकसित किए। हालांकि **प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की असफल क्रान्ति और तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने एक अर्ध-सैनिक संगठन की नींव रखी।** इस प्रकार 28/9/1925 (विजय- दशमी दिवस) को अपने पिता-तुल्य गुरु डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे, उनके शिष्य डॉ. हेडगेवार, श्री परांजपे और बापू साहिब सोनी ने एक हिन्दू युवक क्लब की नींव डाली, **जिसका नाम कालान्तर में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ दिया गया।**

यहां पर उल्लेखनीय है कि इस मिलीशिया का आधार बना वीर सारवकर का राष्ट्र दर्शन ग्रन्थ (**हिन्दुत्व**) जिसमें हिन्दू की परिभाषा यह की गई थी-

आ सिन्धु- सिंन्धु पर्यन्ता, यस्य भारत भूमिका।
पितृभू-पुण्यभू भुश्चेव सा वै हिन्दू रीति स्मृता।

इस श्लोक के अनुसार 'भारत के वह सभी लोग हिन्दू हैं जो इस देश को पितृभूमि-पुण्यभूमि मानते हैं।' इसमें **सनातनी, आर्यसमाजी, जैन, बौद्ध, सिख आदि पन्थों एवं धर्म विचार को मानने वाले व उनका आचार करने वाले समस्त जन को हिन्दू के व्यापक दायरे में रखा गया था।** मुसलमान व ईसाई इस परिभाषा में नहीं आते थे अत: उनको इस मिलीशिया में ना लेने का निर्णय लिया गया और केवल हिन्दुओं को ही लिया जाना तय हुआ, *मुख्य मन्त्र था* **'अस्पष्टता निवारण एवं हिन्दुओं का सैनिकी करण'।**

ऐसी मिलीशिया को खड़ा करने के लिए स्वंयसेवकों की भर्ती की जाने लगी सुबह व शाम एक-एक घंटे की शाखाएं लगाई जाने लगी। इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षक, मुख्य शिक्षक, घटनायक आदि पदों का सृजन किया गया। **इन शाखाओं में व्यायाम, शारीरिक श्रम, हिन्दू राष्ट्रवाद की शिक्षा के साथ-साथ वरिष्ठ स्वंयसेवकों को सैनिक शिक्षा भी दी जानी तय हुई।**

बाद में **यदा कदा रात के समय स्वंयसेवकों की गोष्ठीयां भी होती थी, जिनमें महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा बैरागी, वीर सावरकर, मंगल पांडे, तांत्या ठोपे आदि की जीवनियां भी पढ़ी जाती थीं।** वीर सावरकर द्वारा रचित पुस्तक (**हिन्दुत्व**) के अंश भी पढ़ कर सुनाए जाते थे।

'संघ के जन्मकाल के समय की परिस्थिति बड़ी विचित्र सी थी, हिन्दुओं का हिन्दुस्तान कहना उस समय निरा पागलपन समझा जाता था और किसी संगठन को हिन्दू संगठन कहना देश द्रोह तक घोषित कर दिया जाता था।'

डॉ. हेडगेवार ने जिस दुखद स्थिति को व्यक्त किया, उसमें नवसर्जित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू महासभा के नेतृत्व के प्रयास से हिन्दू युवाओं में साहस के साथ यह नारा गूंजने लगा **'हिन्दुस्तान हिन्दुओं का, नहीं किसी के बाप का'** इस कथन की विवेचना डॉ. हेडगेवार ने इन शब्दों में की-

'कई सज्जन यह कहते हुए भी नहीं हिचकिचाते कि हिन्दुस्तान केवल हिन्दुओं का ही कैसे? यह तो उन सभी लोगों का है जो यहां बसते हैं। खेद है? कि इस प्रकार का कथन/आक्षेप करने वाले सज्जनों को राष्ट्र शब्द का अर्थ ही ज्ञात नहीं। केवल भूमि के किसी टुकड़े को राष्ट्र नहीं कहते। एक विचार-एक आचार-एक सभ्यता एवं परम्परा में जो लोग पुरातन काल से रहते चले आए हैं उन्हीं लोगों की संस्कृति से राष्ट्र बनता है। इस देश को हमारे ही कारण हिन्दुस्तान नाम दिया गया है। दूसरे लोग यदि समोपचार से इस देश में बसना चाहते हैं तो अवश्य बस सकते हैं। हमने उन्हें न कभी मना किया है न करेंगे। किन्तु जो हमारे घर अतिथि बन कर आते हैं और हमारे ही गले पर छुरी फेरने पर उतारू हो जाते हैं उनके लिए यहां रत्ती भर भी स्थान नहीं मिलेगा। संघ की इस विचारधारा को पहले आप ठीक-ठाक समझ लीजिए।' (राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ पृष्ठ 14)

एक अन्य अवसर पर डॉ. हेडगेवार ने कहा था संघ तो केवल, '**हिन्दुस्तान हिन्दुओं का**' इस ध्येय वाक्य को सच्चा कर दिखाना चाहता है।' दूसरे देशों के समान, '**यह हिन्दुओं का होने के कारण**' इस देश में हिन्दू जो कहेंगे वही पूर्व दिशा होगी (**अर्थात् वही सही माना जाएगा**)। यही एक सही बात है जो संघ जानता है, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के कार्यकर्त्ताओं के लिए किसी भी अन्य पचड़े में पड़ने की आवश्यकता नहीं है।

जब वीर सावरकर रत्नागिरी में दृष्टि बन्द (नजरबन्द) थे, तब डॉ. हेडगेवार वहां उनसे मिलने गए। तब तक वह वीर सावरकर रचित पुस्तक भी पढ़ चुके थे। डॉ. हेडगेवार उस पुस्तक के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और उसकी सराहना करते हुए बोले कि '**वीर सावरकर एक आदर्श व्यक्ति हैं।**'

दोनों (**सावरकर एवं हेडगेवार**) का विश्वास था कि **जब तक हिन्दू अंध विश्वास, पुरानी रुढ़िवादी सोच, धार्मिक आडम्बरों को नहीं छोड़ेंगे तब तक हिन्दू-जातिवाद, छूत-अछूत, शहरी-बनवासी और क्षेत्रवाद इत्यादि में बंटा रहेगा और जब तक वह संगठित एवं एक जुट नहीं होगा, तब तक वह संसार में अपना उचित स्थान नहीं ले सकेगा।**

इसी परिपेक्ष्य में हिन्दू महासभा ने भी उस समय एक प्रस्ताव पास कर अपने कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों को निर्देश दिया कि वे अपने बच्चों को संघ की शाखा में भेजें एवं संघ के विस्तार में सहयोग दें। **आर.एस.एस की विस्तार योजना के अनुसार उसके नागपुर कार्यालय में बड़ी संख्या में युवक दो जोड़ी धोती एवं कुर्ता ले कर संघ शाखाओं की स्थापना हेतु दिल्ली, लाहौर, पेशावर, क्वेटा, मद्रास, गुवाहटी आदि विभिन्न शहरों में भेजे गए।**

पहली शाखा हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग नई दिल्ली के प्रांगण में हिन्दू सभाई नेता प्रोफेसर रामसिंह की देखरेख में श्री बसंतराव ओक द्वारा संचालित की गई। लाहौर में शाखा हिन्दू महासभा के प्रसिद्ध नेता डॉ. गोकुलचंद नारंग की कोठी में लगाई जाती थी, जिसका संचालन श्री मुले जी एवं धर्मवीर जी (जो महान हिन्दू सभाई नेता देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी के दामाद थे) द्वारा किया जाता था। पेशावर में आर.एस.एस. की शाखा सदर बाजार से सटी गली के अन्दर हिन्दू महासभा कार्यालय में लगाई जाती थी जिसकी देखरेख श्री मेहरचंद जी खन्ना-तत्कालिक सचिव हिन्दू महासभा करते थे।

इस तरह डॉ. हेडगेवार के कुशल निर्देशन, हिन्दू महासभा के सहयोग एवं नागपुर से भेजे गए प्रचारकों के अथक परिश्रम एवं तपस्या के कारण संघ का विस्तार होता गया और **1946 के आते-आते संघ के युवा स्वंयसेवकों की संख्या करीब सात लाख हो गई।** इन प्रचारकों की लगन सराहनीय थी। **इनके पास महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, बन्दा बैरागी की जीवनी की छोटी-छोटी पुस्तकें एवं वीर सावरकर द्वारा रचित पुस्तक हिन्दुत्व रहती थी।** हैदराबाद (दक्षिण) के मुस्लिम शासक निजाम ने वहां के हिन्दुओं का जीना दूभर कर रखा था। यहां तक कि कोई हिन्दू मन्दिर नहीं बना सकता था और यज्ञ आदि करने पर भी प्रतिबन्ध था। **1938 में आर्यसमाज ने निजाम हैदराबाद के जिहादी आदेशों के विरुद्ध आन्दोलन करने की ठानी। गांधीजी ने आर्यसमाज को आन्दोलन ना करने की सलाह दी।**

वीर सावरकर ने कहा कि अगर आर्यसमाज आन्दोलन छोड़ता है तो हिन्दू महासभा उसे पूरा-पूरा समर्थन देगी। आन्दोलन चला, **लगभग 25,000 सत्याग्रही देश के विभिन्न भागों से आए।** निजाम की पुलिस और वहां के रजाकरों द्वारा उन सत्याग्रहियों की जेल में बेदर्दी से पिटाई की जाती थी। **बीसियों सत्याग्रहियों की रजाकारों की निर्मम पिटाई से मृत्यु तक हो गई।**

इन सत्याग्रहियों में लगभग 12,000 हिन्दू महासभाई थे। वीर सावरकर ने स्वयं पूना जा कर कई जत्थे हैदराबाद भिजवाए। **पूना से सबसे बड़ा जत्था हुतात्मा नाथूराम गोडसे के नेतृत्व में हैदराबाद भिजवाया, इनमें हिन्दू महासभा कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त संघ के भी गई स्वयं सेवक थे। इस तरह 1940 तक-जब तक डॉ. हेडगेवार जीवित थे, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को हिन्दू महासभा का युवा संगठन ही माना जाता था।**......

धर्मवीर डॉ. मुंजे और वीर सावरकर के सान्निध्य में डॉक्टर हेडगेवार ने भारत की गुलामी के कारणों को बड़ी बारीकी से पहचाना और इसके स्थाई समाधान हेतु संघ कार्य प्रारम्भ किया। इन्होंने सदैव यही बताने का प्रयास किया कि नई चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें नए तरीकों से काम करना पड़ेगा और स्वयं को बदलना होगा, अब ये पुराने तरीके काम नहीं आएंगे। **डॉ. साहब 1925 से 1940 तक, यानि मृत्यु पर्यन्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक रहे। 21 जून, 1940 को इनका नागपुर में निधन हुआ।** इनकी समाधि रेशम बाग नागपुर में स्थित है, जहां इनका अत्येष्टि संस्कार हुआ था। ❖❖❖

स्वास्थ्य चर्चा

गाय एक अद्भुत रसायनशाला

—श्री रोशनलाल जी पाल

जननी जनकर दूध पिलाती, केवल साल छमाही भर।
पर गोमाता सुधा पिलाती, रक्षा करती जीवन भर॥

अभी कुछ समय पहले एक पुस्तक अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित हुई थी, The Cow is a wonderful laboratary (**गाय एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है**)। इस पुस्तक में भी सिद्ध किया गया है कि प्रकृति ने समस्त जीव-जन्तुओं और सभी दुग्धारी पशुओं में से **केवल गाय ही एक ऐसा पशु है, जिसे लगभग 180 फुट (2160 इंच) लम्बी आंत दी है।** अन्य पशुओं या जीवधारियों में यह विशेषता नहीं है। यही कारण है कि गाय जो कुछ भी खाती या पीती है, वह इस लम्बी आंत से होकर अन्तिम छोर तक जाता है।

जैसे दूध से मक्खन निकालने वाली मशीन में जितनी अधिक गरारियां लगाई जाती हैं, उससे उतना ही अधिक एवं शुद्ध फैट का मक्खन निकलता है, वैसे ही प्रकृति ने भी गाय की शारीरिक संरचना में सबसे लम्बी आंत दी है, जिससे उसका दूध अन्य दूध देने वाले पशुओं से अधिक श्रेष्ठ होता है। संक्षेप में गोवंश की विशेषताएं इस प्रकार हैं—

गोवत्स—गाय प्रजनन (बच्चा जनने) के बाद 18 घण्टे तक उसके साथ रहे और उसे चाटती रहे तो वह उस बच्चे (बछड़ा-बछड़े) को जिन्दगी भर भूलती नहीं है। इसी प्रकार **गोवत्स भी सैकड़ों गायों के बीच से अपनी माता को ढूंढकर दुग्धपान करता है। जबकि भैंस का बच्चा अपनी मां को ढूंढ नहीं पाता।**

खीस—प्रजनन के तुरन्त बाद गाय के स्तनों से जो दूध निकलता है, उसे खीस, चीका, कीला या पेवस कहते हैं। देखने में यह दूध के समान ही होता है, परन्तु संरचना तथा गुणों में बिलकुल भिन्न होता है। सामान्य रूप से गरम करने पर तुरन्त फट जाता है। इसीलिए इसे मिल्क केक बनाने की प्रक्रिया द्वारा पकाकर उपयोग में लेते हैं। **प्रजनन के बाद 15 दिनों तक इसमें दूध की अपेक्षा प्रोटीन तथा खनिज तत्वों की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा लेक्टोज, वसा एवं पानी की मात्रा कम होती है।**

खीस में दूध की अपेक्षा केसीन और एलब्यूमिन की मात्रा दोगुनी, ग्लोव्यूलिन की मात्रा 12 से 15 गुनी तथा एल्यूमिनियम की मात्रा 6 गुनी अधिक होती है। **सामान्य दूध की अपेक्षा खीस में खनिजतत्व भी अधिक होते हैं।**

सींग—गाय की सींगों का आकार सामान्यत: पिरामिड जैसा होता है। वह एक शक्तिशाली एन्टीना के रूप में हैं। **सींगों की मदद से गाय आकाशीय सभी ऊर्जाओं को शरीर में संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गोमूत्र, दूध और गोबर के द्वारा मिलती है।**

आकाशीय ऊर्जा (**कोस्मिक एनर्जी**) को संग्रह करने का कार्य गाय के सींग करते हैं। इसके अलावा **गाय की पीठ पर ककुद (ढिल्ला) होता है जो कि सूर्य की ऊर्जा और कई आकाशीय तत्वों को शरीर में ग्रहण कर गोमूत्र, दूध तथा गोबर द्वारा हमें मिलता है।**

गाय का दूध—यह पौष्टिक तत्त्वों का भण्डार है। इसमें जल 87, वसा 4, प्रोटीन 4, शर्करा तथा अन्य तत्व 1 से 2 प्रतिशत तक पाए जाते हैं। गाय के दूध में 8 प्रकार के प्रोटीन्स, 11 प्रकार के विटामिन्स, 12 प्रकार के पिगमेंट्स तथा तीन प्रकार की दुग्ध गैसें पायी जाती हैं। **गाय के दूध में केरोटीन नामक पदार्थ भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। भैंस का दूध गरम करने पर उसके सर्वाधिक पोषक तत्व मर जाते हैं, जबकि गाय के दूध को गरम करने पर भी पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते हैं।**

गाय का मूत्र—गोमूत्र को आयुर्वेद में बड़ा ही उपयोगी बताया गया है। **कुशल वैद्य अपनी आयुर्वेदिक दवाएं (गोलियां) बनाने में जल के स्थान पर गोमूत्र का ही प्रयोग करते हैं। गोमूत्र में कार्बोलिक एसिड होता है, जो कीटाणुनाशक है और शुद्धता एवं स्वच्छता बढ़ाता है, इसी कारण प्राचीन ग्रन्थों में इसे सबसे अधिक पवित्र कहा गया है।** गंगाजल के समान इसे अधिक समय तक रखे जाने पर भी खराब नहीं होता। इसके अलावा गोमूत्र एवं गोदुग्ध में भी स्वर्णक्षार मौजूद रहता है, जो अति रसायण है।

अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों तथा आधुनिक दृष्टि से गोमूत्र में नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटैशियम, सोडियम और लेक्टोज होता है। इसके अलावा **इसमें सल्फर, अमोनिया, लवणसहित विटामिन ए, बी, सी, डी, ई एन्जाइम आदि तत्व भी हैं।** ये तत्व ही विभिन्न रोगों में अनुपान भेद एवं मात्रा भेद के साथ प्रयुक्त होकर व्यक्तियों को बचाते हैं।

(शेष पृष्ठ-33 पर)

12 से 15 मार्च 2015 तक आयोजित

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती एवं स्वामी दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव संपन्न

राजधानी दिल्ली में स्वामी दयानन्द संस्थान एवं जन-ज्ञान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षुः जी (पं. भारतेन्द्रनाथ) की जयन्ती एवं स्वामी दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव, महात्मा जी की अराध्यस्थली वेद मन्दिर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन 15 मार्च को एक वृहद आयोजन के साथ हुआ। जिसमें दिल्ली एवं अन्य शहरों से आए हजारों लोगों ने भाग लिया। *कार्यक्रम की चित्रमय झांकी अगले पृष्ठों पर हैं...*

कार्यक्रम का प्रारम्भ दिव्या आर्य एवं आचार्य ऋषिदेव द्वारा गाए गए 'वैदिक राष्ट्रगीत' से हुआ। तदुपरान्त कार्यक्रम की संयोजक एवं मंच का संचालन कर रहीं दिव्या ने समारोह का उद्घाटन महात्मा वेदभिक्षुः जी के दामाद एवं नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. कैलाश सत्यार्थी को आमन्त्रित कर, गाने की इन पंक्तियों द्वारा किया– *"ऐसा हीरो दिया मेरे भारत ने, पिता भारत ने, श्वसुर भारत ने,*
भगवान करे ये और बढ़ें, बढ़ते ही रहें बस बढ़ते रहें........।"

सभी ने उत्साहपूर्वक करतल ध्वनियों ने भारत मां का मस्तक विश्वपटल पर दमकाने वाले इस सपूत का स्वागत किया। कैलाश सत्यार्थी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि "यदि मेरी सास-मां पण्डिता राकेशरानी ना होतीं तो मुझे उनकी ऐसी संस्कारवान पुत्री सुमेधा सहधमिर्णी के रूप में कैसे मिलतीं? जिनकी प्रेरणा और सतत सक्रियता से आज मैं इस मुकाम पर पहुंचा!! और दिव्या से तो मेरा जीजा-साली का नहीं अपितु पिता-पुत्री जैसा सम्बन्ध है। और..इसे मेरा आर्शीवाद है कि ये पिताजी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करे।"

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री भगत सिंह कोशियारी ने कहा कि "सामाजिक कार्य संन्यास लेकर ही नहीं किए जाते अपितु गृहस्थ जीवन भी कैसा प्रेरणादायी होता है, इसका ज्वलन्त उदाहरण हैं–महात्मा वेदभिक्षुः! जिन्होंने घर-फूंक तमाशा देखते हुए भी, वेद की ऋचाएं समस्त विश्व में गुञ्जा दीं। "

कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री रिखब चन्द जैन ने ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री नन्द प्रसाद थरेजा जी का शाल उढ़ाकर सम्मान किया और कहा कि "जांति-पाति से ऊपर उठकर हमें सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को एक ही ध्वज तले लाना होगा, वोट देने के अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर सचेत होना होगा।"

भारतीय जनता पार्टी के नेता प्रतिपक्ष, दिल्ली श्री बिजेन्द्र गुप्ता (विधायक) ने कहा कि "आज वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा वेदभिक्षुः जी के विचारों का प्रचार-प्रसार नितान्त आवश्यक है। माता पण्डिता राकेशरानी के हाथ हमें मजबूत करने होगें और दिव्या का उत्साहवर्धन करना होगा।

दिल्ली की पूर्व प्रथम महिला महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या जी ने कहा कि "जीवन की पहली प्रेरणा ही मुझे भाई भारत (भारतेन्द्र नाथ जी) से ही मिली।".... "वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिंह ने बताया कि संस्थान अब तक लगभग साढ़े चार लाख घरों में चारों वेद का हिन्दी भाष्य पहुंचा चुका है।"

कार्यक्रम के अध्यक्ष डा0 श्याम सिंह शशि (पद्मश्री) ने भी दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान द्वारा किए जा रहे राष्ट्रीय चेतना अभियान कि भूरि-भूरि प्रशंसा की।

राष्ट्रीय प्रोफेसर एवं एम्स के भूतपूर्व डीन एवं प्रो0 नरेन्द्र कुमार मेहरा ने भी अपनी श्रद्धाञ्जलि दी और कहा कि बिटिया दिव्या के साथ, दधीचि देहदान समिति द्वारा बोन मैरो के प्रोजेक्ट पर जुड़ने का मौका मिला और भविष्य में रजिस्ट्री बैंक बनाने इत्यादि के विषयों पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर सर्वश्री-सत्यानन्द आर्य, डा0 ज्ञानचंद्र, डा0 गोबिन्द वल्लभ जोशी, जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश), संजय बंसल, गोपाल झा, गणेश गोयल, अरविंद मित्तल, सन्दीप आहूजा (अध्यक्ष अखण्ड हिन्दुस्थान मोर्चा) एवं अनिल ठाकुर इत्यादि अन्य गणमान्य जन भी उपस्थित थे।

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती एवं स्वामी दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव

पितृतुल्य जीजाजी- डॉ. कैलाश सत्यार्थी का स्वागत करतीं दिव्या आर्य

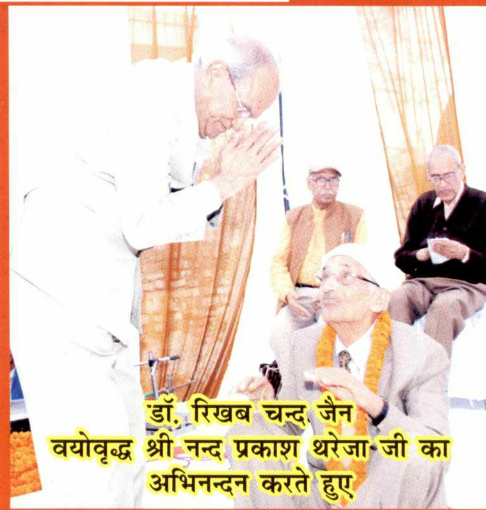

डॉ. रिखब चन्द जैन वयोवृद्ध श्री नन्द प्रकाश थरेजा जी का अभिनन्दन करते हुए

श्रीमती शकुन्तला आर्या एवं माता पण्डिता राकेशरानी

श्री भगत सिंह कोशियारी (उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमन्त्री)

श्री बिजेन्द्र गुप्ता (विधायक) सम्बोधित करते हुए साथ हैं श्री नन्द प्रसाद थरेजा संजय बंसल एवं राष्ट्रीय प्रो० नरेन्द्र कुमार मेहरा

डॉ. रिखब चन्द जैन

श्री राज खुराना एवं श्री गोपाल झा

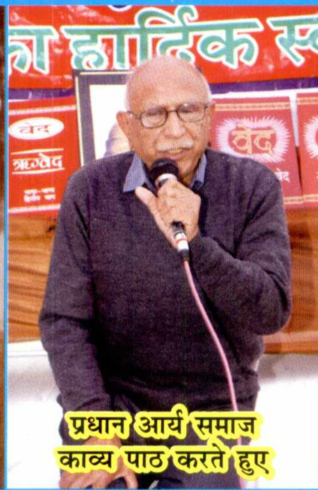
प्रधान आर्य समाज
काव्य पाठ करते हुए

श्री जितेन्द्र भाटि

परिवारजनों के साथ मां पण्डिता राकेशरानी

एम्स के भूतपूर्व डीन प्रो० नरेन्द्र

श्री सत्यानन्द आर्य, श्री गणेश

या

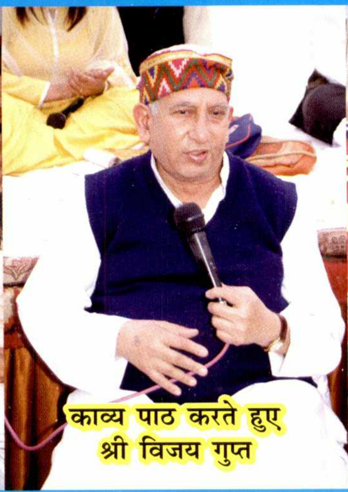

काव्य पाठ करते हुए
श्री विजय गुप्त

डॉ. गोबिन्द वल्लभ जोशी

पुत्री सुमेधा कैलाश के साथ
मां पण्डिता राकेशरानी

कुमार मेहरा के साथ दिव्या आर्य

डॉ. ज्ञानचन्द्र एवं डॉ. श्याम सिंह शशि-
वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसी सिंह का अभिनन्दन करते हुए

गोयल एवं अपार जन समूह

विविध अवसरों की अन्य चित्रमय झलकियाँ

नार्वे के राजदूत के साथ

महाशय धर्मपाल जी मां पण्डिता राकेशरानी एवं दिव्या आर्य वेद मन्दिर में

मदर इण्टरनेशनल स्कूल के वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि दिव्या आर्य का स्वागत करते प्रबन्ध निदेशक श्री त्यागी जी

मां पण्डिता राकेशरानी के साथ दामाद कृष्णकान्त

डॉ. हर्ष वर्धन
DR. HARSH VARDHAN

सत्यमेव जयते

मंत्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER
SCIENCE & TECHNOLOGY AND EARTH SCIENCES
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

21 मार्च 2015

आदरणीया श्रीमती राकेश रानी जी एवं प्रिय सुश्री दिव्या जी,

महात्मा वेदभिक्षुः जयंती एवं दयानन्द संस्थान के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने का आपका स्नेहपूर्ण निमंत्रण प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

वेद हमारे प्राण हैं। ये मानव जीवन के न केवल उद्देश्य का अपितु सृष्टि और ईश्वर का समग्र भान कराते हैं। ये वेद ही थे जिन्हें आत्मसात् कर भारत इतना महान बना और यहां की संस्कृति और सात्विक परंपरायें इतनी समृद्ध हुई। यहां के आध्यात्म और दर्शन के मूल में वेद ही हैं।

वेदों के निरंतर प्रसार तथा जन-जन तक पहुंचाने में महात्मा वेदभिक्षुः जी ने अपने संपूर्ण जीवन को अर्पित कर दिया। ऐसी महान विभूति किसी भी समाज को बिरले ही मिलती है। उनका त्यागमय जीवन एवं समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। महान कार्य के लिए महात्मा वेदभिक्षुः जी को मैं नमन करता हूं।

महात्मा वेदभिक्षुः जी द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को पूरा करने हेतु उसी पथ पर आदरणीया श्रीमती राकेश रानी जी सतत चलते हुए लोगों को इससे सम्बद्ध कर रही हैं। यह एक त्यागमय कार्य है जिसके निष्पादन का दायित्व ईश्वर बिरले ही लोगों को प्रदान करते हैं। इस भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए आप दोनों को हृदय की गहराइयों से बधाई देता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप दोनों को अपार साहस एवं शक्ति प्रदान करें ताकि यह कार्य और गतिमान होकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहे।

इस अवसर पर उपस्थित होने की मेरी हार्दिक इच्छा थी परन्तु अपरिहार्य कारणों से चाहते हुए भी मेरे लिए संभव न हो सका, जिसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

धन्यवाद।

आपका अपना,

(डॉ. हर्ष वर्धन)

विशेष संस्मरण

श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती (चैत्र शुक्ल पंचमी)

– सत्यानन्द आर्य, नई दिल्ली

महाभारत काल तक वैदिक धर्म के प्रति लोगों की आस्तिकता थी। तदनन्तर अद्य: पतन प्रारम्भ होने लगा–वैमनस्य व स्वार्थ का बोलबाला होने लगा। वैदिक मान्यताएं समाप्त होने लगीं व वेद लुप्त हो गए। पाखण्ड, रुढ़ियाँ, अन्धविश्वास, मद्यपान, रासलीला, विभिन्न प्रकार की गलत मान्यताओं में लोग जकड़ने लगे। ऐसे समय में अनीश्वरवाद और नास्तिकता का युग आया और वेद की विद्या के स्थान पर कपोल कल्पित मत मतान्तर से नैतिकता का पूर्णत: ह्रास हो गया। ऐसे समय में आदि शंकराचार्य व उनके प्रेरणास्रोत आचार्य कुमारिल भट्ट का आविर्भाव हुआ। उन्हीं के आदर्श जीवन के संस्मरण व प्रेरक तथा शिक्षादायक प्रसंग हमारे अन्तर्मन की गहराइयों तक जाकर हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हैं।

शंकराचार्य का बचपन

लगभग तेईस सौ साल पहले की बात है। मालाबार में एक बहुत बड़े सन्त हुए हैं। उनका **नाम था शंकर**। वह **संन्यासी बनना चाहते थे**, पर उनकी मां इसके लिए किसी भी हालत में राजी नहीं होती थी। मां की ममता जो ठहरी। वह चाहती थी कि उसका बेटा उसकी आंखों के सामने रहे और बुढ़ापे में सहारा दे।

एक दिन शंकर अपनी मां के साथ नदी में नहाने गए। वह जैसे ही पानी में घुसे कि मगर ने उनका पैर पकड़ लिया। वह चिल्लाए....."मां"! अब क्या करूं? मां को काटो तो खून नहीं। वह बेचारी क्या करे। उसने घबराकर लोगों को पुकारा। लोग आएं कि उससे पहले सुना, लड़का कह रहा था–**"मां"! ओ मां मैं मर रहा हूं। कम से कम मुझे सन्यासी होकर तो मरने दो।**" मां कांप उठी। उसके अन्दर तूफान उठ खड़ा हुआ। **एक ओर बेटे की अन्तिम इच्छा थी, दूसरी ओर मां की ममता।** वह क्या करे? मौत के मुंह में पड़े बेटे की इच्छा को क्या पूरी न होने दे? पर सोचने का समय कहां था। **उसने दिल कड़ा किया और झट से अनुमति दे दी। इसके बाद जिसकी आशा नहीं थी, वह हो गया। शंकरा ने जोर लगाया और संयोग कि उसका पैर मगर के चंगुल से छूट गया।**

वह बाहर निकले। मां के खोए प्राण जैसे लौट आए। पर **बेटे को संन्यासी होने की अनुमति मिल चुकी थी। मां के सामने अब कोई चारा न था। यही शंकर आगे चलकर आदि गुरु शंकराचार्य बने**–इतिहास में अमर हो गए। वेदों के प्रचार-प्रसार में जीवन लगा दिया।

संन्यासी का हठ

वेदान्त के आदि गुरु शंकराचार्य का जन्म त्रावणकोर के एक मलयाली ब्राह्मण के घर हुआ था। बाल्यकाल में ही उनके पिता का देहान्त हो गया। **उन्होंने अल्प आयु में ही वेद, उपनिषद, दर्शन, इतिहास व पुराणों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया। तत्पश्चात् किसी गुरु की खोज में वे घर छोड़ने को व्याकुल हो गए, परन्तु मां के स्नेह के कारण रुक गए।**

ज्ञान के खोजी महापुरुष भला किससे रुक सकते हैं! एक दिन पुन: उन्होंने संन्यास लेने की अनुमति मांगी। **मां ने आंखों में आंसू भरकर कहा–"अगर मैं मर गई तो मेरा अन्तिम संस्कार कौन करेगा?"** शंकराचार्य ने मां को वचन दिया कि वह जहां भी होंगे, मां का अन्तिम संस्कार करने अवश्य आएंगे।

मलयालम के ब्राह्मणों ने शंकराचार्य के इस कार्य का घोर विरोध किया। उनका **कथन था कि ब्रह्मचारी को संन्यास लेने का कोई अधिकार नहीं है।** शंकराचार्य ने उनकी एक न सुनी। इस कारण वे सभी उनसे रुष्ट हो गए और उन्होंने जाति बहिष्कृत कर दिया।

जब उनकी मां की मृत्यु हुई तो ब्राह्मण समाज का कोई व्यक्ति शव को शमशान तक ले जाने नहीं आया। **शंकराचार्य न तो झुके न धैर्य खोया और अन्तिम संस्कार किया।** संकल्प के धनी महापुरुष ने अपने अगाध पाण्डित्य, अनवरत प्रयास व लगन से देश भर में घूम-घूमकर वेदान्त का प्रचार किया और चार धामों की स्थापना की।

कुमारिल भट्ट का अखण्ड व्रत

नव स्नातक भट्टाचार्य वेदभाष्य में तल्लीन थे। उनकी विधवा माता आई और बोली–"वत्स! तेरे विवाह की तैयारियां हो रही हैं, आगामी सोमवार को संस्कार होना निश्चित हुआ है।" "**तथास्तु**" अनायास ही आचार्य के मुख से निकला।

विवाह के कुछ ही दिन बाद आचार्य की माता महाप्रयाण कर गई। आचार्य ने सहधर्मिणी को अपने अभिमुख याचन पर सामने बिठाकर कहा–"**देवी! मैंने चारों वेदों का अविकल भाष्य समाप्त होने तक एक अखण्ड ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हुआ है। अद्यस्थ हुआ मैं ब्रह्म के ब्रह्म (वेदज्ञान) का अनुवाद कर रहा हूं। मुझे अपने शरीर की रक्षा का लेशभाव भी भान नहीं रहता। अब तक माताश्री मेरी देख-रेख करती थीं, अब तुम करना।**" श्रद्धापूर्ण हृदय से देवी ने उत्तर दिया–"**तथास्तु देव!**"

भट्टाचार्य जी ने चारों वेदों का भाष्य समाप्त किया। उस रात पति-पत्नी को सही निश्चिन्तता से निद्रा आई। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में आचार्य की निद्रा भंग हुई। अनुभव हुआ कि रात भर चटाई पर लेटे-लेटे वाम पार्श्व में एक तपस्विनी चटाई पर लेटी हुई है। आचार्य ने अपने और अपनी सहधर्मिणी के श्वेत केशों को देख मन ही मन कहा–"**दोनों के शिर चंद्रिका के समान श्वेत हो गए!**"

आचार्य ने अपनी वाम भुजा फैलायी। परन्तु इससे पूर्व इसके कि वह देवी के शरीर का स्पर्श कर सकते, देवी उठकर खड़ी हो गई, पति को प्रणाम करती हुई बोली– "**देव! आयु के अन्तिम प्रहर में भी इन दोनों अछूते जीवनों को अछूते ही बने रहने दो। अब तक वेदभाष्य में लगे रहे, अब वेद प्रचार में लग जाइए।**"

"**तथास्तु**" कहकर आचार्य उठे पत्नी को प्रणाम किया। गद्-गद् हृदय से बोले–"**सत्यं शिवं सुन्दरम्।।**"

दूसरी ही प्रात: दोनों ने यथाविधि संन्यास लिया और शेष समस्त जीवन वेद प्रचार में लगाया। **ये थे महान् शंकराचार्य के प्रेरणा स्रोत कुमारिल भट्ट।** ❖❖❖

–यह न सोने का वक्त है, न रोने का और न खोने का। उठो! परमात्मा के पुत्रों! निजी जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, राष्ट्रीय जीवन में भारत माता की पुनर्प्रतिष्ठा एवं संसार को एक कुटुम्ब में परिवर्तित करने के लिए चल पड़ो।

–पंडिता राकेशरानी

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुँजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	23000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	18500/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	15000/-रुपए
आधा पृष्ठ	8000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	4500/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

विज्ञापन व्यवस्थापक- *जनज्ञान-मासिक*

वेद मन्दिर, महात्मा वेदिभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-36 दूरभाष: 08459349349

आर्यसमाज के आधार स्तम्भ

जीवनियां : भाग-७

जिन देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति देकर सत्य-धर्म और ज्ञान के प्रकाश को पुनः प्रसारित करने हेतु आर्यसमाज संगठन को सुदृढ़ बनाकर ऋषि दयानन्द के उद्देश्यों को फैलाया-उनको स्वर्ण जयन्ती वर्ष का यह विशेषांक इस पावन अवसर पर अर्पित करते हैं-.......

26 अप्रैल जिनकी जयन्ती है .....

महान् मनीषी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

26 अप्रैल, 1864 ! मुल्तान नगर में एक देदीप्यमान नक्षत्र उदित हुआ। श्री राधाकिशन सरदाना के गृह में मंगल वाद्य बज उठे। क्योंकि उनके यहाँ ही उदित हुआ था, कुलदीपक के रूप में एक नक्षत्र। **माता-पिता के नाम दिया मूला।** किन्तु अभी उस नवपल्लव को पल्लवित हुए कुछ ही वर्ष हुए थे कि उसकी कुशाग्र बुद्धि की सुगन्ध व्याप्त होने लगी। बाल्यावस्था को पार कर मूला ने किशोर अवस्था की देहरी पर पग धरा। माता-पिता 12 वर्ष के उस बालक को हरिद्वार ले गए। **चिरकाल की प्रतीक्षा इस बालक के रूप में साफल्यमण्डित हुई थी। अतः उन्होंने इसे गुरु का प्रसाद मान कर बालक को नया नाम दिया 'गुरुदित्ता'।**

किन्तु अपने जीवन में समाज और देश के सुधार हेतु कृतसंकल्प इस **बालक ने स्वतः ही अपने नाम का सुधार कर इसे गुरुदत्त की शुद्ध संज्ञा प्रदान कर दी। प्रबल स्मरण शक्ति के धनी गुरुदत्त ने 1881 ई. में श्रेष्ठ अंकों में मैट्रिक की परीक्षा में सफलता अर्जित की तो व्यायाम और प्राणायाम से शरीर भी बलिष्ठ और सुदृढ़ बना लिया।** बाद में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से विज्ञान में एम.ए. सर्वाधिक अंक लेकर सफलता पाई। **कहते हैं कि प्राप्त अंकों ने सभी पुराने रिकार्ड तोड़ दिए।**

किन्तु एक दिन इस मेधावी युवक के हाथ कहीं से महर्षि दयानन्द कृत **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** ग्रन्थ आ गया। **इस ग्रन्थ को पढ़ा तो आपके जीवन में एक नवीन क्रान्ति प्रादुर्भूत हो उठी** और आप आर्य समाज के सम्पर्क में आकर उसमें गए।

उन्हीं दिनों आपकी नियुक्ति गवर्नमेन्ट कालेज में विज्ञान के सहायक अध्यापक के रूप में हो गयी थी। यद्यपि आप आर्य समाज के सभासद बन गए थे, अध्ययन का क्रम भी जारी था किन्तु मस्तिष्क पर नास्तिकता के विचार अभी भी प्रभावी थे।

महर्षि दयानन्द के अजमेर में रोग-ग्रस्त होने का समाचार लाहौर पहुँचा तो स्थानीय आर्य समाज ने आपको ला. जीवनदास के साथ महर्षि के दर्शनार्थ अजमेर भेज दिया। वहाँ **जिज्ञासु गुरुदत्त ने देव दयानन्द के जीवन के अन्तिम दृश्य को नितान्त तन्मयता और उत्सुकता सहित निराहा।**

इन दर्शन ने उनके जीवन दर्शन को नया दिशा दान दिया और नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गए। अब उनके **जीवन का प्रत्येक क्षण महर्षि दयानन्द के मिशन और प्रचार हेतु समर्पित हो गया।**

लाहौर में महर्षि की स्मृति में दयानन्द एंग्लों वैदिक (डी.ए.वी.) कालेज की स्थापना का निर्णय हुआ। उसके उद्देश्यों में वेद और वैदिक साहित्य तथा संस्कृत पढ़ाने पर विशेष बल दिया गया। कालेज की स्थापना तो हो गई किन्तु वेद, वैदिक साहित्य और संस्कृत की शिक्षा की कोई समुचित व्यवस्था न हुई और पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति पर ही बल दिया गया तो गुरुदत्त उस स्थिति के विरोधी गुट के अग्रगण्य नेता बन गए और फिर उस कालेज के प्रबन्ध में सक्रिय योगदान के स्थान पर आपने सम्पूर्ण शक्ति वेद प्रचार, संस्कृत प्रचार में लगा दी।

आपने लाहौर में अष्टध्यायी की कक्षा आरम्भ की तो वैदिक शब्दों की व्याख्या पर एक कोश भी तैयार किया और कुछ उपनिषदों का अंग्रेजी अनुवाद भी। इसके अतिरिक्त आपने **'टर्मिनोलॉजी ऑफ वेदाज़'** नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ की भी रचना की।

जीवन में 18 बार सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने वाला यह मेधावी युवक अत्यधिक परिश्रमजन्य क्षय रोग से ग्रस्त हो 26 वर्ष की युवा अवस्था में ही जाति को नव प्रकाश दे अपना जीवन दीप बुझा गया। ❖❖❖

7 अप्रैल जिनकी पुण्यतिथि है ....

स्वामी दर्शनानन्द जी

पं. कृपाराम के नाम से प्रारम्भ में आर्यजगत् में परिचित हुए कर्मठ सेनानी ही आगे चलकर **आर्यजगत् में स्वामी दर्शनानन्द के नाम से विख्यात हुए थे।** उनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा यद्यपि अरबी और फारसी में हुई थी किन्तु समाज के सम्पर्क में आकर उन्होंने हिन्दी और संस्कृत का भी मन लगाकर अभ्यास किया। **छोटी-सी आयु से ही उनकी प्रवृत्ति वैराग्य और धार्मिक कार्यों में लग चुकी थी।** इस का परिचय इस घटना से भी लग जाता है कि उनके पिताजी ने उन्हें एक दुकान खोल कर दी थी तो उसका नाम भी उन्होंने **'सच्ची दुकान'** रख दिया था। इस सत्य व्यवहार से दुकान को तो लाभ हुआ किन्तु **श्री कृपाराम जी का उत्साह तो आर्य समाज का प्रचार कार्य ही एकमात्र कार्य बन गया था।**

लेखों द्वारा प्रचार कार्य की धुन मन में बसी तो आपने एक मुद्रणालय भी आरम्भ कर दिया तथा **'तिमिर नाशक'** नामक एक पत्रिका का प्रकाशन किया। **अनेक ग्रन्थों का भी आपने प्रकाशन किया।** घाटे का सौदा करके आप वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार कार्य में ही लगे रहे। ❖❖❖

6 अप्रैल जिनकी पुण्यतिथि है .....

आर्य समाज के शहीदः हुतात्मा महाशय राजपाल

5 आषाढ़, संवत् 1942 ! अमृतसर में एक सामान्य परिवार में जन्मे थे श्री राजपाल-जो **आर्यसमाज के इतिहास में महाशय राजपाल के नाम से चिरस्मरणीय रहेंगे।** बालक राजपाल अभी बहुत छोटे ही थे कि **पिता परिवार को निराश्रित छोड़कर कहीं चले गए।** उन दिनों राज्यपाल विद्यालय में पढ़ते थे। **कर्त्तव्यपरायण और परिश्रमी राजपाल इस विपरीत स्थिति से न घबराए और मिडिल की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर उर्दू में किताबत कर परिवार पोषण का दायित्व निभाने लगे।** प्रारम्भ से ही जहां विद्याध्ययन में आपकी गहन रुचि थी वहाँ आर्यसमाज के प्रति अडिग निष्ठा थी।

1906 ई. में आप महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) द्वारा सम्पादित सद्धर्म प्रचारक (उर्दू) के कार्यालय में लिपिक का कार्य करने लगे थे। महात्मा जी का संपर्क आपके जीवन को नवीन दिशा दे रहा था। और आपके स्वाभाविक गुण भी विकसित होते जा रहे थे। जब सद्धर्म प्रचार उर्दू से हिन्दी में परिवर्तित कर हरिद्वार से प्रकाशित होने लगा तो महाशय राजपाल भी लाहौर चले गए और वहाँ **आर्यसमाज के स्वनामधन्य पत्रकार महाशय कृष्ण जी के साप्ताहिक (उर्दू) प्रकाश के व्यवस्थापक नियुक्त हो गए।** प्रारम्भ में आपको केवल 20 रुपए मासिक ही वेतन मिलता था। किन्तु अपनी सत्यता, परिश्रम और सौम्यता के कारण आप

महाशय जी के छोटे भाई और '**प्रकाश**' के कर्णधारवत् ही हो गए।

व्यवस्थापक तो थे ही **आप उसके प्रमुख रिपोर्टर भी बना दिए गए और यदा-कदा आवश्यकता पड़ने पर तो आप पत्र का सम्पादन कार्य भी किया करते थे।** वर्षों तक पंजाब की आर्य जनता की दृष्टि में '**प्रकाश और महाशय राजपाल**' एक ही बात समझे जाते थे। **प्रकाशन के व्यवस्थापन के साथ ही साथ महाशय राजपाल ने पुस्तक-प्रकाशन कार्य भी आरम्भ कर दिया और धीरे-धीरे यह प्रकाशन पुस्तक भण्डार का रूप धारण कर गया और उन्हें नाम दिया गया 'सरस्वती आश्रम' और आर्य पुस्तकालय। आप आर्य समाज के विद्वानों से लिखाकर मौलिक पुस्तकों का प्रकाशन किया करते थे।**

उन्हीं दिनों '19वीं सदी का महर्षि' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिसमें महर्षि दयानन्द के जीवन पर अनेक अभद्र और अनुचित आक्षेप किए गए थे। तदुपरान्त मई 1924 में महाशय राजपाल ने सरस्वती पुस्तकालय की ओर से उक्त पुस्तक के उत्तर में 'रंगीला रसूल' का प्रकाशन करा दिया। पहले तो सरकार ने इस पुस्तक पर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही उसे बुरा समझा। किन्तु जब किसी मुसलमान बंधु ने यह पुस्तक महात्मा गांधी जी के पास भेजी तो उन्होंने सर्वप्रथम उसके विरुद्ध लिखा। उसके बाद तो 'रंगीला रसूल' के विरुद्ध एक अभियान ही छिड़ गया और पुस्तक जब्त कर ली गई।

महाशय राजपाल पर पुस्तक प्रकाशन के अपराध में अभियोग चला जिसमें महाशय जी के हजारों रुपए लग गए। **अभियोग की विशेषता यह थी कि अनेक मौलवियों की तुलना में महाशय राजपाल अकेले ही डटे रहे। महाशय राजपाल को अभियोगों में पहले तो कैद हुई किन्तु हाईकोर्ट से साफ बरी हो गए।**

राजपाल जी एक शान्तिप्रिय सज्जन थे। हाई कोर्ट के निणर्य के बाद वे उस पुस्तक के कई संस्करण छाप सकते थे। किन्तु **उन्होंने यह जानकर कि मुस्लिम बन्धु इसके प्रकाशन से रुष्ट हैं उसका दूसरा संस्करण न छापने की घोषणा कर दी।**

किन्तु..... **मजहबी उन्माद में अंधे खुदाबख्श नामक एक व्यक्ति ने 26 सितम्बर, 1927 को प्रातः दुकान पर ही अचानक उन पर आक्रमण कर दिया और वे घायल होकर एक मास तक अस्पताल में पड़े रहे।**

तदुपरान्त **6 अप्रैल, 1929 को जब महाशय राजपाल अपनी दुकान पर बैठे हिसाब मिला रहे थे, इल्मुद्दीन नामक एक युवक वहां आया और तुरन्त उन्हें छुरा भोंक दिया। इस प्रकार इस धर्मवीर की जीवन-लीला का अन्त हो गया।**

एक बात और भी उल्लेखनीय है कि महाशय राजपाल ने उस पुस्तक के लेखक का नाम न तो न्यायालय में घोषित किया और न ही जीवन की अन्तिम घड़ी आ जाने पर ही। वस्तुतः सुप्रसिद्ध कवि वारिशशाह की ये पंक्तियां ही उस महाधन के सम्बन्ध में दोहराई जा सकती हैं–

वारिशशाह न भेद सन्दूक खुले।
भावे जान दा जंदरा टूट जाए। ❖❖❖

18 अप्रैल जिनकी जयन्ती है .....

आदर्श मानव : महात्मा हंसराज

18 अप्रैल, 1864 ई.! पंजाब प्रान्त के होशियारपुर जिले के ग्राम बजवाड़ा में ला. चुन्नीलाल के यहां पुत्ररत्न ने जन्म लिया। **माता हरदेवी थीं इस लाडले की जननी।** माता-पिता थे निर्धन, परन्तु परिश्रम रूपी धन से सुसम्पन्न। **नंगे पैर बालक विद्यालय जाता, गर्मी में पैर तपते तो शीत में ठिठुर जाते।** किन्तु बालक तो था तपस्वी। अतः सब प्रकार के कष्टों को प्रसन्नमना झेलता रहा। **अभी यह बालक १२ वर्ष का था कि पिता का वरद हस्त उनके सिर से उठ गया।** पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार बालक को पिता के निधन के कुछ ही दिन उपरान्त विवाह संस्कार भी कराना पड़ा।

तदुपरान्त मैट्रिक में सफलता प्राप्त करने के उपरान्त आपने उच्च शिक्षा लाहौर में सेवारत अपने बड़े भाई के सहयोग से प्राप्त की। **विपरीत अवस्थाओं में भी उसने अच्छे अंकों में बी.ए. पास कर लिया।**

१८७७ ई. में महर्षि दयानन्द ने अपनी चरण रज से लाहौर नगर को पावन किया तो हंसराज को भी इस महामानव के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया। ऋषि के सम्पर्क में आते ही हंसराज की जीवन-धारा ने एक नवीन मोड़ ले लिया और उन्होंने आर्य समाज लिए सर्वस्व समर्पण का मन-ही-मन संकल्प ग्रहण कर लिया।

यदि हंसराज चाहते तो कोई भी अच्छी सी नौकरी पा जाते किन्तु भौतिक सुख-ऐश्वर्य के प्रति नहीं अपितु नि:स्पृह सेवा का मार्ग ही उन्होंने स्वयं के लिए चुना था।

१८८३ की दीपावली। अग-जग में वैदिक धर्म का प्रकाश विस्तीर्ण देव दयानन्द का जीवन दीप तिरोहित हो गया। पंजाब के आर्य जनों ने महर्षि की पावन स्मृति स्वरूप लाहौर में डी.ए.वी. कालिज की स्थापना का निश्चय किया और **हंसराज ने अपनी सेवाएँ बिना किसी प्रकार का वेतन लिए ही इस विद्यालय की स्थापना पर उसके लिए देने का प्रस्ताव कर दिया।** आर्य जन हर्षित हो उठे और **१८८३ में स्थापित डी.ए.वी. स्कूल के मुख्याध्यापक का पद उन्होंने ही सम्भाला। बिना कोई वेतन लिए ही वह २५ वर्ष तक इस पद पर आरूढ़ रहे।**

कालेज में आप अंग्रेजी और इतिहास के अतिरिक्त धर्म शिक्षा की भी शिक्षा छात्रों को प्रदान करते। छात्रावास का भार भी उन्होंने स्वयं ही सम्भाला हुआ था। **छात्रों में वैदिक जीवन के प्रति अनुरक्ति जगाने हेतु आर्य युवक समाज की स्थापना की गई।**

सरलता और त्यागमूर्ति हंसराज कालेज के छात्रों के ही नहीं अपितु शिक्षकों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गए थे। **फरवरी १९१४ में आपके पुत्र श्री बलराज दिल्ली षड्यन्त्र काण्ड में बन्दी बनाए गए और उन्हें कालापानी का दण्ड सुनाया गया, जो बाद में अपील करने पर सात वर्ष की सजा में बदल गया।** इसी बीच हंसराज की जीवनसंगिनी ने उनसे चिर विदाई ले ली। कई प्रकार के आर्थिक संकटों से उनके कृपालु भाई को भी जूझना पड़ा किन्तु **सम्पत्ति और विपत्ति तथा हर्ष और शोक दोनों में ही यह महापुरुष में समान रहा।**

आर्य प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष पद ग्रहण कर पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान, सीमा प्रान्त, जम्मू-कश्मीर इत्यादि का तूफानी दौरा किया। दर्जनों सुयोग्य विद्वान्, उपदेशक और भजनीक नियुक्त किए। अनेक स्थानों पर आपने अनाथालय खोले, तो भूकम्प पीड़ितों और प्लेग पीड़ितों की सहायता की। १९२१-२२ में आपने मालाबार (केरल) के बलात् विधर्मी बने २५०० से अधिक हिन्दुओं को पुन: शुद्ध किया। समाज सुधार आन्दोलन में भी आप अग्रणी रहे। १९३८ के कुम्भ मेले से आप उदर रोग से पीड़ित होकर लौटे और 15 नवम्बर १९३८ को आपका जीवन दीप बुझ गया। ❖❖❖

(पृष्ठ-23 का शेष)

देशी गाय के गोबर-मूत्र-मिश्रण से प्रोपीलीन आक्साईड नामक गैस उत्पन्न होती है, जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है। गोमूत्र में कुल 16 प्रकार के मुख्य खनिज तत्व होते हैं, जो शरीर के रक्षण, पोषण और विकास में सहायक हैं। इसके समुचित सेवन से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है और शरीर शक्तिशली एवं चेतनायुक्त होता है। अनेक शोधों एवं परीक्षणों में इसमें सूक्ष्म रूप से चांदी तत्व भी पाया गया है, जो स्वास्थ्य रक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

गाय का शरीर–गाय के शरीर के रोम-रोम से गुग्गुल जैसी पवित्र सुगन्ध आती है। उसके शरीर से अनेक प्रकार की वायु निकलती है, जो वातावरण को जन्तुरहित करके पवित्र बनाती है। गाय को रीठे के जल से नहलाने से उसको और अधिक आनन्द का अनुभव होता है। गाय के इन्हीं गुणों को देखकर कहा जाता है–

जो घर होय तुलसी अरु गाय।
ता घर वैद्य कबहूं ना जाय।।

–गोग्रास से साभार

❖❖❖

खड्ग साधक रहा है भारत

–राकेशकुमार आर्य, (सम्पादक उगता भारत)

भारत खड्ग का उपासक नहीं, साधक देश रहा है। यह बात रहस्यपूर्ण है, पर भारत के विषय में है सौ-प्रतिशत सत्य। **उपासक से कोई त्रुटि होने की या शस्त्र प्रयोग में असावधानी बरतने की अपेक्षा की जा सकती है; परन्तु एक साधक से ऐसी अपेक्षा नहीं की जा सकती।**

यही कारण है कि विश्व की अन्य जातियों ने खड्ग का दुरुपयोग किया, सभ्यताएं मिटाकर और वैश्विक संस्कृति का विनाश करके। जबकि........

भारत ने सभ्यता और संस्कृति का विस्तार किया। इसीलिए भारत का इतिहास साधना का इतिहास है, शान्ति का इतिहास है, संस्कृति का इतिहास है, विकास का इतिहास है। जबकि विश्व की अन्य जातियों या देशों का इतिहास सर्वथा रक्तरञ्जित विनाश का इतिहास है।

हमारा घोर अपराध

हमारे पूर्वजों ने इस रक्तरञ्जित विनाश के प्रवाह को रोकने के लिए अनथक प्रयास किया। इस अर्थ में **उनके अनथक प्रयासों का लाभ केवल भारत को ही नहीं; अपितु मानव जाति को मिला।** इतिहास के इस अकाट्य सत्य की उपेक्षा करके हमने अपने वैश्विक स्वतन्त्रता के अमर सेनानी पूर्वजों की उपेक्षा का घोर अपराध किया है। **क्या यह सत्य नहीं है कि अपने शस्त्र प्रयोग की मर्यादा की रक्षार्थ अवसर उपलब्ध होने पर किसी भारतीय रणबाँकुरे ने मुस्लिम जनता का कहीं भी नरसंहार नहीं किया?.....** एक भी प्रमाण नहीं मिलेगा।

पैर जमाते कुतुबुद्दीन को चुनौती दे रहा था भारत

कुतुबुद्दीन ऐबक अपने पांव जमा रहा था और भारतीय स्वाभिमान का आक्रोश उसके पैर उखाड़ने में लगा था। **ऐबक ने अपने स्वामी मोहम्मद गोरी के जीवनकाल में तो विजय-अभियान चलाए; पर उसकी मृत्यु के उपरान्त एक भी विजय-अभियान नहीं चल पाया, क्यों?** क्या वह महात्मा हो गया था या भारत में उसे जितना भू-भाग राज्य करने के लिए मिला, वह उसी से सन्तुष्ट हो गया था? **इन दोनों प्रकार के भ्रमों को पालने में ही दोष है।** भारत का खड्ग ऐबक की धमक से अप्रसन्न था, असन्तुष्ट था और कहीं न कहीं आन्दोलित भी था; क्योंकि वह वैश्विक संस्कृति के रक्षार्थ शत्रुनाश को अपना अन्तिम उद्देश्य मानता था और स्वप्राण रक्षार्थ शत्रुहन्ता को जाना उसका धर्म था।

भारत के खड्ग से भयग्रस्त रहा कुतुबुद्दीन ऐबक

अपने इस राष्ट्रधर्म के प्रति सचेत भारत के खड्ग को भी अपमानित और पराजित दिखाने का प्रयास विदेशी इतिहासकारों ने किया है, जबकि **सिक्के का एक दूसरा पहलू यह है कि कुतुबुद्दीन ऐबक भारत के बहुत ही छोटे से भूभाग पर शासन करने में सफल रहा था** (और वह भी निष्कण्टक नहीं)।

> ***उसे उस अपराजित 60 प्रतिशत भारत का लपलपाता खड्ग सपने में भी दीखता था, जिसका स्वाद वह कई बार युद्धों में चख चुका था। इसलिए उसने कोई अन्य सैन्य-अभियान भारत को जीतने के लिए न चलाना ही उचित समझा। भारत के तेजस्वी प्रतापी खड्ग की इस उपलब्धि को उपेक्षित किया गया है और एक झटके में ही ऐबक को सम्पूर्ण भारत का सुल्तान घोषित कर दिया गया है। निश्चित रूप में यह मान्यता भारत के खड्ग का अपमान है और भारत के प्रचलित इतिहास का एक सफेद झूठ भी है।***

पुरुषोत्तम नागेश ओक (अब दिवंगत) महोदय लिखते हैं–"भारत के इतिहास का वह दिन कलंक से नितान्त काला है, जिस दिन प्राचीन हिन्दू राजसिंहासन को, जिसे पाण्डव, भगवान् कृष्ण और विक्रमादित्य जैसे नररत्नों ने पवित्र और सुशोभित किया था। **एक घृणित विदेशी मुस्लिम ने, जिसे कई बार पश्चिम एशिया के गुलामों के बाजारों में खरीदा और बेचा गया, अपवित्र और कलंकित कर दिया।** नवम्बर, 1210 ई. के प्रारम्भिक दिनों में लाहौर में चौगाना (पोलो) खेलते समय कुतुबुद्दीन ऐबक घोड़े से गिर गया। घोड़े की जीन के पायदान का नुकीला भाग उसकी छाती में धंस गया और वह मर गया।"

जिन्हें 'बगावत' कहा गया, वे तो स्वतन्त्रता संग्राम थे

कुतुबुद्दीन ने 26 जून, 1206 ई. से नवम्बर, 1210 ई. तक शासन किया। **इस अवधि में वह भारतवर्ष के देशभक्तों के स्वतन्त्रता आन्दोलनों को शान्त करने**

में लगा रहा, यद्यपि इन स्वतन्त्रता आन्दोलनों को मुस्लिम लेखकों ने 'बगावत' या 'विद्रोह' का नाम दिया है, जो वस्तुतः भारतीयों के आक्रोश को या उनकी देशभक्ति को कम करके आँकने का ही एक प्रयास है। यह **'बगावत'** शब्द भारत के 1235 वर्षीय स्वतन्त्रता संघर्ष काल में जहाँ-जहाँ प्रयोग किया गया है, वहाँ-वहाँ ही मान लीजिए कि यह भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की अदम्य ज्वाला के लिए प्रयोग किया गया है।

हिन्दुओं के प्रति ऐबक की नीति

कुतुबुद्दीन ऐबक ने जब इस देश के कुछ भू-भाग पर मुस्लिम साम्प्रादायिक शासन स्थापित कर दिया, तो **उसके शासनकाल में हिन्दुओं के प्रति शासन की नीतियां नितान्त मजहबी रहीं।** मुस्लिम राज्य के हिन्दुओं की स्थिति कैसी होती थी, इस पर प्रकाश डालते हुए **रामधारी सिंह 'दिनकर'** अपनी पुस्तक **'संस्कृति'** के चार अध्याय' के पृष्ठ 239 पर लिखते हैं-**"मुस्लिम राज्य में, गैरमुस्लिम प्रजा, इस्लाम के कानून की दृष्टि में कितनी हेय समझी जाती थी, इसका अनुमान नीचे लिखे कुछ प्रतिबन्धों से किया जा सकता है-**

1. मुस्लिम राज्य में कोई भी प्रतिमालय नहीं बनाया जा सकता।
2. जो प्रतिमालय तोड़ दिए गए हैं, उनका नवनिर्माण नहीं किया जा सकता।
3. कोई भी मुस्लिम यात्री प्रतिमालय में ठहरना चाहे, तो बेरोकटोक टहर सकता है।
4. सभी गैरमुस्लिम लोग मुसलमानों का सम्मान करेंगे।
5. गैरमुस्लिम प्रजा मुसलमानी पोशाक नहीं पहनेगी।
6. गैरमुसलमान मुसलमानों के सामने जीन और लगाम लगाकर घोड़ों पर नहीं चढ़ेंगे।
7. गैरमुस्लिमों के लिए तीर, धनुष और तलवार लेकर चलना मना है।
8. गैरमुस्लिम जनता मुसलमानों के मुहल्लों में न बसे।
9. गैरमुस्लिम प्रजा अपने मुर्दों को लेकर जोर से विलाप न करे।"

दिनकर जी ने जिन उपर्युक्त बिन्दुओं को इंगित किया है, **ये वास्तव में वे अपमानजनक शर्तें हैं**, जिन्हें कोई भी स्वाभिमानी जाति अपने ऊपर आरोपित होने देना नहीं चाहेगी; क्योंकि **ये शर्तें किसी एक समुदाय को शासक तो दूसरों को शासित अथवा एक को शोषक तो दूसरों को शोषित सिद्ध करती हैं।**

'इस्लाम का भाईचारा' भी इस समस्या का कोई निदान नहीं कर पाया; क्योंकि वह भाईचारा समग्र मानव समाज के लिए नहीं था। **इसलिए शोषक और शोषित के मध्य संघर्ष होना अनिवार्य था।** पिछले पांच सौ वर्षों से भारत की वीर जनता ने अपनी स्वतन्त्रता के रक्षार्थ लाखों बलिदान दिए थे, लाखों ने अपना घरबार छोड़ा, परिवार छोड़ा और बस **सबको एक ही जिद थी कि साम्प्रदायिक विदेशी शासन को न तो मानेंगे और न ही स्थापित होने देंगे।** कदाचित् यही कारण था, जिसने भारतीयों को प्राण ऊर्जा प्रदान की और वे विदेशियों के विरुद्ध सदियों क्या संघर्ष करने के लिए सचेत हुए रहे।

डा. शाहिद क्या कहते हैं

इसलिए डा. शाहिद अहमद अपनी पुस्तक **'भारत में तुर्क एवं गुलाम वंश का इतिहास'** में लिखते हैं-'कुतुबुद्दीन ऐबक की दूसरी कठिनाई यह थी कि प्रमुख हिन्दू सरदार, जिन्हें गोरी ने परास्त किया था, अपनी खोयी हुई स्वतन्त्रता को उसकी मृत्यु के बाद पुनः प्राप्त करने के लिए उत्कण्ठित हो रहे थे। 1206 ई. में चन्देल राजपूतों ने हरिचन्द्र के नेतृत्व में फर्रुखाबाद (प्राचीन नाम भीष्म नगर) तथा बदायूँ में अपनी सत्ता फिर से प्राप्त कर ली थी। ग्वालियर प्रतिहार राजपूतों के हाथ में चला गया था। अन्तर्वेद (गंगा-यमुना के मध्य का क्षेत्र) में कई छोटे राज्यों ने कर देना बन्द कर दिया। सेन वंशी शासक बंगाल से पूर्वी क्षेत्र की ओर चले गए थे; परन्तु अपने राज्य पुनः प्राप्त करने के लिए वे सचेष्ट थे। बंगाल तथा बिहार में भी इख्तियारुद्दीन के मर जाने के बाद विद्रोह (**स्वतन्त्रता संघर्ष**) आरम्भ हो गया।"

डा. हुसैन का यह वर्णन हमें बताता है कि गोरी की मृत्यु के पश्चात् 1206 ई. से भारत के वे क्षेत्र अपनी स्वतन्त्रता के लिए किस प्रकार सक्रिय हो उठे थे, जिनमें किसी भी प्रकार से तुर्क साम्राज्य स्थापित करने का तानाबाना बुन लिया गया था। **इन प्रमाणों के रहते भी हसन निजामी जैसे लेखकों ने यह भ्रान्ति फैलायी कि- "उसकी (कुतुबुद्दीन की) आज्ञा से इस्लाम के सिद्धान्तों का बड़ा प्रचार किया गया और पवित्रता के सूर्य का प्रकाश सारे हिन्द मैं फैल गया।"**

हसन निजामी जैसे मुस्लिम लेखकों की **इस भ्रान्तिपूर्ण अवधारणा को पंख लगाए डा. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव जैसे भारतीय लेखकों ने**, जिन्होंने लिख दिया कि "ऐबक भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक था और लगभग सम्पूर्ण हिन्दुस्तान का वास्तविक सुल्तान था।"

-1058, विवेकानन्दनगर, गाजियाबाद

(उ.प्र.)

ऐसा देश है मेरा

भारतीय होने पर गर्व कीजिए

अंग्रेजों का भारत पर आधिपत्य था तथा भारतीय इंग्लैण्ड के राजा द्वारा शासित साम्राज्य की प्रजा थी। **15 अगस्त 1947 को भारत ने स्वाधीनता प्राप्त की तथा अंग्रेज शासकों से भारतीयों के हाथ में सत्ता आ गयी।** देशभक्त भारतीयों ने देश को स्वतन्त्र कराने वाले भारतीय नेताओं के मार्गदर्शन के अन्तर्गत कठिन परिश्रम किया। अन्तत: भारत आजाद हो गया एवं ये मानव क्रियाशीलता के सभी क्षेत्रों में प्रगतिशील बना। **भारत में लोकतन्त्र हुआ, पूरे विश्व में संसार के सबसे बड़े लोकतन्त्र के रूप में जाना जाने लगा।**

भारत आरम्भ से ही लोकतान्त्रिक देश रहा तथा इसमें निश्चित अन्तराल पर देशभर में मतदान के द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों का निर्देशन होता है। भारत एक समृद्ध देश है जहां **उद्योग तथा कृषि**, प्रगति के संकेतों को निश्चित करते हैं। अछूत तथा निरक्षरता को हटाना स्वतन्त्र भारत के लक्ष्यों में है। भारतीय अपनी पूर्व उपलब्धियों पर गर्व कर सकते हैं तथा ऐसी आशा की जाती है कि प्यार, मित्रता और शान्ति का सन्देश फैलाने की यह यात्रा निरन्तर जारी रहेगी।

भारत के रोचक तथ्य

1. **भारत नाम (इण्डिया) इन्डस नदी से अपनाया गया था, घाटी के चारों ओर जहां पूर्व सेटलर्स का घर था।** आर्यन अनुयायिओं ने इण्डस नदी को **सिन्धु** का नाम दिया। पर्सियन इन्वेडर्स ने उसे **हिन्दू** में बदल दिया। **'हिन्दुस्थान' सिन्धु तथा हिन्दु का सम्मिलित नाम है** तथा उसे हिन्दुओं की भूमि के रूप में जाना गया।

2. अंक प्रणाली की खोज भारत द्वारा की गई थी। भारत के वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने जीरो संख्या का आविष्कार किया।

3. **संस्कृत** सभी बड़ी भाषाओं की जननी है। **ऐसा इसलिए है क्योंकि ये सबसे शुद्ध है तथा कम्प्यूटर साफ्टवेयर हेतु सबसे उपयुक्त भाषा है।** (जुलाई 1987, फोबर्स मैग्जीन की रिपोर्ट अनुसार)

4. शतरंज की खोज भारत में हुई।

5. एलजेब्रा, त्रिकोणमिति एवं कैलकुलस का भी जन्म भारत में ही हुआ।

6. प्लेस वैल्यू सिस्टम एवं दशमलव प्रणाली 100 बी.सी, में भारत में विकसित हुई।

7. भारत के प्रथम छै: मुगल शासकों ने 1526 से 1707 अर्थात् लगभग दो सौ वर्षों तक पिता से पुत्र तक लगातार राज्य किया।

8. भारत का पहला ग्रेनाइट मन्दिर तमिलनाडु में तंजॉर स्थित वृहदेश्वरा मन्दिर है। ग्रेनाइट के 80 टन के टुकड़े से मन्दिर का शिखर बनाया गया है। और **ये अद्भुत मन्दिर केवल पांच वर्षों में बना था।** (1004 ए.डी. से 1009 ए. डी. के मध्य) तब राजेन्द्र चोल का राज्य था।

9. भारत विश्व में सबसे बड़ा लोकतन्त्र है तथा विश्व में 60वां सबसे बड़ा देश है तथा सबसे प्राचीन और अधिक जनसंख्या वाला है। (लगभग 10000 वर्षों पूर्व)

10. **ऋषि ज्ञानदेव** के द्वारा 13वीं शताब्दी में सांप-सीढ़ी के खेल का जन्म हुआ। सामान्यत: उसे मोक्षपत कहा गया। खेल में सीढ़ी को गुण तथा सांपों को पाप (दोष) माना गया। खेल काउरी शेल्स तथा डाइस से खेला जाता था। समय के साथ-साथ खेल में कई आधुनिकीकरण हुए परन्तु मतलब एक ही था अर्थात् अच्छे कार्य हमें स्वर्ग ले जाते हैं तथा बुरे कार्य पुनर्जन्म की प्रक्रिया दोहराते हैं।

11. संसार का सबसे ऊंचा क्रिकेट ग्राउण्ड हिमांचल प्रदेश, छेल में है। हिल टाप को समतल करने के बाद 1893 में बना था। यह क्रिकेट पिच समुद्र तल से 2444 मीटर्स ऊपर है।

12. संसार में सबसे बड़ा सेवायोजन (54 लॉयर) भारतीय रेल है जिसमें अरबों लोग कार्यरत हैं।

13. 700 बी.सी. में तक्षशिला में संसार की पहली यूनिवर्सिटी स्थापित की गई थी।

14. पूरे संसार के 10500 से अधिक छात्र 60 विषयों से अधिक में अध्ययनरत हैं। शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की महान उपलब्धियों में से एक चौथी शताब्दी में बना नालान्दा विश्वविद्यालय था।

15. 6000 से अधिक वर्षों पूर्व आर्ट ऑफ नेवीगेशन तथा नेवीटिंग का सिन्धु नदी में जन्म हुआ।

16. प्रचलित शब्द नेवीगेटिंग संस्कृत शब्द नवगारी से तैयार हुआ। शब्द नेवी भी संस्कृत शब्द नोऊ से बना।

17. एस्ट्रोनामर स्मार्ट से पूर्व सैकड़ों वर्ष पहले सूर्य की परिधि के पृथ्वी द्वारा चक्कर लगाने के लिए समय की गणना भाष्कराचार्य ने की थी।

18. पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में लिए गए समय का आंकलन (5वीं शताब्दी) 365.258756484 दिन था। **–(दैनिक जागरण, 15.8.2006 से)**

सामायिक चर्चा

गंगा रक्षक महापुराण की जरूरत

–रामबहादुर राय

आज राजगद्दी चलाने वाले हैं कौन? **नकली आधुनिक विदेशी लोग, दिमाग जरा भी हिन्दुस्तानी नहीं, नहीं तो हिन्दुस्तान की नदियों की योजना बन जाती।'** इसे कहा था, **डॉ. राममनोहर लोहिया ने।** कोई भी यह पूछ सकता है कि कब कहा था? **लोहिया रचनावली में इसकी तारीख नहीं दी गई है। पर जिस खण्ड में यह छोटा-सा व्याख्यान छपा है, उसमें ज्यादातर वे विषय हैं जो राजनीतिक के दायरे से परे हैं।** फुर्सत के क्षण में उपजा यह विचार था। मेरा अनुमान है, **कभी 1960 के आस-पास डॉ. लोहिया ने यह कहा होगा। यानी 55 साल पहले।**

इतने सालों बाद प्रधानमन्त्री नरेन्द्र ने कम से कम इतना परिचय तो दे ही दिया है कि उनका दिमाग हिन्दुस्तानी है। तभी तो **जल संसाधन, नदी विकास और गंगा पुनर्जीवन मन्त्रालय** बनाया है। **आजादी के बाद इस तरह का यह पहला मन्त्रालय है।** इसे सौंपा है उस उमा भारती को, जिन्होंने कुछ साल पहले गंगा के लिए अभियान चलाया था।

आम तौर पर गंगा को कुम्भ, महाकुम्भ और धार्मिक रीति-रिवाज के दायरे में ही देखने का चलन बन गया है। पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने इससे परे जाकर विचार किया। गंगा के प्रवाह में भारत की परम्परा को देखा। समझा कि गंगा मलीन हो गई तो वह परम्परा कैसे बचेगी? अपने पूर्वजों को जवाब क्या देंगे?

जिन दिनों उमा भारती भाजपा में वापसी की राह देख रही थीं, उन्हीं दिनों की बात है। **एक दिन मोहन भागवत ने उनसे कहा–'उमा, आप गंगा की योजना में लगो।'** पौराणिक सन्दर्भ में उमा एक प्रतीक भी हैं। उन्हें यह बात जंच गई। मानो गंगा की पुकार सुन ली हो। फिर जैसी वे जिद्दी और कुछ कर गुजरने की ठान लेने वाली महिला हैं, वैसा ही उन्होंने अपना मिशन बनाया। **डॉ. लोहिया भी गंगा पर जन आन्दोलन चनाने की मंशा रखते थे।** पर तब सम्भव भले न हुआ हो, उमा भारती ने सतत् अभियान चलाकर गंगा को बहस के बीच ला दिया।

उन्होंने क्या-क्या किया? यह बताने और गिनाने की यहां जरूरत नहीं है। उसे ज्यादातर वे लोग जानते हैं जिनकी गंगा में रुचि है। पर यह बताना जरूरी भी है कि **उमा भारती ने दिल्ली में डेरा डालकर अभियान नहीं चलाया। गंगा की पूरी यात्रा की। वह करीब 3200 किलोमीटर की थी। जाहिर है, वह गंगा के किनारे की ही यात्रा नहीं थी, बल्कि गंगा वासियों से जुड़ने का अभिनव प्रयोग था।** गंगा और गंगा-जन को जानने-समझने का प्रयास था। **उसी क्रम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने जो घोषणाएं कीं, वे किसी राजनीतिक दल के लिए अनहोनी जैसी थीं।** तब उसे राजनीतिक पैंतरा से ज्यादा अहमियत नहीं मिली थी। उनकी घोषणाओं में एक यह भी था कि भाजपा सत्ता में आने पर अलग मन्त्रालय बनाएगी।

बहुत देर से ही सही, **गंगा सहित नदियों को बचाने के बारे में उपाय-योजना के लिए अलग मन्त्रालय का बनना सचमुच सकारात्मक संकेत है। पर क्या इतना ही काफी है? जो हालत गंगा की है, वही देश की सारी नदियों की है। गंगा कोई अपवाद नहीं है। लेकिन गंगा के बारे में अधिक चिन्ता के कई कारण हैं।**

देश की तिहाई आबादी गंगा से जुड़ी है। **समाज की गहरी धार्मिक भावनाओं का भी सवाल गंगा से गहरे जुड़ा है। इस यथार्थ की उपेक्षा नहीं की जा सकती।** उससे भी बड़ा सच जो सवाल बनकर खड़ा है। वह गंगा की विकट हो रही दुर्दशा का है। विकट इसलिए लगता है कि पूरा विचार नहीं किया गया है। समग्रता में जाने की झंझट से सरकार और समाज बचता रहा है।

समग्रता से सीधा आशय इसके व्यावहारिक और वैचारिक सवालों से है। वे क्या हैं? उन्हें समझना पहली जरूरत है। शुरू करना चाहिए विचार से। **विचार का सम्बन्ध अवधारणा से है।** भारतीय दर्शन से अवधारणा निकलती है। यह जांचना जरूरी है कि गंगा के बारे में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारी अवधारणा क्या है? इसके लिए हमें पुराणों और महापुराणों में जाना होगा। **भारतीय दर्शन में पुराणों का केन्द्रीय स्थान है। पुराणों से भारतीय संस्कृति की एक प्रतिनिधि धारा फूटती है। वही मुख्य धारा बन जाती है।** संस्कृति चेतना है। **गंगा का इस समय का संकट जहां सांस्कृतिक है, वहीं सभ्यतागत भी है।** पुराणों ने हमारा मन बनाया है। गंगा के बारे में एक अवधारणा बनाई है।

हमारे मन में यह बहुत गहरे बैठा हुआ है कि गंगा का अर्थ है पवित्र धारा। जिसमें पाप को पुण्य में बदलने की अपार क्षमता है। गंगा में कोई भी गिरे, गिरते ही वह पवित्र हो जाता है। इस अवधारणा ने गंगा को जितना नुकसान पहुंचाया है, उतना ही पूरे समाज पर उसका अभिशाप फैला हुआ है। हम मानने को तैयार ही नहीं हैं कि कचरा गंगा को गन्दा कर देगा। तभी तो गंगा के किनारे बसे एक सौ अठारह शहरों का सीवर उसमें गिराया जाता है। हमारे मन में बैठा हुआ है कि किसी भी तरह की गन्दगी गंगा में जाते ही साफ हो जाती है। इसमें एक मानसिक झंझट है। वह यह कि क्या नाला गंगा से अधिक ताकतवर हो गया है?

हमारी यह अवधारणा ज्ञान की एक धारा बन गई है। जैसे गंगा भी एक धारा है। इसलिए गंगा में धाराओं के जुड़ने पर रोक नहीं है। गंगा भी नहीं कहती कि अब नदी नाले मुझमें नहीं जुड़ सकेंगे। **गंगा अगर बोलती तो बात दूसरी होती। यह तो हमारा अज्ञान है कि हमने मान लिया है कि गंगा में कचरा डाला जा सकता है। गन्दे नाले और सीवर को गंगा में डालने में कोई हर्ज नहीं है। हमने मान लिया है कि गंगा की पवित्रता अक्षुण्ण है। अगर गंदे ने उसे अशुद्ध कर दिया तो ताकतवर कौन माना जाएगा? गन्दा नाला या गंगा?**

यही वह नासमझी है जो गंगा की दुर्दशा का कारण है। **इसे कोई सरकार दूर नहीं कर सकती। चाहे नरेन्द्र मोदी की ही सरकार क्यों न हो। कोई मन्त्रालय भी इसे सुधार नहीं सकता। भले ही उसकी कुर्सी पर साध्वी उमा भारती बैठी हों। यह काम एक सचेत और सरोकारी समाज का है।** सरकार और उसका मन्त्रालय तो तंत्र के चौखट का बन्दी होता है। एक बन्दी विचार कर सकता है। सपने की उड़ान भर सकता है। कल्पना में विचर सकता है। पर जिस कारा में वह बन्द है, उसके यथार्थ को वह चाहे तब भी तोड़ नहीं सकता। कारा तो कारा ही है। **सरकारें अपने तन्त्र की कारा में बन्द रहती हैं।**

यह काम समाज ही कर सकता है। कैसे करे? शुरुआत कैसे हो? **एक बात तो तय है कि जिन पुराणों से हमारा मन बना है, वे पुराने हो गए हैं। उनका नवीकरण होना चाहिए। तभी गंगा की संस्कृति का आधुनिक सभ्यता से समन्वय का विज्ञान विकसित हो सकेगा। इस समय इस विज्ञान के दरवाजे पर पुराणों का ताला लगा हुआ है।** उसे खोलने की जरूरत है। तभी जान सकेंगे कि संकट क्या है। वैसे भी, **पुराण का अर्थ है—पुरानी कथाओं का संग्रह।** जो पुराण और महापुराण हों उनमें धर्म है, समाज है, संस्कृति है। **उससे लोक आस्था निर्मित हुई है। उसमें तत्कालीन जनजीवन के हर पक्ष का समावेश है। तीर्थ, व्रत तो हैं ही।** हमारा समाज जीवन के हर मोड़ पर पुराण सुनकर अपना भविष्य संवारता है।

पुराणों में इतिहास दर्शन मिल जाएगा। उसके आधार पर क्या वर्तमान की विसंगतियों को खोजा जा सकेगा? पुराणों में कुछ करने की प्रेरणा भी मिलती है? उसकी हमने उपेक्षा कर दी है। भुला दिया है। **आज तो हम कुछ होने के लिए ही उतावले दिखते हैं। ऐसा मन समाज के सरोकार और गंगा की दुर्दशा को कैसे समझ सकेगा?**

कितने हैं पुराण? कम-से-कम अठारह। **जो महापुराण कहलाते हैं। उनमें 3 लाख 95 हजार एक सौ श्लोक हैं। महापुराणों का काल बताना कठिन है। पर यह कह सकते हैं कि महापुराण उसी श्रेणी में माने जा सकते हैं जैसे आजकल का कोई ज्ञान कोश होता है।** नए ज्ञान के प्रवेश के लिए जरूरी हो जाता है कि उसे बराबर अपडेट किया जाए।

जब से महापुराणों का नया संस्करण बन्द हुआ है, तब से ही जनजीवन में विसंगतियों के बढ़ने का सिलसिला चला होगा। ऐसे रीति-रिवाजों पर कोई सवाल नहीं उठाता, जिससे गंगा की निर्मलता नष्ट होती है। उनमें एक है—**दाह संस्कार। गंगा के तट पर अन्तिम संस्कार करने का रिवाज बना हुआ है। हर साल हजारों लोगों का अन्तिम संस्कार गंगा के किनारे होता है। हजारों अधजले शव गंगा में बहाए जाते हैं। इस मनोविज्ञान को कैसे बदलें?**

अगर नए पुराण लिखे जाएं और पढ़े जाएं तो यह मनोविज्ञान रूपान्तरित हो सकता है। विचार लोक बदल जाएगा। **पुराण पहले भी उद्देश्य परक रहे हैं।** किसी न किसी आदर्श को स्थापित करने के लिए रोचक ढंग से लिखे गए। हमारे महापुराण कब लिखे गए और कब उनका नवीनीकरण बन्द हुआ, यह मत पूछिए। इसमें पड़ने से कुछ हासिल भी नहीं होगा। **आज पुराणों की शैली में एक नए महापुराण की जरूरत है। जो लोक जागरण का माध्यम बने।** संसार मिथ्या है, यह पाठ न पढ़ाएं। **यह बताएं कि बहती शहरी सभ्यता में गंगा कैसे बचाई जाए।** गंगा से जुड़े-चालीस पैंतालीस करोड़ लोग सुखी और स्वस्थ जीवन जी सकें। स्वराज और सामाजिक क्रान्ति के वे सूत्र कौन से होंगे जो मौजूदा विसंगतियों को दूर कर **सकेंगे?**

(शेष पृष्ठ-43 पर)

स्वच्छ राजनीति चाहिए/भारत स्वच्छ अपने आप होगा

–डॉ. रिखबचन्द जैन

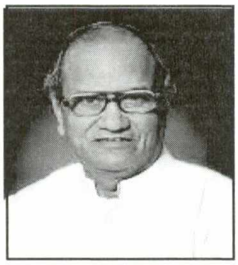

दिल्ली के मतदाताओं ने चुनावों में बता दिया है कि भारत के मतदाताओं की शक्ति क्या है? मतदान का प्रतिशत बढ़ा है। **मतदाताओं ने बिना गठबन्धन के सरकार बनाने का निश्चय किया। पहली बार मतदाताओं ने धर्म और जाति के समीकरणों को नकारा।**

गरीब मतदाता ही नहीं, मध्यम वर्ग के मतदाताओं ने गरीबों के बीच काम करने वाले और गरीबों की सुनने वाले प्रतिनिधियों को चुना। **पहली बार सम्भवत: 51+ प्रतिशत मतदाता के वोट समर्थन से मुख्यमन्त्री और पार्टी पावर में आई है।**

दिल्ली मिनी इन्डिया है। समूचे भारत का प्रतिरूप है। जो दिल्ली में इस बार हुआ, अन्य राज्यों के चुनाव में और अगले राष्ट्रीय चुनाव में भी हो सकता है।

भारतीय मतदाता संगठन ने अपनी पूरी ताकत लगाई कि पोलिंग प्रतिशत बढ़े। चुनाव आयोग ने भी भरपूर आवश्यक प्रयास किए। अन्य संगठन और राजनैतिक पार्टियों ने भी इस ओर ध्यान दिया। पोलिंग प्रतिशत बढ़ने से ही सब लोग अब मान रहे हैं कि चुनाव के निर्णय और अधिक बेहतर और जनहितकारी हो सकते हैं।

राजनैतिक पार्टियों के काम काज मैनेजमेन्ट पर नियामक (**रेगुलेट्री**) कानून की व्यवस्था होनी चाहिए। राजनैतिक पार्टियां अपनी निजी पार्टी के हित के दृष्टिकोण से, संकुचित सोच से, राष्ट्रीय हित को अक्सर अनदेखा कर देती हैं। **राजनीतिक पार्टियां स्वयं स्वीकार करती है कि उनके फंड स्वच्छ नहीं हैं।** हिसाब-किताब ठीक-ठाक नहीं है। पारदर्शिता नहीं है। जबावदेही नहीं है। **पार्टियों की आन्तरिक काम काज में लोकतान्त्रिक व्यवस्थाएं नहीं है।** अपराधीकरण मुक्त राजनीति करने एवं आवश्यक चुनाव सुधार से पार्टियां हिचकिचाती हैं।

पार्टियों के नाराज सदस्यों के द्वारा समय-समय पर यह उद्घोषित होता रहता है कि पार्टियां चुनावी टिकटें बेचती हैं। आम खुली होर्स ट्रेडिंग भी चलती है। बहुत अधिक संख्या में अभी भी अपराधी तत्वों को पार्टियां जनप्रतिनिधि बनाने का अवसर दे देती हैं। **कारण कुछ भी हो, जनता का अहित निश्चित है।**

पार्टी द्वारा पारित व्यक्ति चाहे कितना भी गलत हो, जनता को चुनने के लिए परोस दिया जाता है। **जब पार्टियां गलत व्यक्ति को पावर में बैठाएंगी तो निर्णय गलत होंगे।** फिर फैसले पार्टी के हित में या निजी स्वार्थों के हित में ही होंगे, देश हित में नहीं होंगे।

इस तरह **राजनैतिक पार्टियों के काम काज में स्वच्छता लाने के लिए उन पर कानूनी अंकुश संविधान और कानूनी एक्ट के द्वारा लगने चाहिए।** यह सुनिश्चित हो कि पोलिटिकल पार्टियों और उनके बॉस राष्ट्र हित के निर्णय ही लें और स्वार्थ से भरे निर्णय न ले सकें।

चुनाव सुधार और राजनैतिक पार्टियों पर आवश्यक नियामक (रेगुलेट्री) अंकुश वैधानिक तरीके से लगे तभी लोकतान्त्रिक मूल्यों की वृद्धि होगी। राष्ट्र हित सर्वोपरि हो। **पार्टी के लाभ के लिए, देश हित कुर्बान न करे।** लोकतन्त्र की रक्षा मतदाता के वोट से होती है। उसकी पोलिंग प्रतिशत बढ़े। नागरिक जागरुकता एवं सजगता से ही लोकतन्त्र में गुणवत्ता का विकास हो सकता है। तभी गरीब की आवाज सुनी जाएगी। **सरकार वही चलेगी जो गरीब की सुनेगी।** सुनते रहें। ऐसा ही लोकतन्त्र जनता चाहती है।

भारतीय मतदाता संगठन चुनावों में पोलिंग प्रतिशत 95 प्रतिशत तक ले जाने, चुनाव एवं राजनैतिक पार्टियों के नियामक सुधार तथा नागरिक सजगता-जागरूक बढ़ाने के लिए कृत संकल्प है। **–संगठन प्रमुख**

भारतीय मतदाता संगठन, 878ए, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-5

–आर्यसमाज का झंडा उठाने से काम नहीं चलेगा–न इसे ओढ़ने, बिछाने और कपड़े बनाकर पहिनने से। यदि आर्यसमाज की सेवा करनी है तो पहले ढोंग और दिखावे को छोड़कर दयानन्द के जीवन मूल्यों को अपने अन्दर उतारिए।

–पंडिता राकेशरानी

With Best Compliments

From

Amit Maheshwary

SOMANI FABRICS

A-5, Lal Kothi Commercial Complex
Tonk Road, JAIPUR - 302015 (INDIA)

TEL : 91-141-4040071/2743426
FAX : 91-141-5105371
E-mail: somani@somanifabrics.com
Website: www.somani-fabrics.com

"आर्य" हिन्दू राजाओं का चारित्रिक आदर्श बुर्के से अधिक प्रभावशाली-शुद्ध आचार एवं विचार)

–डॉ. विवेक आर्य

जहां एक ओर मुस्लिम आक्रान्ताओं ने हिन्दू लड़कियों को अगवा कर अपने हरम भरने कि होड़ लगा रखी थी वहीं दूसरी ओर हिन्दू राजाओं जैसे महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, वीर दुर्गादास राठोड़ ने अपने चरित्र के आदर्श से संसार के समक्ष एवं अनुसरणीय उदाहरण स्थापित किया था। जिसे देख कर एक ही निष्कर्ष निकलता है कि बुर्के से अधिक, शुद्ध विचार और आचरण की आज पूरे विश्व को नारी जाति के सम्मान के लिए आवश्यकता है। इस लेख को पढ़कर आप को महान हिन्दू राजाओं के शुद्ध चरित्र से प्रेरणा मिलेगी।

भारत देश की महान वैदिक सभ्यता में नारी को पूजनीय होने के साथ-साथ **"माता"** के पवित्र उद्‌बोधन से सम्बोधित किया गया है।

मुस्लिम काल में भी आर्य हिन्दू राजाओं द्वारा प्रत्येक नारी को उसी प्रकार से सम्मान दिया जाता था जैसे कोई भी व्यक्ति अपनी मां का सम्मान करता हैं। यह गौरव और मर्यादा उस कोटि के हैं, जो संसार के केवल सभ्य और विकसित जातियों में ही मिलते हैं।

महाराणा प्रताप के मुगलों के संघर्ष के समय स्वयं **राणा के पुत्र अमर सिंह ने विरोधी अब्दुरहीम खानखाना के परिवार की औरतों को बन्दी बना कर राणा के समक्ष पेश किया तो राणा ने क्रोध में आकर अपने बेटे को हुकुम दिया कि तुरन्त उन माताओं और बहनों को पूरे सम्मान के साथ अब्दुरहीम खानखाना के शिविर में छोड़ कर आयें** एवं भविष्य में ऐसी गलती दोबारा न करने की प्रतिज्ञा करें।

ध्यान रहे **महाराणा ने यह आदर्श उस काल में स्थापित किया था जब मुगल अबोध राजपूत राजकुमारियों के डोले से, अपने हरम भरते थे।** बड़े-बड़े राजपूत घरानों की बेटियाँ मुगलिया हरम के साथ पर्दों के भीतर जीवन भर के लिए कैद कर दी जाती थी। **महाराणा चाहते तो उनके साथ भी ऐसा ही कर सकते थे.......**पर नहीं उनका स्वाभिमान ऐसी इज़ाज़त कभी नहीं देता था।

औरंगजेब के राज में हिन्दुओं पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। हिन्दू काफ़िर होना तो पाप ही हो गया था। **धर्मान्ध औरंगजेब के अत्याचार से स्वयं उसके बाप और भाई तक न बच सके, साधारण हिन्दू जनता की स्वयं पाठक कल्पना कर सकते हैं।** औरंगजेब की स्वयं अपने बेटे अकबर द्वितीय से अनबन हो गयी थी। इसी कारण **उसका बेटा अकबर आगरे के किले को छोड़कर औरंगजेब के प्रखर विरोधी राजपूतों से जा मिला था।** जिनका नेतृत्व **वीर दुर्गादास राठोड़** कर रहे थे।

कहां राजसी ठाठ बाठ में किलों की शीतल छाया में पला बढ़ा अकबर, कहाँ राजस्थान की भस्म करने वाली तपती हुई ध ूल भरी गर्मियाँ! **शीघ्र सफलता न मिलते देख संघर्ष न करने का आदी अकबर एक बार राजपूतों का शिविर छोड़ कर भाग निकला।** पीछे से अपने बच्चों अर्थात् औरंगजेब के पोता-पोतियों को राजपूतों के शिविर में ही छोड़ गया। जब औरंगजेब को इस बात का पता चला तो उसे अपने पोते-पोतियों की चिन्ता हुई क्योंकि वह जैसा व्यवहार औरों के बच्चों के साथ करता था कहीं वैसा ही व्यवहार उसके बच्चों के साथ न हो जाए। परन्तु वीर दुर्गादास राठोड़ एवं औरंगजेब में भारी अन्तर था।

दुर्गादास की रगों में आर्य जाति का लहू बहता था। दुर्गादास ने प्राचीन आर्य मर्यादा का पालन करते हुए ससम्मान औरंगजेब के पोता-पोती को वापिस औरंगजेब के पास भेज दिया, जिन्हें पाकर औरंगजेब अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वीर दुर्गादास राठोड़ ने इतिहास में अपना नाम अपने आर्य व्यवहार से स्वर्णिम शब्दों में लिखवा लिया।

वीर शिवाजी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आर्य जाति की सेवा, रक्षा, मन्दिरों के उद्धार, गौ माता के कल्याण एवं एक हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के रूप में गुजरा जिन्हें पढ़कर प्राचीन आर्य नेताओं के महान आदर्शों का पुनः स्मरण हो जाता है।

जीवन भर उनका संघर्ष कभी बीजापुर से, कभी मुगलों से चलता रहा। किसी भी युद्ध को जीतने के बाद शिवाजी के सरदार उन्हें नजराने के रूप में उपहार पेश करते थे। एक बार उनके एक सरदार ने कल्याण के मुस्लिम सूबेदार की अति सुन्दर बीबी शिवाजी के सम्मुख पेश की। उसको देखते ही शिवाजी महाराज अत्यन्त क्रोधित हो गए और उस सरदार को तत्काल यह हुक्म दिया कि उस महिला को ससम्मान वापिस अपने

घर छोड़ आए। अत्यन्त विनम्र भाव से शिवाजी उस महिला से बोले "**माता आप कितनी सुन्दर हैं, मैं भी आपका पुत्र होता तो इतना ही सुन्दर होता!** अपने सैनिक द्वारा की गई गलती के लिए मैं आपसे माफी मांगता हूं।" यह कहकर **शिवाजी ने तत्काल आदेश दिया की जो भी सैनिक या सरदार जो किसी भी ऊँचे पद पर होगा अगर शत्रु की स्त्री को हाथ लगाएगा तो उसका अंग छेदन कर दिया जाएगा।**

कहाँ औरंगजेब की सेना के सिपाही जिनके हाथ अगर कोई हिन्दू लड़की लग जाती थी तो उसे या तो अपने हरम में गुलाम बना कर रख लेते थे अथवा उसे खुले आम गुलाम बाज़ार में बेच देते थे और कहाँ वीर **शिवाजी का यह पवित्र आर्य आदर्श!**

इतिहास में शिवाजी की यह नैतिकता स्वर्णिम अक्षरों में लिखी गई है। इन ऐतिहासिक प्रसंगों को पढ़ कर पाठक स्वयं यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि महानता और आर्य मर्यादा व्यक्ति के विचार और व्यवहार से होती हैं। **धर्म की असली परिभाषा उच्च कोटि का पवित्र और श्रेष्ठ आचरण हैं।** धर्म के नाम पर अत्याचार करना तो केवल अज्ञानता और मूर्खता हैं। ❖❖❖

(पृष्ठ-39 का शेष)

यह काम कौन करे? यह सवाल आते ही जिस पर सबसे पहले नजर जाती है, वे धार्मिक लोग हैं। उन्हें जो नाम दें, चाहे आचार्य कहें या धर्माचार्य! क्या इनसे ऐसी उम्मीद की जा सकती है? **हरिद्वार और उसके ऊपर बसे छोटे-बड़े शहर ऐसी उम्मीद नहीं जगाते।**

मठ बने हैं। मन्दिर भी बन रहे हैं। पर गंगा की उदासी उससे दूर नहीं हो रही है। किसी दूसरे शहर से न वास्तु में और न बसावट में वे भिन्न हैं। **इन धर्म धुरन्धरों की प्रवृत्तियां कुछ करने की कम है।** किसी के कन्धे पर सवार होकर कुछ बन जाने की लालसा ज्यादा दिखती है। **इसीलिए इनके स्थानों को धर्म केन्द्र कोई नहीं मानता।** उनके शिष्यों की बात अलग है। **इन केन्द्रों से अब तक एक भी ऐसी पुस्तक नहीं आई है जो आज की गंगा से हमें परिचित कराए। यह कितने अफसोस और आश्चर्य की बात है!!...**

इसका यह भी अर्थ नहीं है कि गंगा पर हमारा सरोकार कम हो रहा है। वे जो संत नहीं दिखते, जिन्हें परम्परागत अर्थों में संन्यासी नहीं कहा जा सकता, **जो धर्माचार्य की कतार में नहीं माने जा सकते वे क्या चुप बैठ गए हैं?** यही असली सवाल है। **इसका सम्बन्ध उस समाज से है जो सचेत है। जिसके मन में उद्वेलन है। जो भविष्य को देख रहा है। जिसे जीवन में नया अर्थ खोजना है।**

ऐसे लोग सक्रिय हैं। **अगर पंडित मदन मोहन मालवीय होते तो इन लोगों को वे अपनी गंगा महासभा में महत्वपूर्ण स्थान देते।** ऐसे अनेक हैं। जो लिख-पढ़कर गंगा के बारे में जागरण का प्रयास कर रहे हैं। ऐसी ही **एक पुस्तक है—दर दर गंगे। जो गंगा की यात्रा से आंखों देखी और अनुभूत अनुभवों से लिखी गई है।** लेखक द्वय हैं—अभय मिश्र और पंकज रामेंदु। **इस पुस्तक को गंगा महापुराण का प्रारम्भ कह सकते हैं।**

उम्मीद की जा सकती है कि ऐसी पुस्तकों से जनजागरण और जनआन्दोलन बन सकेगा। तभी गंगा का उद्धार हो सकता है। जनआन्दोलन समाज का काम है। अवश्य ही कोई इसकी पहल करेगा। इसमें व्यक्ति की भूमिका बहुत अहम होगी। सम्भव है, तब कहीं लाखों लोग गंगा के रक्षक की भूमिका में होंगे। ❖❖❖

वेद प्रचार एवं गौशाला में प्राप्त सहयोग राशि

श्री कमला खुराना–दिल्ली–8000 रु.। श्रीमती उर्मिला–अजमेर–5000रु.। श्री संजय वंसल–रोहिणी–41000 रु.। आर्यसमाज–जनकपुरी–3100 रु.। श्री गणेश दास गरिमा–नयाबाजार–2100 रु.। श्री मनीष चोपड़ा–राजेन्द्र नगर–2100 रु.। श्री उत्तम कुमार आर्य–नयाबांस–2100 रु.। श्री शिवकुमार मदान–जनकपुरी–2000 रु.। श्री विजयकुमार–जालन्धर–1100 रु.। श्री तेजप्रताप एवं श्री अजय प्रताप–बुराड़ी–1100 रु.। श्री रिखबचन्द जैन–करोलबाल–1,00,000 रु.। श्री विजय गुप्त–दिल्ली–1100 रु.। श्री सतीश शर्मा–गाजियाबाद–1100 रु.। श्री रविन्द्रकुमार शर्मा–गाजियाबाद–1100 रु.। श्रीमती स्नेहलता–दिल्ली–1100 रु.। श्री नरेन्द्र कुमार मेहरा–दिल्ली–1100 रु.। श्रीमती देवी करुणामयी–दिल्ली–1100 रु.। श्री पार्थ अग्रवाल–शालीमार पार्क–1000 रु.। श्री विजय एवं पुष्पा अग्रवाल–शालीमार पार्क–1100 रु.। श्री चौ. राजेश सिंह एवं कमलेश आर्य–नयाबांस–501 रु.। श्री हरशरण गोयल–मेरठ–501 रु.। श्री जितेन्द्र जैन–केशवनगर–501 रु.। श्री बाबूराम आर्य–सीताराम बाजार–500 रु.। श्री देशपाल–मदनगीर–500 रु.। श्री रविन्द्र कुमार–पानीपत– 400 रु.। श्री बच्चन लाल–दिल्ली–200 रु.। श्री डी. आर आर्य–सन्तनगर–200 रु.। श्री इन्द्रादेव गुलाटी–बुलन्दशहर–251 रु.। श्री बृज राज–केशवनगर–101 रु.।

(सभी दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद)

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

–महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

गतांक से आगे....

नफरत मुस्लिम कौम के सिर पर सवार होकर पूरी तरह खून-खराबा पर उतारु हो गयी। मुसलमान लोगों ने हिन्दुओं के जो मकान और फैक्ट्रियां थीं, उनमें आग लगाना शुरू कर दिया।

अगर किसी ने कोई जुर्म किया हो और उसकी वजह से उस पर कहर ढाया जा रहा हो, तो यह बात तो समझ में आती है, मगर बिना किसी जुर्म के किसी का सब कुछ जला देना, उसकी दुनिया उजाड़ देना, उसकी जिन्दगी खत्म कर देना किस मजहब की किताब में लिखा है, यह पूछने वाला कोई नहीं था।

मानव धर्म का यह उसूल है–हम किसी को जिन्दगी दे नहीं सकते, तो किसी की जिन्दगी छीनने का भी हमें हक नहीं है। मगर उसूल तो मानव के लिए हैं, **जो मानव दानव का रूप धारण कर ले, उसे इन बातों से कहां मतलब रह जाता है।** अब जब सताने वाले किसी भी कीमत पर अपने रवैये में बदलाव लाने को तैयार न हुए, तो सताये जाने वालों ने भी जिन्दगी सलामत रखने के लिए वहां से अपना बोरिया-बिस्तर गोल करना शुरू कर दिया। **कुछ लोग तो पहले ही शहर छोड़कर जा चुके थे, जबकि कुछ इस उम्मीद में थोड़ा-बहुत सामान लेकर वहां से जा रहे थे कि हो सकता है आने वाले दिनों में हालात सुधर जाएं** और हम फिर अपनी ही जमीन पर अपनी दुनिया आबाद कर सकें। मगर यह सोचना सरासर गलत था।

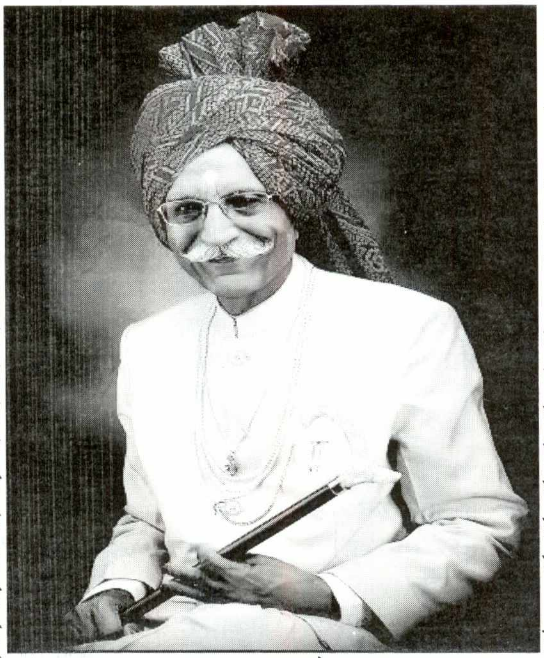

15 अगस्त, 1947 के बाद लोगों का हौसला टूटने लगा। अभी तक तो हम लोग अपने घर में बैठकर सुबह रेडियो पर गाने सुनते और रात में जागकर पहरा देते। **मजहबी दंगे-फसाद का ऐसा भयानक रूप देखकर हमने अपनी दुकान पहले ही बन्द कर दी थी, क्योंकि अपनी जिन्दगी किसे प्यारी नहीं होती।**

फिर ऐसा ही कुछ मुसलमानों की प्लानिंग का भी एक हिस्सा था। उन लोगों ने पाकिस्तान बनने से पहले ही हर रोजी-रोजगार पर अपना कब्जा जमाने का प्रोग्राम बनाया हुआ था। सोचिए कैसा बेतुका प्रोग्राम था!

कहते हैं कि रोजी-रोजगार का कोई मजहब नहीं होता और किसी भी मजहब का आदमी हो, अगर किसी रोजी-रोजगार से ताल्लुक रखता है, तो थोड़ी भी समझ रखने वाला कोई ग्रुप उससे छेड़छाड़ नहीं करता। दुनिया के ज्यादातर देशों में मैंने ऐसा ही देखा है। मगर **देश के टुकड़े के रूप में जो यह नया देश सामने आ रहा था, उसके लिए खून की नदियां बहा देने को तैयार बावलों ने इस पाक थ्योरी पर भी बदनीयती की कालिख पोत दी।**

हर मसजिद में हिन्दुओं के खिलाफ प्रचार करना शुरू कर दिया, खासतौर पर शुक्रवार को जुम्मे के दिन ऐसा होता रहा।

सियालकोट में हमारे मुकाबले में भी फल वाले सिराजुद्दीन और गनीज ने मसालों की दुकान बना ली। फिर शुक्रवार के दिन मसजिद में यही प्रचार करना शुरू कर दिया कि काफिरों से सामान मत खरीदो।

वैसे तो हिन्दुओं और मुसलमानों में पूरा प्यार होता था और व्यापार का सम्बन्ध भी काफी अच्छा था, मगर इस आजादी के चक्कर में हिन्दुओं और मुसलमानों को बर्बाद करने के मकसद से अंग्रेजों ने मुसलमानों के साथ साठ-गांठ करके तबाही का पूरा बन्दोबस्त कर दिया।

हमारे गोदाम में काफी मसाले पड़े हुए थे। पिताजी गोदाम में चले जाते और मुसलमानों को मसाले बिक्री करते रहते। मगर अब तो वहां की आबोहवा में ही नफरत घुल चुकी थी और एक ग्राहक ने पिताजी के सामने अपना शराफत का नकाब पलट... **क्रमशः...**

वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की समस्यायें

–डॉ. फणिभूषण दास

गतांक से आगे....

यह जांच एक बृहत जांच है जिसे शल्य क्रिया कक्ष (**औपरेटिंग रूम**) में भी उपयुक्त होता है क्योंकि इन रोगियों को शामक (**सेडेटिम**) औषधियों की आवश्यकता होती है। उनकी देखरेख के लिए वेदनाहारक विशेषज्ञ (**एनेस्थेसिस्ट**) की मौजूदगी की भी आवश्यकता होती है।

इस प्रकार **सभी वृद्ध व्यक्तियों में नियमित शारीरिक परीक्षण (फीजीकल एक्जामिनेशन) के दौरान गुदा (रेक्टम) की अंगुलीय जांच (रेक्टल डिजिटल एक्जा-मिनेशन) आवश्यकता होती है।** और इस जांच के लिए सकारात्मक अभिज्ञान (**फाईजामिनेशन**) की आवश्यकता होती और इस जांच के सकारात्मक अभिज्ञान (फाईनडिंग्स) को पक्के निदान (**डायग्नोसिस**) का रूप देने के लिए अवग्रहांत्रिक दर्शन (**सिगमोयडोस्कोपी**) और बृहदांत्रिक दर्शन (**कोलोनोस्कोपी**) की आवश्यकता होती है।

इन व्यक्तियों में अगर प्रारम्भिक शारीरिक परीक्षण (**फीजीकल एक्जामिनेशन**) के दौरान गुदा के अंगुलीय परीक्षण (**डिजिटल रेक्टल एक्जामिनेशन**) के नतीजे नकारात्मक हों तो भी समय-समय पर उपरोक्त दोनों को करवाते रहना व्याधि मुक्त वृद्धावस्था के लिए आवश्यक होता है। **यदि इन दोनों जांचों के अभिज्ञान (फाईनडिंग्स) नकारात्मक हुए तब भी सम्बन्धित वृद्ध व्यक्तियों में दो या तीन वर्ष के अन्तराल पर इन जांचों को फिर से करवाना हितकर होता है।**

यहां पर यह भी स्मरण रखना हितकर होता है सभी व्यक्तियों में, विशेषकर वृद्ध व्यक्तियों में, गुदा (**रेक्टम**), अवग्रहांत्र (**सिगमोयडकोलन**) और बृहदांत्र (**कोलन**) में कैंसर सहित कई अन्य व्याधियों की सम्भावना हमेशा ही रहती है जो प्रारम्भिक अवस्था में अलाक्षणिक (**ऐसिम्प्टो मैटिक**)भी हो सकता है इसलिए उनमें उपरोक्त सभी जांचों को करवाना लाभदायक होता है क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में इन रोगों के निदान (**डायग्नोसिस**)को पक्का करके उपयुक्त उपचार कराने से सम्पूर्ण आरोग्य लाभ (क्योर) की बड़ी सम्भावना होती है।

वृद्धावस्था के मुख्य संक्रामक रोगों का निरोधः रोग निरोधक टीकों और अन्य उपायों की भूमिका–
वृद्धावस्था में शरीर की विभिन्न प्रणालियों (**सिस्टम्स**) की सामान्य क्रियाशीलता (**फंक्सन**) क्षीण हो जाता है जिनमें **सबसे अधिक प्रभावित होने वाली प्रणालियों (सिस्टम्स) में रोग प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम्स) मुख्य है और इसके फलस्वरूप वृद्धव्यक्तियों में अनेक संक्रामक रोगों (इनफेक्सस डिजीजेज) से ग्रसित हो जाने में सम्वेदनशीलता (वलनेरेबिलिटी) और सुग्रहिता (ससेस्टिबिलिटी) उत्पन्न हो जाती है।**

इन संक्रामक रोगों (**इनफेक्सस डिजीजेज**) से ग्रसित हो जाने पर उनमें गम्भीर अस्वस्थता उत्पन्न हो जाती है, **जिनके साथ अनेक अनचाहे उपद्रव (कम्प्लीकेशन्स) भी उत्पन्न हो जाते हैं जिनके फलस्वरूप अनेक ग्रसित व्यक्तियों की, विशेष कर वृद्ध व्यक्तियों की, मृत्यु हो जाती है।**

आज के बदले हुए और शीघ्रता से बदलते हुए सामाजिक माहौल में **बहुत से वृद्धव्यक्तियों को घर में अकेले रहने की विवशता हो जाती है क्योंकि उनके परिवार के युवा सदस्यों को नौकरी या व्यवसाय/रोजगार के कामों के चलते घर से बाहर दूर के स्थानों में जाकर रहना पड़ता है।** इस प्रकार अकेले रहने की विवशता के कारण उनमें संक्रामक (**इनफेक्सस**) रोगों से ग्रसित हो जाने की सम्भावना उत्पन्न हो जाती है और यह स्थिति उनके लिए एक कठिन समस्या उत्पन्न करती है जिससे निपटने में उन्हें बहुत परेशानी होती है।

यद्यपि वर्तमान समय में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने बहुत तरक्की की है जिससे प्रायः सभी संक्रामक रोगों (इनफेक्सस) के निदान (डायग्नोसिस) और उपचार में बहुत प्रगति हुई है और प्रगति की इस प्रक्रिया की गति निर्बाध रूप से जारी है।

परन्तु, ग्रसित वृद्धव्यक्तियों की क्षीण आर्थिक क्षमता और अकेले रहने की विवशता के कारण वे इन **रोगों के निदान (डायग्नोसिस) और उपचार के उन्नत उपायों के, जो प्रायः खर्चीले होते हैं, उपयोग में लाने में बहुत सी कठिनाइयाँ महसूस करते हैं।**

इसलिए इन व्यक्तियों में इन संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों के प्रभावी निरोध (प्रोफाइलेक्सिस) के लिए रोग निरोधक टीकों (वैक्सीन) स्वास्थ्यप्रद.... **क्रमशः.....**

समाचार दर्शन

ज़िंदगी से तो सभी प्यार किया करते हैं, हम तो, 'देहान्त के पश्चात् भी अपनी देह या देह के अवयव मानवता की भलाई हेतु अर्पित करेंगें।' ऐसे ही उद्गारों से ओत-प्रोत, सर्वस्व समर्पित करने वाले-देह/देह के अवयव दान करने वाले देह-दानियों को', 'दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान परिवार अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।.....

नेत्रदानी श्री भगवान शंकर

70 वर्षीय श्री भगवान शंकर का निधन 6 फरवरी 2015 को टी.बी. की बीमारी से दीनदयाल अस्पताल, दिल्ली में हुआ। **अपनी आजीविका हेतु गुब्बारे, मूंगफली, आईसक्रीम इत्यादि बेचने वाले भगवान शंकर एक आदर्शवादी मनुष्य थे।** लगभग एक वर्ष पूर्व उन्होंने देहदान के बारें में सुना और उन्होंने संकल्प ले लिया कि अपनी देह एवं नेत्रदान करने का!

टी.बी. रोग से ग्रसित होने के कारण उनकी देह दान तो नहीं हो सकी परन्तु उनके पुत्र श्री हुक्मचन्द ने दधीचि देहदान समिति के श्री सुधीर गुप्ता से सम्पर्क किया और उनके नेत्र अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIMS) के आर.पी. इंस्टीट्यूट में दान किए गए।

एक जीवन जो बुझते-बुझते कर गया, अनेक घरों के चिराग रोशन

मरते-मरते भी ऐसा परोपकार तो सम्भवत: विरले ही कर पाते हैं जो **श्रीमती उर्मिला द्वारा उनके पति दिनेश कुमार और उनके माता-पिता श्री शमशेर बहादुर एवं श्रीमती पूजा देवी द्वारा लिए गए साहसिक निर्णय से सम्भव हुआ।**

7 फरवरी 2015 को मकान की छत गिरने से सुलेमान नगर, दिल्ली के निवासी दम्पती–उर्मिला एवं दिनेश बुरी तरह घायल हो गए और उनकी 11 महीने की पुत्री पूजा की मृत्यु हो गई। दिनेश कुमार की दोनों टांगे क्षतिग्रस्त हो गईं और **उर्मिला का मस्तिष्क मृत घोषित कर दिया गया।**

चिकित्सकों की सलाह पर उनके परिवारजनों ने उनकी देह और उसके अवयवों के दान द्वारा, और जीवन बचाने का साहसिक पग बढ़ाया और दधीचि देहदान समिति के सम्पर्क किया। बालाजी अस्पताल में भर्ती उर्मिला का 2 लाख रुपए का अस्पताल का बिल भी वहां के अध्यक्ष श्री राज कुमार गुप्ता ने माफ कर दिया।

तदुपरान्त **दधीचि देहदान समिति ने एम्स के निदेशक डा. महेश चन्द मिश्रा के सहयोग से 14 फरवरी, 2015 को उनका शरीर एम्स पहुंचाया।** जहां, उर्मिला की किडनी, कोर्निया, हृदय वाल्व और लीवर जरूरतमन्दों को ट्रान्सप्लांट किए गए। इस तरह एक जीवन ने बुझते-बुझते भी किया 5 अन्यों के जीवन में प्रकाश, और दिया जीवन दान। शत-शत नमन... ❖❖❖

राष्ट्रीय महासमिति की बैठक व शताब्दी समारोह की सूचना

अखिल भारत हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय महासमिति की नियमित बैठक दिनांक-13 अप्रैल 2015, सोमवार को दोपहर 3.00 बजे से पार्टी मुख्यालय हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001, में आयोजित की जा रही है। अनुरोध हैं कि बैठक में समयानुसार उपस्थित रहने की कृपा करें।

हिन्दू महासभा की स्थापना के स्वर्णिम 100 वर्ष पूरे हो गए हैं। इसी उपलक्ष्य में शताब्दी समारोह हिन्दू महासभा भवन में आयोजित होगा।

भाषा सदोहरी हिन्दी समिति द्वारा काव्य संध्या का आयोजन

दिल्ली। 8 मार्च 2015 को "भाषा सदोहरी हिन्दी समिति" के स्थापना दिवस के अवसर पर 'हिन्दी भवन' दिल्ली में एक भव्य काव्य संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समिति की वार्षिक गतिविधियों तथा हिन्दी चिन्तन को दर्शाती एक स्मारिका का विमोचन तथा वेबसाईट www.bhashasahodari.com का भी लोकार्पण किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता गीतकार डॉ. कुंवर बेचैन तथा सञ्चालन सखी गीत सिंह तथा गुरचरन मेहता रजत ने किया। वर्ष भर की गतिविधियों का व्यौरा उपाध्यक्ष दीपक कुमार शुक्ला ने दिया। विशिष्ट अतिथि रहे श्री शिवकुमार बिलगामी।

।। ओ३म् ।।

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग साढ़े चार लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग २५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। **यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा।** अतः गोभक्तों से निवेदन है कि गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा सस्ते मूल्य में मिल रहा है बाद में दुगुने दाम पर लेना पडता है। अभी दो लाख रुपए अनुमानतः कम पड़ेगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है।

गौओं हेतु अपने योगदान की राशि "स्वामी दयानन्द संस्थान" के नाम चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को 'जनज्ञान' मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष-स्वामी दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-36 चलभाष : 9810257254, 8459349349
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

।। ओ३म्।।

॥ जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं॥

"परमात्मा" की दिव्य-सनातन वाणी

ऋग्वेद **सामवेद**

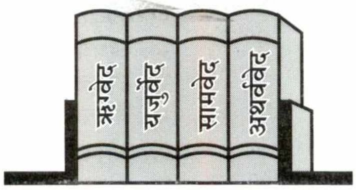

यजुर्वेद **अथर्ववेद**

चार वेद
का सरल, रोचक हिन्दी भष्य

प्रसारार्थ लागत मूल्य - रु० २८००/-

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, षिदेवता आदि विवरण सहित २३X३६ सें. मी. साइज में कुछ पुष्ठ-२२००, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्राय: ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।)

श्रेष्ठ बढ़िया कागज पर लागत मूल्य - ३६००/- रूपये

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम पाँच और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान मासिक' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का, सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का, तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को गुँजाने का, हिन्दुत्व के विश्वबन्धुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाएं, अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन दें।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुँचे जनज्ञान।

**सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।**

वार्षिक शुल्क-२००/-रु., त्रिवार्षिक-५५०/-रु, पांच वर्ष-९००/-रु, आजीवन ३१००/-रु०

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" करोलबाग नई दिल्ली-5 के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशि सीधे यूनियन बैंक, दिल्ली में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 2800 रु.
2. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी 300 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी 100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियां-पं. प्रेमचन्द जी 20 रु.
6. धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री 20 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 20 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 20 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा 300 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 20 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य 20 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह) 20 रु.
15. Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी 80 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी 300 रु.
17. History of the assassins 80 रु.
18. Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती 100 रु.
19. Vedic Prayer(दै.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ)60रु.
20. Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद)300 रु.
21. A Short Life Story of Swami Dayanand 40 रु.
22. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 20 रु.
23. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी80 रु.
24. संक्षिप्त महाभारत 100 रु.
25. संक्षिप्त रामायण 20 रु.
26. ऋग्वेद शतकम 20 रु.
27. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
28. सत्संग पद्धति 15 रु.
29. वैदिक सान्ध्य गीत 20 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा 5 रु.
31. उपनिषद संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी 100 रु.
32. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार 300 रु.
33. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में) 150 रु.
34. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि 200 रु.
35. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि 100 रु.
36. वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार 100 रु.
37. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश 100 रु.
38. श्रीमद्‌भगवद्‌गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति 80 रु.
39. मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर 20 रु.
40. वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय 5 रु.
41. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 40 रु.
42. बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी 80 रु.
43. उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्यान)30 रु.
44. योगासन 20 रु.
45. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 3 रु.
46. विश्व को वेद का संदेश 3 रु.
47. विश्व को आर्यसमाज का संदेश 3 रु.

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षु: 2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? -वेदभिक्षु: 2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं-सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? -राकेश रानी 2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ -जहीर नियाजी 2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 2.00 रु.
8. इस्लाम-एक परिचय 2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षु: 2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर 5.00 रु.
15. Bible in the Balence 3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 2.00 रु.
20. A challange to the Christian Faith 1-00 रु.

मुख्य कार्यालय: स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254

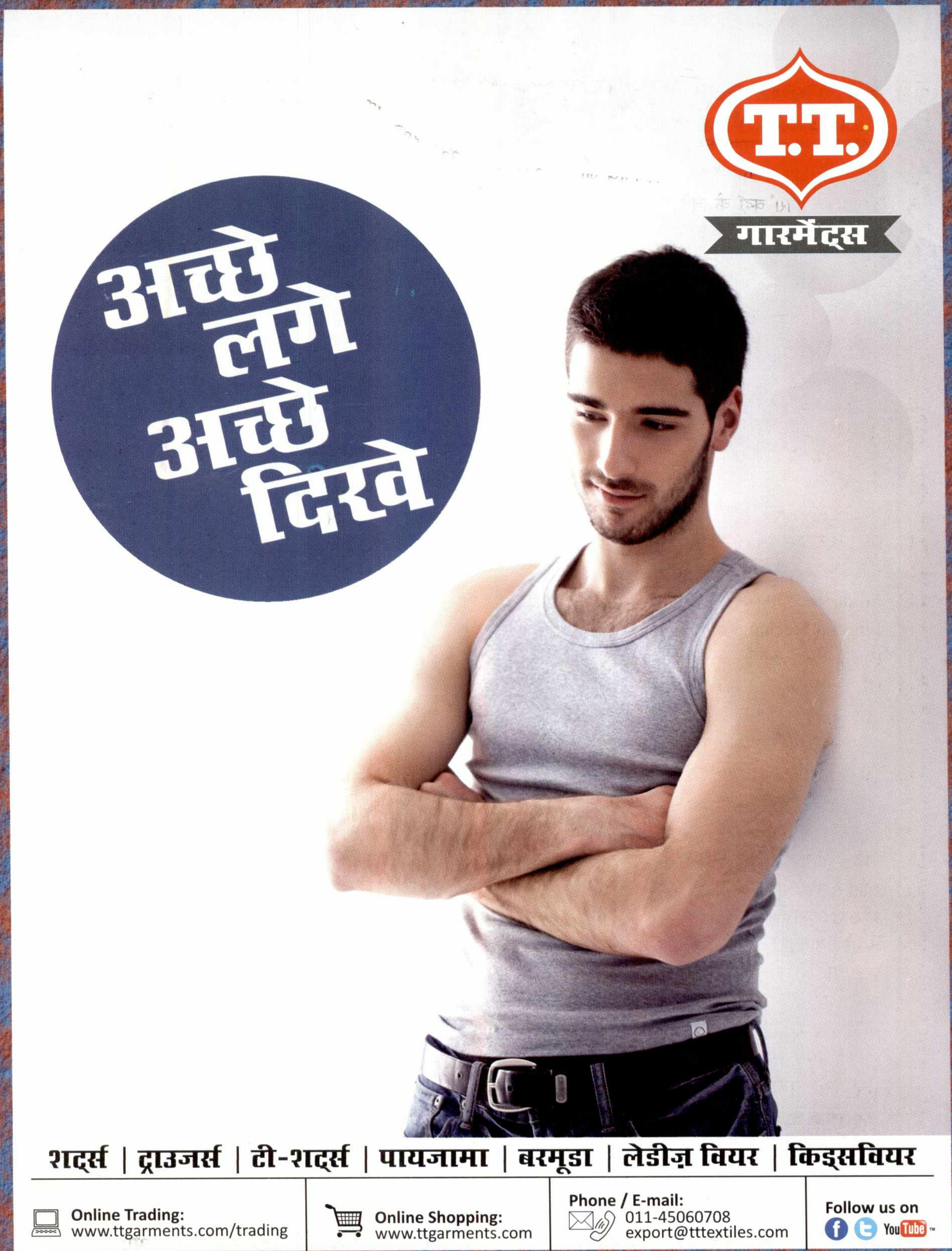

T.T.
गारमैंट्स
अच्छे लगे अच्छे दिखे
शर्ट्स | ट्राउजर्स | टी-शर्ट्स | पायजामा | बरमूडा | लेडीज़ वियर | किड्सवियर
Online Trading: www.ttgarments.com/trading
Online Shopping: www.ttgarments.com
Phone / E-mail: 011-45060708 export@tttextiles.com
Follow us on

जनज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६	चैत्र-बैसाख सम्वत्-२०७२ अप्रैल, सन्-२०१५ प्रकाशन तिथि ३ अप्रैल	Delhi Postal N0. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017 R.N.I. -10719/65 Posted at New Sabji Mandi Date 5 & 6 of April-2015